राष्ट्रीय दैनिक

प्रातःकिरण

दिल्ली एवं पटना से प्रकाशित

हर खबर पर पकड़

/Pratahkiran /Pratahkiran /Pratahkiran

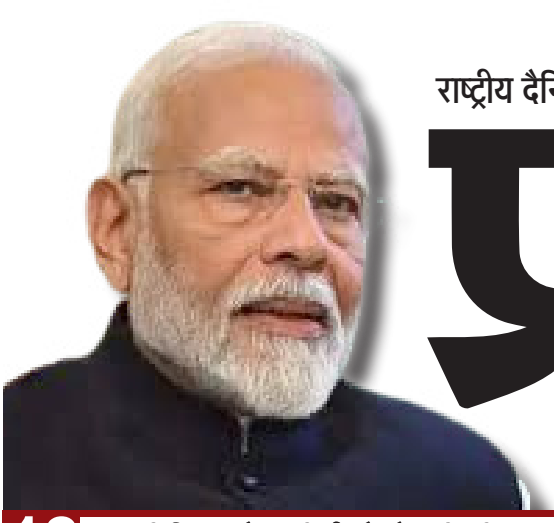

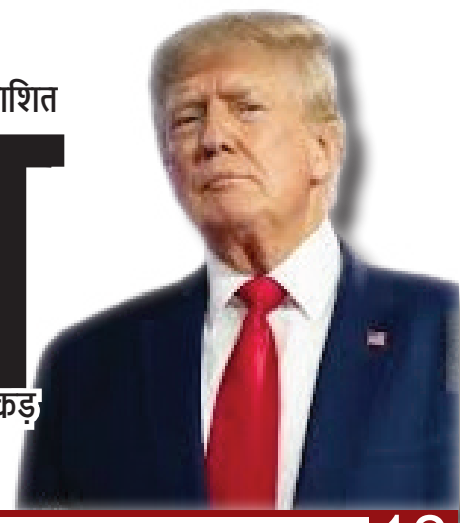

12 एनवीडिया के सीईओ ने की पीएम मोदी की तारीफ

अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव के सर्वेक्षण में ट्रंप, हैरिस से मामूली बढ़त पर आगे 12

वर्ष : 12 | अंक : 192 | पटना, शनिवार, 26 अक्टूबर, 2024 | विक्रम संवत् 2081 | पेज : 12 | मूल्य ₹ : 03.00 | www.pratahkiran.com

यूक्रेन, पश्चिम एशिया में संघर्ष चिंता का विषय, शांति के लिए भारत हर योगदान को तैयार : मोदी

नई दिल्ली/एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शुक्रवार को कहा कि यूक्रेन और पश्चिम एशिया में जारी संघर्ष चिंता का विषय है और भारत शांति बहाली के लिए हर संभव योगदान देने को तैयार है। उनकी टिप्पणी जर्मन चांसलर ओलाफ शोल्ज के साथ हुई बातचीत के बाद आई, जिसमें उन्होंने भारत से यूक्रेन में लंबे समय से चल रहे संघर्ष का राजनीतिक समाधान खोजने में योगदान देने का आह्वान किया। मोदी ने जर्मन चांसलर के साथ सातवें अंतर-सरकारी परामर्श (आईजीसी) के बाद कहा, यूक्रेन और पश्चिम एशिया में चल रहे संघर्ष हम दोनों के लिए चिंता के विषय हैं। भारत का हमेशा मत रहा है कि युद्ध से समस्याओं का समाधान नहीं हो सकता। और शांति की बहाली के लिए भारत हर संभव योगदान देने को तैयार है। मोदी ने कहा कि वह और शोल्ज इस बात पर सहमत हैं कि 20वीं सदी में स्थापित वैश्विक मंच 21वीं सदी की चुनौतियों से निपटने में सक्षम नहीं हैं। प्रधानमंत्री ने कहा, संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद सहित विभिन्न बहुपक्षीय संस्थानों में सुधार की आवश्यकता है।

श्रम-रोजगार और संवेदनशील सूचनाओं के आदान-प्रदान पर बनी सहमति

नई दिल्ली। भारत और जर्मनी के बीच शुक्रवार को अंतर-सरकारी परामर्श (आईजीसी) पर सातवीं बैठक हुई। इस दौरान दोनों देशों के बीच संवेदनशील सूचना के आदान-प्रदान, ग्रीन हाइड्रोजन, नवाचार-प्रौद्योगिकी, श्रम-रोजगार, कौशल विकास-व्यावसायिक शिक्षा और हरित शहरी गतिशीलता संबंधित आठ प्रमुख विषयों पर सहमति बनी। जर्मन चांसलर ओलाफ स्कोल्ज के साथ बैठक की सह अध्यक्षता के बाद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि रक्षा और सुरक्षा के क्षेत्र में दोनों देशों का बढ़ता सहयोग आपसी विश्वास का प्रतीक है। उन्होंने कहा कि हमारी साझेदारी में स्पष्टता है और इसका भविष्य उज्ज्वल है। वहीं, जर्मन चांसलर स्कोल्ज ने कहा कि जर्मनी चिकित्सा, देखभाल और आईटी क्षेत्र में भारत से और अधिक कुशल श्रमिक चाहता है। प्रधानमंत्री मोदी और जर्मन चांसलर स्कोल्ज ने शुक्रवार को दिल्ली के हैदराबाद हाउस में दोनों देशों के 7वें अंतर-सरकारी परामर्श (आईजीसी) की सह अध्यक्षता की। 2011 में लॉन्च किया गया आईजीसी ढांचा, विभिन्न क्षेत्रों के बीच सहयोग के नए क्षेत्रों की पहचान और सहयोग की व्यापक समीक्षा की अनुमति देता है। इसमें रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और विदेश मंत्री डॉ. एस जयशंकर सहित अन्य मंत्री भी शामिल रहे।

दोनों नेताओं ने बाद में संयुक्त प्रेस वक्तव्य दिया और भारत और जर्मनी के बीच हुए करारों के आदान-प्रदान के साक्षी बने।

संक्षिप्त खबरें

झारखंड के पूर्व सीएम मधु कोड़ा नहीं लड़ पाएंगे चुनाव

रांची। झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री और भाजपा नेता मधु कोड़ा विधानसभा का चुनाव नहीं लड़ पाएंगे। सुप्रीम कोर्ट ने सजा पर रोक लगाने की मांग वाली उनकी याचिका खारिज कर दी है। सुप्रीम कोर्ट के जस्टिस संजीव खन्ना, जस्टिस संजय कुमार और जस्टिस आर. महादेवन की बेंच ने शुक्रवार को याचिका पर सुनवाई के बाद अपना फैसला सुनाया। मधु कोड़ा झारखंड के बहुचर्चित कोयला घोटाले में सजायाफ्ता हैं। 13 दिसंबर 2017 को निचली अदालत ने मधु कोड़ा के अलावा पूर्व कोयला सचिव एचसी गुप्ता, राज्य के पूर्व मुख्य सचिव एके बसु और कोड़ा के करीबी विजय जोशी को भ्रष्टाचार के आरोप में तीन साल की सजा सुनाई थी। उन पर कोलकाता की कंपनी विनी आयरन एंड स्टील उद्योग लिमिटेड को झारखंड का राजहरा उत्तर कोयला ब्लॉक को गलत तरीके से आवंटित करने का आरोप था। कोड़ा फिलहाल जमानत पर हैं। वह हाल में भाजपा में शामिल हुए हैं और विधानसभा का चुनाव लड़ना चाहते थे। उन्होंने अपनी सजा पर रोक लगाने की मांग को लेकर दिल्ली हाईकोर्ट में याचिका दायर की थी। दिल्ली हाईकोर्ट के इस फैसले को मधु कोड़ा ने सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी थी, लेकिन उन्हें कोई राहत नहीं मिली।

राजगीर में विश्व शांति स्तूप की स्थापना के 55वें वार्षिक समारोह में शामिल हुए मुख्यमंत्री

सभी धर्मों के स्थलों के विकास का किया काम : नीतीश

सीएम बोलें-राजगीर से 5 धर्मों का रहा है संबंध

प्रात : किरण

पटना। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार शुक्रवार को नालंदा जिला के राजगीर में विश्व शांति स्तूप की स्थापना के 55वें वार्षिक समारोह में शामिल हुए। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने कहा कि राजगीर से 5 धर्मों का संबंध रहा है, जिनमें हिन्दू, मुस्लिम, बुद्ध, जैन एवं सिख शामिल हैं। हमने सभी धर्मों के स्थलों का विकास कराया है। यहाँ कुण्ड हैं जिसमें से गर्म पानी निकलता है। मुस्लिम धर्म के महान सूफी संत मखदूम साहब कुण्ड का भी विकास कराया गया है। यहाँ हर तीसरे वर्ष हिन्दू धर्म के मलमास मेला का आयोजन किया जाता है। पिछले साल वर्ष 2023 में मलमास मेले में सभी सुविधाएँ मुहैया करायी थी तो 3 करोड़ से अधिक लोग यहाँ आये थे। बौद्ध धर्म से जुड़े स्थलों वेणुवन का विस्तारीकरण एवं सौंदर्याकरण कराया गया है तथा गृद्धकूट पर्वत जाने का रास्ता ठीक कराया गया है। जैन धर्म के भगवान महावीर से जुड़े स्थलों पर जाने के लिए रास्ते बनाये गये हैं। सिख धर्म के गुरु नानक देव जी यहाँ आये थे। यहाँ शीतल कुण्ड गुरुद्वारा बनाया गया है। उन्होंने कहा कि राजगीर से हमारा पुराना रिश्ता है। हम बचपन से ही यहां आते रहे हैं। सरकार में आने के बाद वर्ष 2008 में हम राजगीर में 7 दिन रहे थे और सभी जगह गये थे। यहीं पर विश्व शांति स्तूप के बगल में कैबिनेट की बैठक करायी थी। राजगीर में विकास के सभी काम करा दिये गये हैं, अब लोगों को बहुत सुविधायें हो गयी है और अब राजगीर आनेवाले लोगों की संख्या बहुत बढ़ गयी है। मुख्यमंत्री ने कहा कि राजगीर के पहाड़, जिन्हें पंच पहाड़ी कहते हैं, करोड़ों वर्ष पुराने हैं। पहले यहाँ पेड़-पौधे बहुत कम थे। हमने यहाँ पर वृक्षारोपण कराया है, अब पहाड़ों पर हरियाली काफी बढ़ी है। उन्होंने कहा कि यहाँ जू-सफारी, नेचर सफारी एवं ग्लास ब्रिज का निर्माण कराया गया है।

भगवान बुद्ध का राजगीर से काफी पुराना संबंध :

मुख्यमंत्री ने कहा कि भगवान बुद्ध का राजगीर से काफी पुराना संबंध है। वे वेणुवन में रहा करते थे और फिर यहाँ से गया चले गये थे, जहाँ उन्हें ज्ञान की प्राप्ति हुयी और तब से उस स्थान को बोधगया के नाम से जाना जाता है। भगवान बुद्ध ज्ञान प्राप्ति के बाद उत्तर प्रदेश के सारनाथ चले गये जहाँ उन्होंने पहला उपदेश दिया। उसके बाद वे पुनः राजगीर आये और यहीं पास के गृद्धकूट पर्वत पर उपदेश देने लगे। इसके बाद वे वैशाली एवं अन्य जगहों पर गये। अंत में वे बहुत बीमार हो गये थे और उत्तर प्रदेश के कुशीनगर पहुँचे जहाँ उनका महापरिनिर्वाण हो गया। उन्होंने कहा कि हमने राजगीर में भगवान बुद्ध से जुड़े सभी स्थलों का विकास कराया है। वेणुवन, जहाँ भगवान बुद्ध रहते थे, पहले वहां की स्थिति ठीक नहीं थी। इसके क्षेत्र को बढ़ाया गया है और इसका सौंदर्गीकरण कराया गया है। गृद्धकूट पर्वत पर आने-जाने के लिए रास्ता को ठीक कराया गया है। घोड़ाकटोरा में पानी के बीच में भगवान बुद्ध की 50 फीट ऊँची प्रतिमा लगायी गयी है। इसके अलावा पटना में बुद्ध स्मृति पार्क एवं बुद्ध स्तूप का निर्माण कराया गया है। वैशाली में बुद्ध सम्यक दर्शन संग्रहालय का निर्माण अंतिम चरण में है।

सीएम ने देश-विदेश से पधारे अतिथियों का किया अभिनंदन

समारोह को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि आज बड़ी खुशी की बात है कि विश्व शांति स्तूप की स्थापना के 55वें वार्षिक समारोह का आयोजन किया गया है। इस अवसर पर मैं सभी को शुभकामनायें देता हूँ। साथ ही यहाँ देश-विदेश खासकर जापान से पधारे सभी अतिथियों का अभिनंदन एवं स्वागत करता हूँ। उन्होंने कहा कि आप सब जानते हैं कि राजगीर में विश्व शाँति स्तूप का निर्माण वर्ष 1969 में जापान के फियूजी गुरुजी ने कराया था तथा इसका उद्घाटन 25 अक्टूबर, 1969 को तत्कालीन राष्ट्रपति वीवी गिरी द्वारा किया गया था। तब से हर वर्ष 25 अक्टूबर को यहां कार्यक्रम आयोजित किया जाता है। वर्ष 2019 में विश्व शांति स्तूप के 50 साल पूरे हुये थे तब हमने तत्कालीन राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद को दिल्ली जाकर आमंत्रित किया और वे इस कार्यक्रम में आये थे, जो बहुत बड़ा कार्यक्रम हुआ था।

मोमेंटो एवं अंगवस्त्र भेंटकर सीएम का स्वागत :

कार्यक्रम में मुख्यमंत्री का स्वागत मोमेंटो एवं अंगवस्त्र भेंटकर किया गया। मुख्यमंत्री को परम पावन दलाई लामा के द्वारा भेजे गए उपहार को भेंट किया गया। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री ने राजगीर विश्व शांति स्तूप से जुड़े चीफ मांक एंड वाइस चेयरमैन, राजगीर बुद्ध विहार सोसायटी श्री अत्शुहिरो होरीयुची तथा सीईओ, सेंटोकू कंपनी लिमिटेड श्री केनसुके होरीयुची को प्रतीक चिह्न एवं अंगवस्त्र प्रदान कर सम्मानित किया।मुख्यमंत्री ने विश्व शांति स्तूप, राजगीर के 55वें वर्षगांठ के अवसर पर रोप-वे के निकट नवनिर्मित एकीकृत भवन का शिलापट्ट अनावरण कर उद्घाटन किया। मुख्यमंत्री ने हरी झंडी दिखाकर स्वच्छ राजगीर अभियान का शुभारंभ किया।

सीएम ने की भगवान बुद्ध की पूजा अर्चना :

मुख्यमंत्री ने विश्व शांति स्तूप की परिक्रमा की और भगवान बुद्ध की पूजा-अर्चना कर राज्य की सुख, शांति एवं समृद्धि की कामना की। कार्यक्रम को वाइस चेयरमैन, राजगीर बुद्ध विहार सोसायटी तथा चेयरमैन बोर्ड ऑफ डायरेक्टर सीजीसी कंपनी लिमिटेड ऑफ जापान श्री अत्शुहिरो होरीयुची ने भी संबोधित किया।

ये रहें मौजूद :

इस अवसर पर जल संसाधन सह प्रभारी मंत्री, नालंदा जिला विजय कुमार चौधरी, पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री प्रेम कुमार, ग्रामीण विकास मंत्री श्रवण कुमार, सांसद कौशलेंद्र कुमार, विधायक कौशल किशोर, विधान पार्षद रीना देवी, मुख्यमंत्री के सचिव अनुपम कुमार, पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग की सचिव बंदना प्रेयषी, मुख्यमंत्री के विशेष कार्यपदाधिकारी गोपाल सिंह, पटना प्रमंडल के आयुक्त मयंक बरबड़े, नालंदा जिला के जिलाधिकारी शशांक शुंभकर, नालंदा जिला के पुलिस अधीक्षक भारत सोनी, बिहार राज्य पर्यटन विकास निगम के प्रबंध निदेशक कंवल तनुज, राजगीर बुद्ध विहार सोसायटी की सचिव महाश्वेता महारथी सहित अन्य स्थानीय जनप्रतिनिधि, बौद्ध भिक्षुगण एवं देश-विदेश से आए प्रतिनिधिगण, अतिथिगण एवं अन्य पदाधिकारीगण उपस्थित थे।

एलएसी पर जमीनी स्थिति बहाल करने पर भारत-चीन सहमत : राजनाथ

नई दिल्ली/एजेंसी। पूर्वी लद्दाख में एलएसी विवाद समाप्ति समझौते और के बाद रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा कि दोनों पक्षों की चर्चा के बाद गई है। इसमें पारंपरिक क्षेत्रों में गश्त में मवेशियों को चराने की अनुमति को संबोधित कर रहे थे। जिसमें उन्होंने इस समझौते को एक महत्वपूर्ण रेखांकित करता है। रक्षा मंत्री ने कहा कि भारत और चीन के बीच एलएसी से बातचीत जारी है। समझौते में पारंपरिक क्षेत्रों में गश्त और चारागाह लगातार हुई बातचीत का अहम योगदान है। क्योंकि कभी न कभी समाधान में हुई करीब 50 मिनट की अपनी बैठक को महत्वपूर्ण बताते हुए विवाद उच्च अधिकारी स्तर के तंत्र की बहाली पर भी दोनों ने जोर दिया। साथ ही कहा

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी व राष्ट्रपति शी जिनपिंग की रूस में हुई द्विपक्षीय बैठक वास्तविक नियंत्रण रेखा पर जमीनी स्थिति बहाल करने के लिए सहमति बन देना भी शामिल है। वह राजधानी दिल्ली में आयोजित चाणक्य रक्षा संवाद-24 घटनाक्रम बताते हुए कहा कि यह अंतरराष्ट्रीय मंच पर वार्ता के महत्व को के साथ कुछ क्षेत्रों में विवाद सुलझाने के लिए सैन्य और कूटनीतिक माध्यमों गतिविधियों की मंजूरी भी दी गई है। दोनों देशों के बीच बनी इस सहमति के पीछे निकल ही जाएगा। गौरतलब है कि पीएम मोदी और राष्ट्रपति जिनपिंग ने रूस समाप्ति समझौते को अपनी स्वीकृति प्रदान की थी। बातचीत के लिए स्थापित कि आपसी विश्वास, सम्मान और संवेदनशीलता ही संबंधों का आधार होना चाहिए।

जम्मू-कश्मीर में आतंकी हमले में मृतकों की संख्या हुई पांच

श्रीनगर/एजेंसी। जम्मू-कश्मीर के गुलमर्ग के बोटापथरी इलाके में गुरुवार को सेना के वाहन पर आतंकी हमला हुआ। हमले में दो जवान शहीद हो गए और 3 अन्य घायल हो गए। घायल जवानों में से एक की शुक्रवार को अस्पताल में मौत हो गई। इससे इस हमले में मरने वालों की संख्या पांच हो गई। अधिकारियों ने बताया कि गुलमर्ग के बोटापाथरी इलाके के नागिन चौक में राष्ट्रीय राइफल्स के वाहन पर गुरुवार को हुए आतंकवादी हमले में घायल हुए एक जवान ने शुक्रवार को अस्पताल में दम तोड़ दिया। जम्मू-कश्मीर में हाल ही में हुए हमलों के मद्देनजर, उपराज्यपाल मनोज सिन्हा ने गुरुवार को यूटी में सुरक्षा स्थिति की समीक्षा के लिए एकीकृत मुख्यालय बैठक की अध्यक्षता की। यूएचक्यू जम्मू-कश्मीर में सुरक्षा ग्रिड का सर्वोच्च निकाय है, इसमें सेना, सीएपीएफ, स्थानीय पुलिस, केंद्रीय और यूटी की खुफिया एजेंसियों के वरिष्ठ अधिकारी शामिल हैं। मनोज सिन्हा ने आतंकी हमले के बाद एक्स पर पोस्ट कर लिखा, बूटापाथरी सेक्टर में जघन्य आतंकी हमले पर सेना के शीर्ष अधिकारियों से बात की। आतंकियों को त्वरित और मुंहतोड़ जवाब देने के निर्देश दिए। ऑपरेशन जारी है। हमारे शहीदों का बलिदान व्यर्थ नहीं जाएगा। उनके परिवारों के प्रति संवेदना। घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की प्रार्थना करता हूं।

सामुदायिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में सुधार से नागरिकों का जीवन होगा बेहतर : मुर्मू

राष्ट्रपति ने अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान के दूसरे दीक्षांत समारोह को किया संबोधित

रायपुर/एजेंसी। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने शुक्रवार को कहा कि देश के दूरदराज के इलाकों में रहने वाले लोगों के कल्याण के लिए आधुनिक तकनीकों का इस्तेमाल किया जा सकता है। राष्ट्रपति ने मौजूदा दौर में मानव जीवन पर ऐसी तकनीकों के तेजी से हो रहे प्रभाव का भी हवाला दिया। छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर में स्थित अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान के दूसरे दीक्षांत समारोह को संबोधित करते हुए राष्ट्रपति ने कहा कि चिकित्सा पेशेवरों पर बहुत बड़ी जिम्मेदारी है, क्योंकि उनके फैसले जीवन रक्षा से जुड़े होते हैं। उन्होंने यह उम्मीद भी जताई कि चिकित्सा क्षेत्र के पेशेवर 2047 तक देश को विकसित भारत बनाने के संकल्प को साकार करने में निर्णायक भूमिका निभाएंगे। राष्ट्रपति मुर्मू ने कहा, हम एक ऐसे दौर से गुजर रहे हैं जिसमें आधुनिकतम तकनीक हमारे जीवन को बहुत तेज गति से प्रभावित कर रही है। सुदूर क्षेत्रों के लोगों के कल्याण के लिए इन आधुनिकतम तकनीकों का उपयोग किया जा सकता है। उन्होंने कहा, यह हर्ष की बात है कि एम्स-रायपुर इस दिशा में प्रयासरत है। मुझे बताया गया है कि एम्स-रायपुर कृत्रिम बुद्धिमता द्वारा संचालित क्लीनिकल डिसीजन सपोर्ट सिस्टम पर काम कर रहा है। इसके माध्यम से दूरदराज के क्षेत्रों के डॉक्टरों को आपातकालीन परिस्थितियों में रियल टाइम मदद प्रदान की जाएगी। राष्ट्रपति ने कहा, एम्स-रायपुर द्वारा किए जा रहे इन कार्यों से सामुदायिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में सुधार होगा तथा नागरिकों का जीवन बेहतर होगा। मुझे आशा है कि आने वाले समय में यह संस्थान जनहित के कार्यों में और विस्तार करेगा। देश में पिछले 10 वर्षों में चिकित्सा और स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में उठाए गए कदमों पर प्रकाश डालते हुए राष्ट्रपति ने कहा कि इस दौरान सार्वभौमिक स्वास्थ्य सेवा प्रदान करने के लिए कई कदम उठाए गए हैं। उन्होंने कहा, देश के सभी नागरिकों तक स्वास्थ्य सेवा पहुंचाने के लिए भारत सरकार निरंतर प्रयास कर रही है।

बिहार सरकार कृषि विभाग

केला फसल में लगने वाले रोगों की पहचान एवं प्रबंधन

प्रायः केला फसल में सिगाटोका रोग एवं पनामा विल्ट रोग का प्रभाव देखा जाता है, जो फफूँदजनित रोग है, जिसकी पहचान एवं प्रबंधन कृषक बंधु निम्न प्रकार कर सकते हैं :-

पीला सिगाटोका- इस रोग के कारण केले के नए पत्ते की ऊपरी भाग पर हल्का–पीला दाग या धारीदार लाईन के रूप में परिलक्षित होता है तथा बाद में ये धब्बे बड़े तथा भूरे रंग के हो जाते हैं, जिसका केन्द्र हल्का कत्थई रंग का होता है।

काला सिगाटोका- इस रोग के कारण केले के पत्तियों के निचले भाग पर काला धब्बा, धारीदार लाईन के रूप में दृष्टिगत होता है। ये बारिश के दिनों में अधिक तापमान होने के कारण फैलते हैं तथा इनके प्रभाव से केले परिपक्व होने से पहले ही पक जाते हैं, जिसके कारण कृषकों को उचित लाभ नहीं मिल पाता है।

पनामा विल्ट- अचानक सम्पूर्ण पौधे का सूखना या नीचे के हिस्से की पत्ती का सूखना इस रोग का प्रमुख लक्षण है। पत्तियाँ पीली होकर रंगहीन हो जाती है, जो बाद में मुरझाकर सूख जाती है। मूल पर्णवृत तथा तने के अंदर से सड़ी मछली की दुर्गन्ध आती है।

प्रबंधन-

(1) सिगाटोका तथा पनामा विल्ट रोग के प्रबंधन हेतु प्रतिरोधी किस्म के पौधे लगाएँ, खेत को खरपतवार से मुक्त रखें, खेत से अधिक पानी की निकासी कर लें तथा 1 किलो० ट्राईकोडरमा विरिड को 25 किलो० गोबर खाद के साथ प्रति एकड़ की दर से मिट्टी उपचार करें।

(2) सिगाटोका रोग के प्रबंधन हेतु रासायनिक फफूँदनाशी कॉपर ऑक्सीक्लोराईड 50% घु०चू० 1 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

(3) पनामा रोग के प्रबंधन हेतु सकर को 30 मिनट तक कार्बेन्डाजिम 50% डब्लू०पी० 1 ग्राम प्रति लीटर पानी के घोल में डुबाने के बाद रोपनी करें। कार्बेन्डाजिम 50% घु०चू० 1 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। केले की पत्तियाँ चिकनी होती है, अतः घोल में स्टीकर मिला देना लाभदायक होगा।

पीला सिगाटोका

काला सिगाटोका

पनामा विल्ट

PR No.- 011350 (Agriculture)D. 2024-25

नोटः अधिक जानकारी के लिए किसान कॉल सेन्टर के ट्रॉल फ्री० नं० 18001801551 पर या अपने जिला के सहायक निदेशक, पौधा संरक्षण से सम्पर्क कर सकते हैं।

संयुक्त निदेशक, पौधा संरक्षण
बिहार, पटना।

संक्षिप्त खबरें

भाजपा नगर टीम ने किया गंगा घाटों का निरीक्षण

फतुहा। शुक्रवार को लोक आस्था का महापर्व छठपूजा को लेकर फतुहा के विभिन्न गंगा घाटों का भाजपा नगर अध्यक्ष श्याम सुंदर केशरी ने नेतृत्व में भाजपा नगर टीम ने निरीक्षण कर फतुहा सीओ मुकेश कुमार, नगर कार्यपालक पदाधिकारी विनय कुमार एवं नगर प्रबंधक साकेश कुमार सिन्हा से फतुहा के सभी गंगा घाटों पर साफ-सफाई, बैरिकेडिंग, प्रकाश की उचित व्यवस्था और एसडीआरएफ टीम की तैनाती की मांग की है। वहीं दरियापुर कटैयाघाट पर गिरे पीपल वृक्ष हटाने को लेकर सीओ फतुहा और नगर प्रबंधक से दूरभाष पर बात किया। जिसपर अधिकारियों ने जल्द हटाने का भरोसा दिया। इस अवसर पर भाजपा किसान मोर्चा जिला उपाध्यक्ष मनीषा कुमारी, भाजपा नगर अध्यक्ष श्याम सुंदर केशरी, नगर महामंत्री अरूण कुमार झा, उपाध्यक्ष रंजना पटवा, भाजयुमो अध्यक्ष सुरजीत कुमार, महिला मोर्चा अध्यक्ष अंजु मिश्रा आदि मौजूद थे।

पार्टी को बूथ स्तर तक मजबूत करने का संकल्प

पटना सिटी (प्राकि)। जदयू पटना महानगर गायघाट सेक्टर के चार वार्ड 52, 53,54 और 58 की कार्यकारणी बैठक सेक्टर अध्यक्ष मुकेश कुमार ठाकुर की अध्यक्षता में हुई। मुख्य अतिथि पटना महानगर अध्यक्ष आसिफ कमाल एवं विशिष्ट अतिथि प्रदेश महासचिव सह शिया वक्फ बोर्ड पूर्व चेयरमैन इरशाद अली आजाद थे। वक्ताओं ने पार्टी को बूथ स्तर तक मजबूत करने, मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के विकास कार्यों को जन-जन तक पहुंचाने एवं 2025 के विधानसभा चुनाव में मुख्यमंत्री श्री कुमार को फिर मुख्यमंत्री बनाने का संकल्प लिया। बैठक सुषमा देवी, सुप्रिया कुमारी, अमरेंद्र कुमार, विजय कुमार सिन्हा, ओमप्रकाश मेहता, रामप्रवेश सिंह, आलिया फातिमा, बाबू भाई, अकील अहमद खां, मनीष पटेल, प्रियंका कुमारी, शोभा देवी, शिव शंकर सेठ, सुनील पासवान, आलोक कुमार, मो शहाबुद्दीन, फैयाज, बबलू कुमार,चंचल देवी,खुशबू कुमारी, मनीष गुप्ता, पिंटू कुमार आदि मौजूद थे।

पार्सल बोरे से 72 बोतल विदेशी शराब मिला, महिला गिरफ्तार

पटना सिटी (प्राकि)। आलमगंज थाना की पुलिस ने पर्वो को ध्यान में रखते हुए विशेष छापेमारी अभियान चला रखा है। इस दौरान आलमगंज थाना के थानाध्यक्ष राजीव कुमार के नेतृत्व में मिली सूचना के आधार पर छापेमारी की गई। इस दौरान एक महिला के पास तीन उजले रंग के प्लास्टिक बोरा में पैक पार्सल था। इसे खोलने पर हर पार्सल के बोरे में दो-दो कार्टन यानी कुल छह कार्टन में विदेशी शराब का बोतल पाया गया। हर कार्टन में 750एमएल का 12 बोतल था। यानी कुल 72 बोतल छह कार्टून में पाया गया, जिसकी मात्रा 54 लीटर रही। इस संबंध में आलमगंज थाना में कांड 954/24 बिहार मद्य निषेध एवं उत्पाद अधिनियम दर्ज करते हुए सिवान के बसंतपुर थाना क्षेत्र के गोपालपुर की रहने वाली गुड़िया कुमारी पति राजेश कुमार को गिरफ्तार किया गया। गुड़िया फिलहाल इसी थाना क्षेत्र के बजरंगपुरी रोड नंबर तीन स्थित पारस प्रसाद के मकान में बतौर किराएदार रहती है।

गुरु हरिकिशन जी महाराज के गुरुता गद्दी दिवस तख्त साहिब में सजा दीवान

पटना सिटी, तख्तश्री हरिमिदर जी पटना साहिब में आठवें गुरु हरिकिशन जी महाराज की गुरुता गद्दी दिवस और सातवें गुरु गुरु हरिराय जी साहिब के ज्योतिजोत पर्व मनाया गया। इसे लेकर गुरुवार को दरबार साहिब में विशेष दीवान सजा। इसके पूर्व पिछले 48 घंटे से चल रहे श्री गुरु ग्रंथ साहिब के अखंड पाठ की समाप्ति हुई। इसके बाद सजे विशेष दीवान में कथावाचक ज्ञानी चरणजीत सिंह ने कथा कही। रागी जत्था में भाई हरभजन सिंह, भाई जगत सिंह, भाई नविंदर सिंह, भाई जोगिंदर सिंह, भाई बिक्रम सिंह एवं भाई ज्ञान सिंह ने शबद कीर्तन पेश कर संगत को निहाल कराया। इसके बाद तख्त साहिब के जत्थेदार ज्ञानी बलदेव सिंह ने विश्व शांति व भाईचारे के लिए अरदास किया। हुकुमनामा अतिरिक्त मुख्य ग्रंथी ज्ञानी दिलीप सिंह ने लिया। आयोजन में प्रबंधक कमेटी के पदधारक, सदस्य व संगत शामिल हुई। विशेष दीवान की समाप्ति के बाद गुरु का लंगर चला।

सीमा शुल्क ने गुप्त सूचना के आधार पर 42.43 लाख रुपए विदेशी सिगरेट किया जब्त

प्रात :किरण संवाददाता

पटना। सीमा शुल्क, आयुक्तालय पटना के अंतर्गत सीमा शुल्कप्रमंडल फारबिसगंज के अधिकारियों ने गुरुवार को प्राप्त गुप्त सूचना के आधार पर चौदह कार्टून(1,40,000 स्टिक) विन ब्रांड विदेशी मूल के सिगरेट को नरपतगंज पुलिस कि सहायता से अररिया के नजदीक एक बांस लदे कंटेनरनुमा एक ट्रक (संख्या वढ21उळ-5688) सेजब्त किया। जिसका ट्रक सहित कुल अनुमानित मूल्य 42.43 लाख रुपए है। इस पूरे प्रकरण का अहम पहलू यह है कि सीमा शुल्क सीमा शुल्क प्रमंडल फारबिसगंज को यह गुप्त सूचना मिली थी कि बिना किसी वैध कागजात के विदेशी मूल के सिगरेट को तस्करी कर लाया जा रहा है। तत्काल अधिकारियों के तत्परता से चलाये गएजाँच के दौरान उपोरक्त कंटेनरनुमा ट्रक के चालक के उपरी हिस्सेमें बने छत पर छिपा कर लाये जा रहे चौदह कार्टून विन ब्रांडविदेशी मूल के सिगरेट को बरामद किया गया। प्रत्येक कार्टून में 50 बाक्स एवं प्रत्येक बाक्स में 10 पैकेट व एक पैकेट में 20स्टिक सिगरेट पाया गया। कुल मिला कर 1,40,000 (14501020) स्टिक सिगरेट बरामद किया गया। जिसकोसीमा शुल्क अधिनियम के तहत जब्त कर लिया गया। अधिकारियों ने बताया कि जब्त विदेशी सिगरेट तस्करी कर लाया जा रहा था, क्योंकि इन सामग्री को सीमा शुल्क और वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) का भुगतान किए बगैर हमारे देश में तस्करी कर लाए जा रहे थे। फिलहाल इस बात की छानबीन की जा रही है कि ये विदेशी मूल के सिगरेट कहाँ से लाया एवं कहाँ लेजाया जा रहा था एवं इसके तस्करी में कौन-कौन लोग शामिल हैं। इसके लिए आगे अन्य विधि सम्मत जरुरी करवाई की जा रहीहै। पिछले कुछ समय से डॉ यशोवर्धन पाठक, आयुक्त, सीमा शुल्क (निवारण) पटना के दिशा निर्देश में तस्करी के खिलाफ सघन एवं व्यापक अभियान छेड़ा गया है और इसके फलस्वरूप तस्करी के अनेकों सामान जब्त किये गए हैं। आयुक्त महोदय ने आगे बताया कि अभी चल त्योहारों एवं झारखण्ड में होनेवाले विधान सभा चुनाव के मद्देनजर तस्करी की सम्भावनाबढ़ जाती है जिसको रोकने के लिए सीमा शुल्क पटना पूरी तरह सजग एवं मुस्तैद है। इसके लिए मुख्यालय स्तर पर नियंत्रण कक्ष एवं उड़न दस्ता टीम का गठनकिया गया है व सभी अधिकारीयों को इसके लिए अलर्टरहने के लिए दिशा निर्देश जारी किया गया है। तस्करी के खिलाफ यह अभियान आगे भी जारी रहेगा तथा और भी अधिक प्रबलता से इसका कार्यान्वयन किया जाएगा एवं इसमें संलिप्त लोगों के विरुध सीमा शुल्क अधिनियम के तहत कड़ी कार्रवाई की जाएगी। इसके अतिरिक्त अन्य विभागों यथा रेलवे पुलिस बल, पुलिस विभाग तथा अन्य सरकारी संस्थाओं और सूचना देने वाले व्यक्तियोंका भी सीमा शुल्क विभाग द्वारा चलाए जा रहे इस तस्कर निरोधक अभियान में भविष्य में भी बेहतर समन्वय और सहयोग अपेक्षित है ताकि ऐसी गैर कानूनी गतिविधि पर पूर्णविराम लग सके। इस सम्बन्ध में आयुक्त ने यह भी बताया की तस्करी विरोधी अभियान में सहयोग करने वाले विभागों यथा रेलवे पुलिस बल, पुलिस विभाग तथा अन्य सरकारी संस्थाओं के अधिकारियों एवं सूचना देने वाले व्यक्तियों को सीमा शुल्क अधिनियम के अंतर्गत प्रोत्साहन राशि देने का भी प्रावधान है।

गोदाम से चोरी के मामले में तीन गिरफ्तार, 27 अदद टीवी बरामद

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

दीदारगंज थाना की पुलिस ने गोदाम से चोरी गए 27 पीस टेलीविजन को बरामद किया है। इस मामले में तीन लोगों को गिरफ्तार किया गया है। फतुहा डीएसपी निखिल कुमार ने बताया कि तकनीकी अनुसंधान के क्रम में पुलिस ने नदी थाना क्षेत्र के गुलमहिया बाग का रहने वाला गोविंद महतो को गिरफ्तार किया है उसकी निशानदेही पर पुलिस ने नदी थाना क्षेत्र के फतेहजंगपुर के रहने वाले साधु यादव के गोदाम और आलमगंज थाना क्षेत्र के चैलीटाल निवासी सोनू गुप्ता के घर छापेमारी की। यहां छिपा कर रखे गए 27 अदद टीवी को बरामद किया गया है। डीएसपी ने बताया कि मामले में गोविंद महतो, गुलमहियाचक के अवधेश और सोनू की गिरफ्तारी हुई है। पुलिस ने इन सबों के पास से बरामद दो मोबाइल की जांच कर रही है, ताकि गिरोह में शामिल अन्य अभियुक्तों की जानकारी जुटा कर गिरफ्तार किया जा सके।

समाजसेवी भोला महेशका ने पत्नी की मृत्यु के बाद कराया नेत्रदान

शास्त्रीनगर के रामनाथ गुप्ता का भी दधीचि देहदान समिति ने कराया दान

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

दधीचि देहदान समिति के जागरुकता अभियान का असर रहा कि मृत्यु के बाद दो लोगों के परिजनों ने नेत्रदान कराया। चौक स्थित कचौड़ी गली के रहने वाले भोला महेशका की धर्मपत्नी 70 वर्षीया स्मृतिशेष पुष्पा देवी महेशका एवं शास्त्री नगर के 88 वर्षीय स्मृतिशेष रामनाथ गुप्ता जी के निधन के बाद उनके परिवार ने नेत्रदान करा कर पीड़ित मानवता की सेवा में मिसाल कायम किया है। दोनों परिवार के सुपुत्र एवं परिवार के अन्य सदस्यों की सहमति से एवं समिति के उपाध्यक्ष संजीव कुमार यादव, वरीय सदस्य मुकेश हिसारिया एवं गोविंद कनोडिया की पहल से एक नेत्रदान पीएमसीएच में तो दूसरा नेत्रदान आईजीआईएमएस के नेत्र अधिकोष की टीम को कॉर्निया सौंपा गया। पीड़ित मानवता की सेवा कर समाज को ऐसा संदेश दिया है, जो आने वाली पीढ़ी के लिए प्रेरक होगा। दोनो नेत्रदानियों की आंखों से चार से छह नेत्रहीनों को दृष्टि मिल सकेगी। मृत्यु निश्चित है, परन्तु मृत्यु के बाद भी अमर होने का श्रेष्ठ तरीका है नेत्रदान।

समिति नेत्र अधिकोष के सभी पदाधिकारियों को इस नेक कार्य के लिए धन्यवाद ज्ञापित करती है। समिति के अध्यक्ष एवं पूर्व राज्यपाल गंगा प्रसाद ने जागरूक नागरिकों से अनुरोध किया है कि मृत्यु को जीवन का अंत न बना कर संकल्प लेकर नेत्रदान, अंगदान, देहदान करने का संकल्प लें और महर्षि दधीचि की इस परपंरा को अपना कर पीड़ित मानवता की सेवा में अपना योगदान दें। इस मौके डॉ ब्रजेश शर्मा, डॉ बासु, डॉ आईसी, श्रवण कुमार, शिव प्रसाद मोदी, पुत्र प्रकाश महेशका, सतीश अग्रवाल आदि मौजूद थे। स्थानीय विधायक शाह बिहार विधानसभा के अध्यक्ष नंदकिशोर यादव ने भी समाजसेवी भोला महेशका की धर्मपत्नी और प्रकाश महेशका की माता के निधन पर शोक जताया है और दुखी परिवार को ईश्वर से दुख सहन की शक्ति देने की कामना की है।

शिक्षकों ने कांग्रेसी नेताओं को दी बधाई

प्रात :किरण संवाददाता

पटना सिटी (प्राकि)। शिक्षकों ने पटना साहिब विधानसभा क्षेत्र के कांग्रेसी नेताओं का आभार जताया है। शिक्षकों ने नेताओं को अंग वस्त्र एवं माला पहना कर धन्यवाद दिया। बताते चलें कि 22 अक्टूबर को शिक्षा विभाग ने लोक आस्थाके पर्व छठ में नहाय खाय एवं खरना के दिन की छुट्टी को रद्द कर दिया था। विभाग की मनमानी के कारण कांग्रेसी नेता सुजीत कुमार कसेरा के नेतृत्व में 23 अक्टूबर को भगत सिंह चौक पर सरकार के इस नीति का विरोध करते हुए चार दिन की छुट्टी की मांग की गई थी। लेकिन उसी रात खरना के एक दिन की छुट्टी दी गई। इससे सभी शिक्षकों में खुशी है। बधाई समारोह में कांग्रेसी नेता सुजीत कुमार कसेरा, मो हनीफ शेख, राजद नेता डॉ एकबाल अहमद, जगजीत सिंह, शरीफ रंगरेज, अरविंद शर्मा और फिरोज हसन को सम्मानित किया गया।

फिट इंडिया फ्रीडम रन 5.0 का गांधी मैदान में आयोजन

प्रात :किरण संवाददाता

पटना । भारत सरकार के युवा एवं खेल मंत्रालय के निदेर्शानुसार सभी मंत्रालयों को ह्यफिट इंडिया फ्रीडम रन 5.0ह्य का आयोजन 02 अक्टूबर, 2024 से 31 अक्टूबर, 2024 तक करने का निर्देश दिया गया है जिसका थीम-ह्यस्वच्छता और स्वास्थ्यह्य है। इसी निर्देश के आलोक में सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय के अंतर्गत राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय, पटना के अधिकारियों और कर्मचारियों के द्वारा कार्यालय के उप महानिदेशक रोशन लाल साहू की अध्यक्षता में पटना के गाँधी मैदान में शुक्रवार (25.10.2024) को ह्यफिट इंडिया फ्रीडम रन 5.0ह्य कार्यक्रम संपन्न किया गया। इस कार्यक्रम में वार्ड नं0 27 की वार्ड पार्षद रानी कुमारी ने भी शिरकत की। कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए उप महानिदेशक श्री साहू ने कहा कि ह्यफिट इंडिया फ्रीडम रन 5.0ह्य का उद्धेश्य लोगों में फिटनेस और खेल की आदत विकसित करना एवं उन्हें शारीरिक रुप से सक्रिय जीवन शैली अपनाने के लिए प्रेरित करना है। ह्यमैं फिट तो इंडिया फिटह्य का नारा घर-घर तक पहुँचाना आवश्यक है। उन्होंने उपस्थित लोगों को स्वस्थ जीवन जीने और स्वयं को फिट रखने की शपथ दिलाई। उप निदेशक परिमल ने अपने संक्षिप्त उद्बोधन में स्वदेशी खेलों के प्रति लुप्त होते रुचि को पुनर्जीवित करने पर जोर दिया। सहायक निदेशक अभिषेक गौरव ने फिटनेश संस्कृति को लोकप्रिय बनाने के उपाय बताये। कार्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने ह्यफिट इंडिया फ्रीडम रन 5.0ह्य के अन्तर्गत गाँधी मैदान में लगभग 3 किलोमीटर तक की दौड़ लगाई और उपस्थित जन समूह को नियमित तेज चलने एवं दौड़ लगाने को प्रेरित किया। इस कार्यक्रम में उक्त कार्यालय के वरिष्ठ सांख्यिकीय अधिकारी सुधीर झा, देवेन्द्र कुमार, रश्मि रंजन, अमिताभ पाठक, एम. के.गुप्ता, सुशील सिंह, के.के.गुप्ता, डी.एन.प्रसाद, इन्द्रजीत, मंजूषा, चंदन कुमार, सुमित कुमार के अलावे गुरुराज, विनीता, ज्योति भूषण, उमेश कुमार, मनोज कुमार, राजीव परिहस्त, आलोक पांडे, सोमेन्द्र, संस्कृति भारती, राकेश और दिलीप नन्दन एवं समस्त स्टाफ उपस्थित थे।

बाढ़ पीड़ितों को राहत के नाम पर केवल खानापूर्ति, सब कुछ खोकर त्राहि-त्राहि कर रही जनता : ई राघवेंद्र

पीड़ित जनता को भाग्य भरोसे छोडकर महलों में सो रहे सरकारी बाबु

प्रात :किरण संवाददाता

बिक्रम ; राजद नेता सह समाजसेवी ई राघवेंद्र ने बाढ़ पीड़ितों को राहत के नाम पर केवल खानापूरी करने का आरोप लगाते हुए कहा है कि राज्य के एक बड़े हिस्से में बाढ़ की तबाही झेल रही जनता अभी भी त्राहि-त्राहि कर रही है और सरकार यहां पटना के वातानुकूलित महलों में सो रही है। राजद नेता ने कहा कि दो दिन का हवाई सर्वेक्षण कर औपचारिकता पूरी कर लेने से बाढ़ पीड़ितों को राहत नहीं मिलता, इसके लिए सरकार को उचित कदम उठाने चाहिए थे। बाढ़ में सब कुछ दह जाने के बाद आज सैंकड़ों लोग सड़क पर आ गए हैं, अपने परिवार व बच्चों के साथ स्ट्रीट में रहने एवं मजदूरी कर गूजर बसर करने को मजबूर हैं पर राज्य सरकार का एक भी मंत्री कभी भी बाढ़ पीड़ितों के बीच कहीं नजर नहीं आ रहे । पटना बैठकर केवल राजनीतिक बयानबाजी करने मात्र से पीड़ित जनता का सहयोग नहीं मिलता ।राजद नेता ने कहा कि चंद दिनों की खानापूर्ति के बाद पीड़ित जनता को अब भाग्य-भरोसे छोड़ कर सरकार के पदाधिकारी भी अपने चैम्बर से बाहर नहीं निकल रहे । इधर बाढ़ प्रभावित लोगों के बीच न सही ढंग से राहत सामग्री पहुंच रही है और न उनके परिवार के भरण पोषण के लिए वैकल्पिक व्यवस्था की जा रही है। सारी व्यवस्था स्थानीय निम्नवर्गीय कर्मचारियों पर छोड़ दिया गया है, विदित हो कि भीषण बाढ़ में उतरी बिहार के दर्जनों गांव के लोग अपना सबकुछ खो दिया है, अब भी उन्हें सहयोग की जरूरत है, लेकिन कोई देखने वाला नहीं है ।राजद नेता ने कहा कि मुख्यमंत्री जी द्वारा बाढ़ पीड़ितों को 7-7 हजार रुपए देने की घोषणा की ह्यऊंट के मुंह में जीराह्म वाली बात है । जिस परिवार का सबकुछ बर्बाद हो गया है उन्हें इतनी कम राशि से क्या होगा। ई राघवेंद्र ने कहा कि ऐसे बाढ़ प्रभावित परिवारों की संख्या तीस लाख से ज्यादा है पर सरकार के आंकड़े के अनुसार हीं बाढ़ प्रभावित परिवारों की संख्या साढ़े सोलह लाख (16,50,000) है। और सरकार द्वारा मात्र अड़तालीस हजार (48,000) परिवारों को हीं सात-सात हजार रुपए देने की घोषणा की गई है। ऐसे में 16,02000 परिवारों के साथ इस दुर्व्यवहार को जनता माफ नहीं करेगी, आगामी चुनाव में इसका परिणाम अवश्य दिखेगा ।

चालू वित्तीय वर्ष में चालू हो जाएगा रेडक्रॉस का ब्लड बैंक : नंदकिशोर

भवन बन कर तैयार, खिड़की, दरवाजा व रंग-रोगन ही बाकी

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

इंडियन रेडक्रॉस सोसाइटी के मातहत बन रहे ब्लड बैंक के भवन का निर्माण लगभग पूरा हो गया है। अब महज चौखट, किवाड़, खिड़की व दरवाजा लगाने के साथ ही रंग-रोगन का काम बाकी रह गया है। इसे 2024-25 में ब्लड बैंक के उपकरण की व्यवस्था करने के साथ ही लाइसेंस की औपचारिकताओं को पूरा करा लिया जाएगा। यह बात बिहार विधानसभा के अध्यक्ष नंदकिशोर यादव ने भवन का शुक्रवार को निरीक्षण करने के बाद कह रहे थे। उन्होंने कहा कि एक वृहद ब्लड बैंक की स्थापना करना उनका सपना था। इस दिशा में बिहार के राज्यपाल राजेंद्र विश्वनाथ आर्लेकर ने अहम भूमिका निभाई और ब्लड बैंक का भवन निर्माण के लिए जमीन उपलब्ध कराने एवं अन्य मदद की। वहीं दूसरी ओर भाजपा के वरीय नेता बिहार के डिप्टी सीएम रहे और राज्यसभा के सांसद के रूप में सुशील कुमार मोदी ने अपने सांसद कोष से भवन निर्माण की स्वीकृति प्रदान की। हम सब उन्हें इस पुनीत कार्य के लिए नमन करते हैं। फिलहाल भवन जी प्लस वन है, मगर इसके ऊपर में एक मंजिल का निर्माण और कराया जाना है। इसके लिए स्थानीय लोगों के सहयोग से निर्माण कार्य पूरा किए जाने पर सहमति बन रही है। इस ब्लड बैंक से पूर्व में बाढ़ तक के लोग लाभ अंवित हो सकेंगे। यहां तक बाढ़ से आना हुआ लौटना भी ट्रेन और सड़क मार्ग से सुलभ है। उन्होंने कहा कि जब ब्लड बैंक बन जाएगा, तो रक्तदाता और ब्लड के जरूरतमंद लोगों का यहां आना-जाना लगा रहेगा। ऐसे मुश्किल घड़ी में लोगों को थोड़ी राहत प्रदान करने के लिए मंगल तालाब जैसे रमणीक स्थल का नए सिरे से जीर्णोद्धार कराए जाने की योजना पर काम चल रहा है। करीब 16 साल पहले बतौर पर्यटन मंत्री उन्होंने इसका विकास किया था। पर्यटन विभाग इस पर काम कर रहा है। तालाब का विकास होगा। फिलहाल लाइट एंड साउंड सिस्टम खराब पड़ा है। इसे भी ठीक कराया जाएगा। तालाब के चारों ओर सड़क जीर्ण-शीर्ण अवस्था में है। इसे और जौगिंग ट्रैक भी बनवाया जाएगा। साथ ही तालाब में नौका विहार की सुविधा लोगों को उपलब्ध कराई जाएगी। ब्लड बैंक के निरीक्षण के दौरान रेडक्रॉस सोसाइटी पटना सिटी शाखा के अध्यक्ष गोविंद कानोडिया, डॉ त्रिलोकी प्रसाद गोलवारा, संजीव यादव, भाजपा के प्रदेश प्रवक्ता प्रभाकर मिश्रा, संजीव देवड़ा, राजकुमार गोयनका आदि मौजूद थे।

नगर निगम दिवाली को ले निकल रहे कचरा को उठाने में परेशान

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

पटना नगर निगम के अधिकारी पदाधिकारी व सफाई मित्र खासा दबाव में काम कर रहे हैं। इसके पीछे बड़ा कारण है कि दिवाली में लोगों के घर से लेकर प्रतिष्ठान तक सफाई का काम होता है। लोग कचरा से लेकर पुराना कबाड़ सामान तक फेंकने का काम करते हैं। नतीजतन दिवाली शुरू होने के 10 दिनों पूर्व से ही कचरे का ढेर बढ़ जाता है। इससे सफाई मित्रों, पर्यवेक्षकों से लेकर सफाई निरीक्षकों तक को अधिक काम करना पड़ता है। वाहनों के अधिक चक्कर कचरा का निष्पादन करने के लिए लगाना पड़ता है। वहीं दीपावली के पूर्व से ही प्रशासनिक अधिकारियों का दबाव नगर निगम के अधिकारी से लेकर पदाधिकारी तक पर होता है। पहले छठ पूजा की तैयारी दिवाली के समाप्त होने के साथ शुरू होता था, मगर अब दिवाली के पहले ही घाट जाने वाले रास्ते की सफाई, मरम्मत, रोशनी, गंगा किनारे घाट की सफाई, मिट्टी का समतलीकरण कर सीढ़ी बनाना, वॉच टावर, चेंजिंग रूम सब कुछ दिवाली तक तैयार कर देना होता है। अंतिम रूप से छठ के शाम के अर्घ्य के एक दिन पूर्व किनारे में बांस की चाली लगाई जाती है। हालांकि छठ पर्व नहाय-खाय शुरू होने के एक-दो दिन पूर्व से ही पानी में बांस की घेरेबंदी कराई जाती है, ताकि व्रती से लेकर श्रद्धालु पानी की अधिक गहराई में नहीं जा सकें। फिलहाल स्थिति यह बन गई है कि जिस वार्ड में गंगा नदी का किनारा पड़ रहा है वहां वार्ड का रूटीन वर्क यानी झाड़ू लगवाना, घर-घर कचरा संग्रहण से लेकर विभिन्न कचरा पॉइंट से कचरा का उठाव भी किया जाना है। इसके अलावा घाट की सफाई पर भी ध्यान देना है। पहले घाट जाने के रास्ते की सफाई होती थी, मगर अब भद्रघाट से पटना घाट और उसके पूरब तक गंगा पाथवे का निर्माण हो जाने के कारण उसकी भी सफाई कराना चुनौती बन जाता है। यही स्थिति गायघाट और इसके पश्चिम के घाटों पर भी है। हालांकि उस ओर घाट किनारे से होते हुए पैदल ही जाया जा सकता है, मगर सफाई कराना जरूरी हो जाता है। अब सफाई निरीक्षकों, पर्यवेक्षकों और सफाई मित्रों को भी सुबह पांच बजे से लेकर अपराह्न तीन-चार बजे तक लगातार काम करना पड़ रहा है। स्थिति यह बन गई है कि घाट किनारे लगने वाले वार्ड में चाहे वह अजीमाबाद, पटना सिटी या बांकीपुर अंचल हो, वार्ड में घर-घर कचरा संग्रहण, झाड़ू लगाने से लेकर कचरे के उठाव पर असर पड़ रहा है। नगर निगम के साथ ही अनुमंडल प्रशासन की भी सक्रियता बढ़ गई है। कार्यालय कार्य के अलावा भी प्रतिदिन सिटी एसडीओ से लेकर अन्य पदाधिकारी को भी सौंपे गए जिम्मेवारी के अनुसार घाटों का भ्रमण करना, समस्याओं का निराकरण करना, दिशा-निर्देश देना रह गया है। एसडीओ सत्यम सहाय ने बताया कि व्रतियों की सुविधा के लिए चेंजिंग रूम, वॉच टॉवर, शौचालय, पानी का टैंकर, लाइट की व्यवस्था करने के साथ साफ-सफाई व एप्रोच सड़क की मरम्मत का कार्य कराया जा रहा है। निगम की ओर से जारी किए टेंडर में ठेकेदार घाटों को समतल करने और कपड़ा लगा घेराबंदी कराने के साथ अन्य कार्य हो रहा है। नगर निगम की ओर से इसके लिए अतिरिक्त सफाई मित्रों को लगाया गया है, जो व्रतियों की सुविधा के लिए कार्य कर रहे हैं। प्रशासन व निगम के अधिकारियों का दल भी निरंतर कार्य की निगरानी कर रहा है। छठ को लेकर हो रही तैयारियों का अधिकारियों के स्तर पर निरीक्षण भी किया जा रहा है।

नकली अगरबत्ती व धूना बरामद

पटना सिटी (प्राकि)। ब्रांडेड कंपनी के नाम पर नकली अगरबती एवं धूना बनाने एवं बेचने की सूचना पर मालसलामी थाना की पुलिस को मिली। इस सूचना के आधार पर पत्थर घाट मोहल्ला में छापेमारी की गई। यहां से करीब चार लाख मूल्य का सामान जब्त किया गया। पुलिस ने बताया कि कंपनी के प्रतिनिधि की शिकायत पर छापेमारी की गई है। त्योहार के मौसम में नकली धूना और अगरबत्ती का निर्माण कर बेचने का धंधा चल रहा है। ब्रांडेड कंपनी के नाम पर आम उपभोक्ता ठगी के शिकार होते हैं। सही कंपनी को भी आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है। कंपनी प्रतिनिधि का दावा है कि उसकी कंपनी के नाम पर पत्थर घाट में नकल कर अगरबत्ती एवं धूना तैयार कर बेचा जा रहा था। मालसलामी थानाध्यक्ष राजकुमार सिंह ने बताया कि कंपनी प्रतिनिधि के बयान पर कांड अंकित कर मामले की छानबीन की जा रही है। किसी की गिरफ्तारी नहीं हुई है।

11 करोड़ 35 लाख रुपये की लागत से निर्मित 14 विभिन्न सडकों का विधायक ने किया उद्घाटन

प्रात :किरण संवाददाता

बिक्रम : मुख्यमंत्री ग्राम संपर्क सड़क योजना के तहत बिक्रम विधायक सिद्धार्थ सौरव ने शुक्रवार को विधानसभा में 11 करोड़ 35 लाख रुपये की लागत से निर्मित 14 विभिन्न सड़कों उद्घाटन किया `मौके पर विधायक सिद्धार्थ सौरव ने ने मुख्यमंत्री ग्राम सड़क योजना के तहत विधानसभा क्षेत्र के सरासत से टरवा भाया बिछेदी , बिछेदी से दरियापुर दलित टोला, पिपलावा से सरारी, गहरा से बर्खुदचक , बारा से मलाहिखंढा , खजुरी खैरा से मिटनचक , शेखपुरा बांध से खैरा , महमदपुर से गोपालपुर , चेचौल से चक चेचौल, नगवा कराई मुख्य सड़क से गदाईचक लिंक रोड, सदिसोपुर रोड से बिहटा बसन्तचक भाया मुसहरी महादलित टोला, नवही पीडब्ल्यूडी रोड से सोहरा महादलित टोला, एन एच 98 से करसा लिंक रोड एवं अकबरपुर से सरवनचक रोड, जानीपुर नौबतपुर पथ भाया दरियापुर मध्य विद्यालय तक बनाए गए सडकों का उद्घाटन किया । वहीं ईन गांवों में सड़क मार्ग बनने के कारण आवागमन का सुलभ होने से प्रसन्न लोगों ने स्थानीय विधायक को फूल माला से स्वागत कर उनके प्रति आभार जताया` वहीं विधायक ने कहा कि जनता की सेवा ही हमारा धर्म है, इनकी सुविधाओं का हरसंभव ध्यान रखना हमारी मुल कर्तव्य है `स्थानीय लोगों का विकास ही मेरा मकसद रहा है और रहेगा` मौके पर पंकज कुमार, अभिनव मनीष, पिंटू कुमार, मोंटी गुप्ता, जितेंद्र यादव आदि सहित अन्य गणमान्य लोग भी मौजूद थे ।

राजद ने लोकतंत्र की गरिमा को तार-तार किया : विजय

तुष्टिकरण की राजनीति के पोषक बन गए हैं राजद सुप्रीमो

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

बिहार के उपमुख्यमंत्री विजय कुमार सिन्हा ने राजद सुप्रीमो लालू प्रसाद यादव पर जमकर निशाना साधा है। श्री सिन्हा ने कहा है कि वे कभी गरीबों का मसीहा बनने का स्वांग रचते हैं तो कभी मुसलमानों का शुभचिंतक बनने का नाटक करते हैं। लेकिन अपने पूरे राजनीतिक जीवन में अपने परिवार के अलावा किसी का भला नहीं कर पाए। कोई ऐसा सगा नहीं जिसे लालू जी ने ठगा नहीं हो। अपने राजनीतिक स्वार्थ को साधने के लिए उन्होंने हमेशा समाज को बांटने और लड़ाने का काम किया है। आर्थिक भ्रष्टाचार के मामले में तो इनका रुख जगजाहिर ही है। ताज्जुब की बात तो यह है कि राजद पोषित लोग आज लालू जी जैसे सजायाफ्ता के लिए भारतरत्न की मांग कर रहे। यह मांग करना भी भारतरत्न की प्रतिष्ठा का अपमान है। जबकि श्रीबाबू सहित कई महापुरुष बिहार में हुए हैं, जिनकी कीर्ति, वृत्ति और प्रवृति पर राज्य को गर्व है। उनके लिए इन्होंने कभी ऐसे सम्मान की मांग नहीं की। श्री सिन्हा ने कहा कि अब तो स्थिति ये हो गई है कि अपनी खोई हुई राजनीतिक जमीन को पाने को कोशिश में वे और उनकी पार्टी देश की लोकतांत्रिक गरिमा और सामरिक संबंधों को भी तार-तार करने से बाज नहीं आ रहे। बीते दिनों संयुक्त अरब अमीरात(वअए) के राष्ट्राध्यक्ष के साथ भारत के माननीय प्रधानमंत्री की आधिकारिक बैठक की तस्वीर के साथ राजद के ऑफिशियल ट्विटर हैंडल से जिस प्रकार की टिप्पणी की गई भारत के लोकतंत्र के प्रति आस्था रखने वाले किसी भी दल उसकी अपेक्षा नहीं जा सकती। राजद ने प्रधानमंत्री के पद की गरिमा, भारतीय लोकतंत्र की मयार्दा और राजनयिक संबंधों के प्रति सम्मान को एक साथ धूमिल करने का प्रयास किया है। श्री सिन्हा ने कहा कि तेजस्वी भी अपने पिता की तरह की भ्रम, विद्वेष और तुष्टिकरण की राजनीति के पोषक बन गए हैं। श्री सिन्हा ने कहा कि लालू परिवार ने मुसलमान ही नहीं स्वयं अपने स्वजातीय लोगों के साथ भी सौतेला व्यवहार किया है। उन्होंने अपने समाज के किसी भी जनाधार वाले नेता को आगे नहीं बढ़ने दिया। इसका साक्षात उदाहरण लोगों ने बीते लोकसभा चुनाव के दौरान देखा है। इसलिए उनके दल का सामाजिक न्याय अपने परिवार से शुरू होकर अपने परिवार तक ही सिमट कर रह गया है। इसलिए आगामी उपचुनाव या झारखंड चुनाव में ये पिता-पुत्र जहां जाएंगे वो सीट ये लोग हार जाएंगे।

रामगढ़ से एनडीए प्रत्याशी के नामांकन समारोह में शामिल हुए जदयू प्रदेश अध्यक्ष

झूठ के सहारे चुनावी बेड़ा पार लगाना चाहता है विपक्ष : उमेश

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

जदयू के प्रदेश अध्यक्ष उमेश सिंह कुशवाहा रामगढ़ विधानसभा उप-चुनाव के एनडीए समर्थित भाजपा प्रत्याशी अशोक कुमार सिंह के नामांकन समारोह में शामिल हुए। इस दौरान प्रदेश अध्यक्ष ने जनसभा को संबोधित करते हुए स्थानीय मतदाताओं से आगामी 13 नवंबर को चुनाव चिन्ह कमल छाप पर वोट करने की अपील की। उन्होंने कहा कि चुनाव के दौरान जनता को झांसा देने में विपक्ष को महारथ हासिल है लेकिन उनके इस खेल को अब जनता भी समझ चुकी है। श्री कुशवाहा ने कहा कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के नेतृत्व में बिहार की एनडीए सरकार विकास के निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में तेज गति से आगे बढ़ रही है। केंद्र और राज्य में डबल इंजन की एनडीए सरकार समाज के अंतिम पायदान में खड़े व्यक्ति की चिंता करती हैं। वहीं, दूसरी ओर राजद और कांग्रेस की सोच पर परिवारवाद का ताला लग चुका है। उन्होंने कहा कि बिहार का हित चाहने वाले हर मतदाता का दायित्व ये बनता है कि इस उपचुनाव में ऐसा परिणाम दें कि हमारे प्रतिद्वंद्वी 2025 की रणभूमि में जाने से पहले सौ बार सोचें। प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि उप-चुनाव में विपक्ष के विकास विरोधी मानसिकता को रामगढ़ की जनता पूरी तरह से नकार देगी और सभी चार सीटों पर एनडीए गठबंधन का परचम लहराएगा। साथ ही उन्होंने कहा कि जंगलराज की खौफनाक यादें आम जनता के जहन में आज भी ताजा है और उस काले दौर में कोई भी वापस नहीं जाना चाहता। वर्ष 2005 के बाद नीतीश कुमार ने बिहार में भयमुक्त माहौल कायम किया है। उन्होंने कहा कि आसुरी शक्तियां आज भी हमारे बीच मौजूद है। बस इन्होंने अपना रूप बदल लिया है। आज जरूरत इस बात की है कि इन जनविरोधी, समाजविरोधी, विकासविरोधी और लोकतंत्रविरोधी शक्तियों को हम पहचानें और अपने मत की ताकत से उन्हें उखाड़ फेंकें। श्री उमेश सिंह कुशवाहा ने आगे कहा कि एनडीए की चट्टानी एकता के आगे विपक्षी शक्तियां पूरी तरह से धराशायी हो जाएगी। विपक्ष के पास मोदी-नीतीश की जोरदार और असरदार जोड़ी का कोई विकल्प मौजूद नहीं है। उन्होंने कहा कि विपक्ष सिर्फ झूठ और अफवाह के सहारे चुनावी बेड़ा पार लगाना चाहता है लेकिन जनता किस भी कीमत पर इसे मंसूबे को कामयाब नहीं होने देगी।

विकास, सुरक्षा और समृद्धि के लिए एनडीए है जरूरी: दिलीप

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष ने की एनडीए को समर्थन देने की अपील

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

रामगढ़ में एनडीए प्रत्याशी अशोक कुमार सिंह के नामांकन सभा का आयोजन किया गया, जिसमे भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष और राजस्व एवं भूमि सुधार मंत्री, डॉ. दिलीप जायसवाल उपस्थित रहे। इस सभा में भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष ने एनडीए की ऐतिहासिक जीत के आह्वान के साथ, क्षेत्र के विकास और प्रगति के प्रति पार्टी की प्रतिबद्धता दोहराई गई। डॉ. दिलीप जायसवाल ने सभा को संबोधित करते हुए कहा, एनडीए की नीतियां जनता के हित में हैं, और रामगढ़ के हर नागरिक को इसका लाभ मिलेगा। भाजपा की इस ऐतिहासिक जीत से न केवल रामगढ़ बल्कि पूरे क्षेत्र के विकास में नए आयाम जुड़ेंगे। उन्होंने रामगढ़ की जनता से अपील करते हुए कहा कि वे अशोक कुमार सिंह को अपना समर्थन दें और रामगढ़ को एक समृद्ध एवं सुरक्षित भविष्य की ओर ले जाने में योगदान दें। उन्होंने लोगों से वादा करते हुए कहा कि एक साल के अंदर रामगढ़ के विकास के लिए सरकार का खजाना खोल दिया जाएगा। उन्होंने इस सभा मे आने वाले लोगों को धन्यवाद भी दिया।

बिहार के विकास के लिए एनडीए जरूरी :

उप मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने कहा कि बिहार के विकास के लिए एनडीए जरूरी है। उन्होंने एनडीए प्रत्याशी अशोक सिंह को लेकर कहा कि ये भाजपा के मंझे हुए कार्यकर्ता है और जनता के बीच रहने वाले हैं। इनकी जीत से रामगढ़ को एनडीए सरकार की योजनाओं का सीधा लाभ मिलेगा। उन्होंने कहा कि डबल इंजन की सरकार बिहार को विकास के रास्ते पर आगे बढ़ा रही है। बिहार के विकास के लिए जरूरी है कि एनडीए और मजबूत हो।

सर्वांगीण विकास के लिए एनडीए सरकार प्रतिबद्ध :

उप मुख्यमंत्री विजय कुमार सिन्हा ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि रामगढ़ की प्रगति, उन्नति और सर्वांगीण विकास के लिए एनडीए सरकार प्रतिबद्ध है। उन्होंने लोगों से समस्त रामगढ़वासियों से अपील करते हुए कहा कि सुशासन, शांति और सौहार्द के साथ-साथ सतत विकास को समर्पित एनडीए गठबंधन के पक्ष में मतदान कर भाजपा प्रत्याशी अशोक सिंह को रिकॉर्ड मतों जीत दिलाएं।

सभा को मंत्री मंगल पांडेय, शीला मंडल, जनक राम, हरि सहनी, सुनील कुमार, सन्तोष सिंह, केदार प्रसाद गुप्ता, जमा खान ,केंद्रीय मंत्री राजभूषण निषाद, सतीश चंद्र दुबे, सहित राष्ट्रीय लोकमोर्चा के अध्यक्ष उपेंद्र कुशवाहा, जदयू के प्रदेश अध्यक्ष उमेश कुशवाहा के अलावा निवेदिता सिंह सहित बड़ी संख्या में लोग उपस्थित रहे।

सक्षमता परीक्षा के प्रश्न पत्रों में गड़बड़ी पर दोषी कौन ?: राठौड़

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

स्थानीय निकाय शिक्षकों के दूसरे चरण की सक्षमता परीक्षा में सात विषयों के प्रश्न पत्रों में विसंगति होने के कारण दुबारा 13 नवम्बर को 85 हजार शिक्षकों की परीक्षा कराएं जाने के सरकारी आदेश पर बिहार कांग्रेस के मीडिया विभाग के चेयरमैन राजेश राठौड़ ने कड़ी प्रतिक्रिया व्यक्त की है। उन्होंने कहा है कि बिहार सरकार प्रत्येक मोर्चे पर विफल साबित हो रही है और इसका ताजा उदाहरण अब शिक्षक सक्षमता परीक्षा के प्रश्न पत्र हैं। उन्होंने कहा कि जब आप राज्य के संसाधनों का पूरा इस्तेमाल कर रहे हैं तो फिर कैसे गड़बड़ी हो जा रही है? ये सवाल सरकार से लाजिमी है कि प्रश्न पत्रों के सेटिंग के वक्त आपने जिन एजेंसियों को पैसा दिया है क्या वो एजेंसियां अपनी इस विसंगति के लिए आर्थिक बोझ वहन कर रही हैं या राज्य की जनता की टैक्स के गाढ़ी कमाई को राज्य सरकार ऐसी एजेंसियों को देने के लिए इस तरीके की हरकत कर रही है? बिहार कांग्रेस के मुख्य प्रवक्ता राजेश राठौड़ ने कहा कि नौवीं सातवीं के पांच विषय और ग्यारहवीं बारहवीं के दो विषयों के प्रश्न पत्रों में गड़बड़ी के कारण परीक्षा रद्द की गई है जिसके कारण अन्य विषयों के भी सक्षमता परिणाम में विलंब होगी। साथ ही फिर से सेंटर निर्धारित होंगे और प्रवेश पत्र जारी करने और संसाधनों के इस्तेमाल से राज्य के आर्थिक कोष पर बोझ बढ़ेगा तो क्या राज्य सरकार अपनी इस खामी के लिए राज्य की जनता से माफी मांगेगी? ये बताने के लिए काफी है कि राज्य सरकार के द्वारा ऐसी स्थिति बार बार पैदा करके राज्य की जनता के टैक्स के पैसों को बर्बाद किया जा रहा है और आर्थिक रूप से राज्य को कमजोर करने का प्रयास चल रहा है। प्रश्न पत्रों में विसंगति करने वाले एजेंसी को ब्लैक लिस्टेड किया जाएं।

माले महासचिव की पदयात्रा फुलवारी पहुंची

आज11 वां दिन, पटना महानगर में स्वागत की व्यापक तैयारी

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

भाकपा-माले महासचिव कामरेड दीपंकर भट्टाचार्य के नेतृत्व में 16 अक्टूबर से नवादा से शुरू हुई बदलो बिहार न्याय यात्रा शुक्रवार को शाम फुलवारीशरीफ पहुंच गई। अब तक इस यात्रा में लगभग 200 किलोमीटर की दूरी तय कर ली गई। यह यात्रा नवादा से शुरू होकर हिसुआ, वजीरगंज, मानपुर, गया, टिकारी, कुर्था, जहानाबाद, मसौढ़ी, नौबतपुर होते हुए फुलवारी शरीफ पहुंची है। पदयात्रा में उनके अलावा मगध जोन के प्रभारी कामरेड अमर, अरवल विधायक महानंद सिंह, घोसी विधायक रामबली सिंह यादव, जेएनयूएसयू के अध्यक्ष धनंजय, फुलवारी के विधायक गोपाल रविदास, एमएलसी शशि यादव सहित दर्जन भर पार्टी नेता कार्यकर्ता स्थाई रूप से पदयात्रा में शामिल हैं। 26 अक्टूबर की सुबह पटना महानगर में यह पदयात्रा प्रवेश करेगी। फुलवारी की दिशा से आने वाली इस यात्रा का स्वागत पटना महानगर में चितकोहरा गोलंबर पर किया जाएगा। उसके बाद यात्रा आगे बढ़ेगी। पुराना सचिवालय होते हुए सतमूर्ति व बटुकेश्वर दत्त प्रतिमा पर माल्यार्पण, नागरिक समाज द्वारा स्वागत, आर ब्लॉक (हार्डिंग पार्क) स्थित वीर कुंवर सिंह की प्रतिमा पर माल्यार्पण, जीपीओ गोलंबर पर फुटपाथ दुकानदार साथियों द्वारा अभिनंदन, कॉ रामनरेश राम स्मृति दिवस पर श्रद्धांजलि व जनसंवाद, न्यू मार्केट से डाक बंगला चौराहा के रास्ते आयकर चौराहा की ओर यात्रा, आयकर चौराहा पर लोकनायक जयप्रकाश नारायण की प्रतिमा पर माल्यार्पण और। अंबेडकर प्रतिमा (हाइ कोर्ट) पर माल्यार्पण के साथ यात्रा का समापन किया जाएगा। तत्पश्चात 27 अक्तूबर को पटना के मिलर हाइ स्कूल खेल मैदान में बदलो बिहार न्याय सम्मेलन का आयोजन किया गया है।

बिहार भाजपा जिला संगठन चुनाव अधिकारी किये गए नियुक्त

पटना। बिहार भाजपा में संगठनात्मक चुनाव अब रफ्तार पकड़ता जा रहा है। बिहार भाजपा द्वारा चलाये जा रहे सदस्यता अभियान के बीच अब संगठन चुनाव को लेकर भी तैयारी शुरू कर दी गयी है। इस बीच, बिहार भाजपा के प्रदेश चुनाव अधिकारी सह प्रदेश महामंत्री राजेश वर्मा ने शुक्रवार को जिला संगठन चुनाव अधिकारियों की घोषणा कर दी। वर्मा ने बताया कि सदस्यता अभियान के साथ ही संगठनात्मक चुनाव शुरू होगा। इसके तहत जिला स्तर पर संगठन चुनाव अधिकारी बनाए गए हैं, जिनकी देखरेख में जिला संगठन के चुनाव संपन्न कराए जाएंगे। उन्होंने कहा कि भाजपा कार्यकर्ताओं की पार्टी है और कोई भी कार्यकर्ता यहां बड़े पदों पर आसीन हो सकता है। वर्मा ने कहा कि संगठनात्मक 45 जिलों के लिए चुनाव अधिकारियों की घोषणा की गई है। विधायक प्रमोद कुमार को पटना ग्रामीण का चुनाव अधिकारी बनाया गया है जबकि पटना महानगर का चुनाव अधिकारी की जिम्मेदारी पूर्व विधायक विनय सिंह को दी गयी है। इसी तरह बनाये गए चुनाव अधिकारियों में साँसद, विधायक, विधान पार्षद, प्रदेश के अधिकारी भी शामिल हैं।

गरीबों की सेवा करना नीतीश सरकार की प्राथमिकता : सुमित

- मंत्री सुमित कुमार सिंह ने सुनी जन समस्याएं

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

जदयू प्रदेश कार्यालय में आयोजित जनसुनवाई कार्यक्रम में विज्ञान, प्रौद्योगिकी व तकनीकी शिक्षा मंत्री सुमित कुमार सिंह ने प्रदेश के विभिन्न जिलों से पहुंचे आम जनता की समस्याओं को सुनकर उनके त्वरित समाधान हेतु संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। इस दौरान मंत्री ने कहा कि शोषित, वंचित एवं गरीब जनों की सेवा करना नीतीश सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता रही है। गौर हो कि जनसेवा के इसी ध्येय को केंद्र में रखकर प्रदेश कार्यालय में प्रत्येक सप्ताह दिन मंगलवार से शुक्रवार तक जनसुनवाई कार्यक्रम आयोजित किया जाता है। साथ ही इसके माध्यम से अब तक बड़ी संख्या में आम लोगों को मदद भी मिली है।

राजद सुप्रीमो ने परिवारवाद को दिया बढ़ावा : नवल

पटना। जदयू के प्रदेश प्रवक्ता नवल शर्मा ने राजद सुप्रीमो पर परिवारवाद का आरोप लगया है। जदयू प्रवक्ता ने आगे कहा कि लालू प्रसाद ने सामाजिक न्याय की आड़ में अकूत संपत्ति अर्जित की और पत्नीवाद, बेटावाद को बढ़ावा दिया। वे गरीबों के ऐसे मसीहा हैं जिसने नौकरी के नाम पर गरीबों से उनकी जमीन लिखवाकर उन्हें खेती बाड़ी के तमाम झंझटों से मुक्त कर दिया। जंगलराज कायम कर माफियों और गुंडों को रोजगार दिया जिससे उनकी आय में वृद्धि हुई। असंख्य उपलब्धियां उनके नाम हैं। जदयू प्रवक्ता ने आगे कहा कि लालू जी का पूरा परिवार स्वतंत्रता सेनानियों का परिवार है जिनके दरवाजे पर ईडी, आईटी और सीबीआई जैसी संस्थाएं हमेशा मत्था टेकने पहुंचती हैं। ऐसे महान व्यक्ति के लिए भारत रत्न भी बहुत छोटा है।

सीएम नीतीश ने बापू के सपनों को किया साकार: जदयू

पटना। जदयू प्रदेश प्रवक्ता हिमराज राम ने मीडिया में जारी एक बयान में कहा कि वर्तमान समय में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के सपनों को सही मायनों में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार साकार कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि राज्य भर में 7160 करोड़ रुपए की लागत से 2615 पंचायत सरकार भवन का शिलान्यास इसका उदाहरण है। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में राज्य के 8053 ग्राम पंचायतों में 6858 पंचायत सरकार भवन स्वीकृत किए गए हैं जिनमें कि 1548 भवनों का निर्माण पूरा हो चुका है। उन्होंने कहा कि इन पंचायत सरकार भवन के निर्माण से आम लोगों को काफी सुविधाएं मिलेंगी जहाँ लोगों को एक ही छत के नीचे राज्य सरकार की तरफ से चलाई जा रही अनेकों योजनाओं का लाभ मिल सकेगा। पार्टी प्रदेश प्रवक्ता ने कहा कि पंचायत सरकार भवनों के निर्माण से लोगों को सरकारी कामों के लिए शहरों के चक्कर नहीं लगाने पडेंगे। उन्होंने कहा कि पंचायत सरकार भवन में केवल पंचायतों का ही काम नहीं होगा बल्कि लोगों को और भी कई तरह की सुविधाएं मिल सकेगी। उन्होंने कहा कि भारत की आत्मा गांवों में बसती है और जब तक ग्रामीण इलाकों में रहने वाले लोगों का सशक्तिकरण नहीं होगा तब तक देश का विकास संभव नहीं है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की हमेशा से ये कोशिश रही है कि गांवों में रहने वाले लोगों का सतत विकास हो।

एनडीए सरकार विकास का पर्याय : अरविन्द

पटना। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश प्रवक्ता अरविन्द कुमार सिंह ने कहा है कि एनडीए सरकार गरीबी की चुनौतियां समझती हैं और प्रगति का रास्ता बनाना भी जानती हैं। इसीलिए मुख्यमंत्री नीतीश कुमार जी के नेतृत्व में एनडीए सरकार में बिहार में 1,239 दारोगाओं को नियुक्ति पत्र सौंपा गया है। साथ ही तीन ट्रांसजेंडरों को एक साथ दारोगा बनाने वाला पहला राज्य बिहार बन गया है। और तो और बिहार पुलिस में जल्द ही 1.22 लाख से अधिक पदों पर बहाली होगी। साथ ही दरभंगा हवाई अड्डे को नया आयाम मिलेगा, इसके लिए 912 करोड़ की लागत से 24 एकड़ में अयोध्या की तर्ज पर वर्ल्ड क्लास टर्मिनल बनेगा। और एनडीए सरकार बिहारवासियों को विश्वस्तरीय चिकित्सा सेवा प्रदान करने के लिए पटना मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल में 2073 बेड एवं एयर एंबुलेंस जैसी सुविधाओं के साथ, पटना मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल को देश का नंबर वन और विश्व का दूसरा सबसे बड़ा अस्पताल बनाने का काम करेगी। जिसके पहले फेस का उद्घाटन 25 फरवरी को होगा। श्री अरविन्द ने कहा कि और वहीं बिहार में उद्योग को बढ़ावा देने के लिए दृढ़ संकल्पित है एनडीए सरकार। इसी के परिणाम स्वरूप भागलपुर में 50 करोड़ की लागत से सिल्क उद्योग लगाया जाएगा, जहां सिल्क के कपड़े तैयार किए जाएंगे। इन कपड़ों के लिए कच्चे समान से लेकर प्रोडक्ट निर्माण तक सब बिहार में होगा। कच्चे माल के लिए फोरलेन किनारे 100 किमी क्षेत्र में रेशम कीट के पौधे लगाए जाएंगे। इस पहल से बिहार में सिल्क उद्योग सशक्त होगा। एनडीए सरकार गरीबी की चुनौतियां भी समझती हैं और प्रगति का रास्ता बनाना भी जानती हैं। इसीलिए एनडीए सरकार अपने प्रगतिशील योजनाओं और नीतियों के कारण विकास का पर्याय बन गई है।

खिरहर सीतामढ़ी जिला राजद का कार्यकारी अध्यक्ष मनोनीत

- लोहिया को झंझारपुर संगठन जिला प्रधान महासचिव की जिम्मेवारी

पटना। राष्ट्रीय जनता दल के प्रदेश अध्यक्ष जगदानंद सिंह ने शैलेन्द्र कुमार उर्फ कब्बू खिरहर को सीतामढ़ी जिला राजद का कार्यकारी अध्यक्ष एवं अनिल कुमार यादव लोहिया को संगठन जिला झंझारपुर का प्रधान महासचिव मनोनीत किया है। यह जानकारी देते हुए राजद प्रवक्ता चित्तरंजन गगन ने बताया कि उक्त मनोनयन तत्काल प्रभाव से प्रभावी माना जाएगा।

राजद में अंध भक्तों का जमावड़ा : प्रभाकर

पटना। भाजपा के प्रदेश प्रवक्ता प्रभाकर कुमार मिश्र ने राजद प्रमुख लालू प्रसाद को भारत रत्न देने की मांग पर करारा तंज कसते हुए कहा कि लालू प्रसाद देश-दुनिया में अपने भ्रष्टाचार के लिए जाने जाते हैं। उन्होंने भ्रष्टाचार का नया कीर्तिमान स्थापित किया है। इसलिए लालू प्रसाद को भारत रत्न नहीं, भ्रष्टाचार रत्न के सम्मान से सम्मानित किया जाना चाहिए। श्री मिश्र ने शुक्रवार को प्रेस विज्ञप्ति जारी कर कहा कि राजद में अंध भक्तों का जमावड़ा है। ऐसे चापलूसों को दो कदम आगे बढ़कर लालू प्रसाद के लिए भारत रत्न नहीं, विश्व रत्न की मांग करनी चाहिए। मिश्र ने कहा कि लालू प्रसाद के लिए भारत रत्न की मांग कर लोग इस सर्वोच्च सम्मान का अपमान कर रहे हैं। उनके कारनामे ने बिहार को बदनाम करने में कोई कसर बाकी नहीं रखी। मुख्यमंत्री से लेकर रेलमंत्री के रूप में उन्होंने ने सिर्फ और सिर्फ भ्रष्टाचार ही किया है। उनके लिए भारत रत्न की मांग करना मानसिक दिवालियापन को दर्शाता है।

चित्रगुप्त पूजा : गर्दनीबाग ठाकुरबाड़ी में सामाजिक समरसता भोज

- गरीब बच्चों को दी जाएगी स्कॉलरशिप : रणबीर

गर्दनीबाग ठाकुरबाड़ी के अध्यक्ष, पूर्व विधान पार्षद व भाजपा के वरिष्ठ नेता प्रो. रणबीर नंदन ने कहा है कि श्री श्री 108 भगवान श्री चित्रगुप्त महाराज की पूजा 03 नवंबर को होनी है। इसी दिन गर्दनीबाग ठाकुरबाड़ी पूजा समिति द्वारा गरीब प्रतिभावान बच्चों को स्कॉलशिप दिया जाएगा।

प्रो. नंदन ने बताया कि गर्दनीबाग ठाकुरबाड़ी में सभी जाति धर्म के लोग चित्रगुप्ता पूजा करते हैं। इस दौरान यहां के मशहूर सामाजिक समरसता प्रीतिभोज में सभी धर्म और जाति वर्ग से लगभग 10 हजार लोग भगवान चित्रगुप्त का कच्ची प्रसाद ग्रहण करते हैं और भगवान चित्रगुप्त का दर्शन करते हैं। हर वर्ष मुख्यमंत्री नीतीश कुमार भी भगवान चित्रगुप्त का पूजन करने गर्दनीबाग ठाकुरबाड़ी में आते हैं। साथ मंत्री, विधायक, सांसद, आईएएस, आईपीएस, डॉक्टर, इंजीनियर, सरकारी अधिकारी, प्रोफेसर, पत्रकार सभी लोग आते हैं। प्रो. नंदन ने बताया कि भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद, लोकनायक जयप्रकाश नारायण, पूर्व मुख्यमंत्री केबी सहाय और महामाया प्रसाद जैसी शख्सियत भी गर्दनीबाग ठाकुरबाड़ी में चित्रगुप्त पूजा के लिए आते थे। प्रो. नंदन ने बताया कि इस बार तीन नवंबर को सुबह 9 बजे से पूजन एवं हवन होगा, जो दोपहर 12 बजे तक चलेगा। इसके बाद प्रसाद वितरण दोपहर 12.30 बजे से शाम 5 बजे तक चलेगा। जबकि सामाजिक समरसता प्रीतिभोज का आयोजन दोपहर 1.30 बजे के बाद आयोजन किया जाएगा। बता दें कि गर्दनीबाग ठाकुरबाड़ी के अध्यक्ष प्रो. रणबीर नंदन हैं, जबकि उपाध्यक्ष डॉ. संजीव कुमार, डॉ. प्रवीण कुमार सिन्हा, डॉ. डीएन सिन्हा, डॉ. एसबी लाल उपाध्यक्ष हैं। आईएएस आशुतोष कुमार वर्मा सचिव, उदय सहाय मुख्य संयोजक, संतोष कुमार कोषाध्यक्ष, शिवम सिद्धार्थ सह-कोषाध्यक्ष, सह सचिव डॉ. सुकृत प्रकाश, मुरली मनोहर श्रीवास्तव, मनीष कुमार सिन्हा, सह संयोजक डॉ. पूनम रमण, अमर कुमार सिन्हा, अमृतांशु शेखर हैं।

भूमि सर्वेक्षण : सरकारी अमीनों के काम की होगी जांच

मापी की संख्या से राजस्व एवं भूमि सुधार विभाग खुश नहीं

- विभाग के अपर मुख्य सचिव ने की समीक्षा बैठक, दिए निर्देश

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

बिहार के सरकारी अमीनों के कार्यों की जांच होगी। राजस्व एवं भूमि सुधार विभाग अमीनों के काम से खुश नहीं है। लिहाजा यह निर्णय लिया गया है। राजस्व एवं भूमि सुधार विभाग के अपर मुख्य सचिव दीपक कुमार सिंह ने शुक्रवार को राजस्व संबंधी विषयों की समीक्षा की। बैठक में विभाग के सचिव जय सिंह समेत सभी वरीय पदाधिकारी उपस्थित रहे। बैठक में पाया गया कि ई-मापी का डिस्पोजल रेट बढ़ा है लेकिन उसे और बढ़ाने की जरूरत है। बैठक में निर्णय लिया गया कि सभी अमीनों द्वारा किए जा रहे कामों की जांच की जाएगी। वो तय मापदंडों एवं विभागीय दिशा निदेशों के अनुरूप काम कर रहे हैं या नहीं ? अमीनों द्वारा की जा रही मापी की संख्या से भी विभाग खुश नहीं है, विभाग चाहता है कि इसमें और वृद्धि हो।

अमीन हर महीने कितनी नापी करते हैं,विभाग ले रहा जानकारी :

राजस्व एवं भूमि सुधार विभाग के अपर मुख्य सचिव ने कहा रिजेक्ट किए गए आवेदनों में से सैंपल लेकर चेक करने की आवश्यकता है कि रिजेक्शन का आधार सही है या नहीं।ऑनलाइन आए रहे आवेदनों में बड़ी संख्या में आवेदन अंचल स्तर पर अस्वीकृत किए जा रहे हैं। अबतक प्राप्त आवेदनों में से एक चौथाइ आवेदनों के अस्वीकृत होने के कारण यह निर्णय लिया गया है। बैठक में यह निदेश भी दिया गया कि जिलावार अमीनों के कार्यों का आउटपुट निकाला जाए ताकि यह पता चल सके कि एक अमीन द्वारा एक महीने में औसतन कितनी मापी की जा रही है। विभाग के आईटी सेक्शन को कहा गया कि ई-मापी पोर्टल पर यह सूचना डाले कि रैयत मापी में अपना मोबाइल नंबर डालें, साइबर कैफे का नहीं ताकि सही सूचना और जानकारी उनतक पहुंच सके। ऐसा नहीं होने पर ढेर सारी जरूरी सूचनाएं उन तक नहीं पहुंच पा रही हैं।

भागलपुर जिले में ऑवलाईन मापी के सबसे ज्यादा आवेदन लंबित :

समीक्षा में पाया गया कि अबतक ई-मापी के कुल 86500 आवेदन प्राप्त हुए हैं। इनमें से 40 हजार से अधिक आवेदकों ने ऑनलाइन तरीके से सरकार के खाते में भुगतान किया।जिन लोगों ने ऑनलाइन तरीके से भुगतान किया है उनमें से 38 हजार से अधिक आवेदकों को मापी की तारीख ऑनलाइन मिल चुकी है। जिन रैयतों ने ऑनलाइन तरीके से मापी कराई है उनमें से 22274 मापी प्रतिवेदन को आवेदक के पास ऑनलाइन तरीके से भेज दिया गया है, अन्य को भी भेजा जा रहा है। कई आवेदन अंचल अधिकारी के स्तर पर अनुमोदन पर लंबित हैं जिन्हें शीघ्र भेजने का निदेश आज की बैठक में दिया गया है। जिन जिलों में मापी हेतु आवेदन सर्वाधिक संख्या में आए हैं उनके नाम हैं भागलपुर- 5084, पूर्णिया- 5080 और मुजफ्फरपुर- 5008, जबकि वो जिले जिनमें ऑनलाइन आवेदनों की संख्या कम है, उनके नाम हैं अरवल- 563, शेखपुरा- 668 एवं जहानाबाद- 732।

स्वच्छ सर्वेक्षण के विशेष प्रयोग में शामिल 15 शहरों में पटना चयनित

- केंद्रीय टीम द्वारा पटना नगर निगम के बेहतरीन कार्यों का किया गया सर्वे

पटना। स्वच्छ सर्वेक्षण के लिए विशेष प्रयोग करने वाले 15 शहरों में पटना नगर निगम को चयनित किया गया है। केन्द्रीय आवासन एवं शहरी विकास मंत्रालय द्वारा 15 चुने हुए शहरों का सर्वे कराया गया। स्वच्छ सर्वेक्षण 2023 में अपनी रैंकिंग में विशेष सुधार करने वाले शहरों को इसमें चुना गया। क्रेन्द्रीय टीम द्वारा पटना नगर निगम के प्रयोगों की जानकारी ली गई। टीम द्वारा शहर का दौरा किया गया जिसमें एमआरएफ सेंटर, एसटीपी प्लांट, कमांड एंड कंट्रोल सेंटर का निरीक्षण किया गया। पटना नगर निगम के प्रयोग एवं बेस्ट प्रैक्टिस को वीडियो एवं डॉक्यूमेंट्री भी की गई है। जिससे अन्य शहरों को इस तरह के प्रयोग करने के लिए प्रेरित किया जा सके।

ये शहर हुए है चिन्हित :

विशेष प्रयोग करने वाले शहरों में नवी मुंबई, सूरत, पाटन, लोनावला, प्रयागराज जैसे शहर शामिल है। बिहार में सिर्फ पटना को इसके लिए चयनित किया गया।

बिहार सरकार

कार्यपालक अभियंता का कार्यालय
पटना भवन प्रमंडल, भवन निर्माण विभाग
बुद्धमार्ग, पटना–800001
(ee.patna.bcd@gmail.com)

आवश्यक सूचना

इस कार्यालय द्वारा आमंत्रित ई0–निविदा आमंत्रण सूचना संख्या –09/2024–25, जिसका पत्रांक 3319 दिनांक 21.09.2024 है, जिसका पी0आर0 संख्या–008900(BCD)2024–25 है, ई0–निविदा आमंत्रण सूचना संख्या –10/2024–25, जिसका पत्रांक 3322 दिनांक 23.09.2024 है, जिसका पी0आर0 संख्या–008888(BCD)2024–25 है, ई0–निविदा आमंत्रण सूचना संख्या –11/2024–25, जिसका पत्रांक 3397 दिनांक 26.09.2024 है, जिसका पी0आर0 संख्या–009350(BCD)2024–25 है एवं ई0–निविदा आमंत्रण सूचना संख्या –12/2024–25, जिसका पत्रांक 3398 दिनांक 26.09.2024 है, जिसका पी0आर0 संख्या–009338(BCD)2024–25 है, के सभी अंकित कार्यो को अपरिहार्य कारणवश रद्द/निरस्त किया जाता है।

कार्यपालक अभियंता
पटना भवन प्रमंडल, पटना

PR. No. 011282 (BCD) 2024-25

विस्तृत जानकारी www.state.bihar.gov.in/prdbihar से प्राप्त की जा सकती है।

नशे से बचने का है एक ही उपचार, दृढ़ संकल्प और परिवार से प्यार।

संक्षिप्त खबरें

डॉ ज्वाला चंद्र चौधरी एमटीसी ग्लोबल इंस्पायरिंग टीचर अवार्ड से सम्मानित

दरभंगा। एम.एल.एस.एम. कॉलेज दरभंगा के हिंदी विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ ज्वाला चंद्र चौधरी को एमटीसी ग्लोबल की ओर से एमटीसी ग्लोबल इंस्पायरिंग टीचर अवार्ड 2024 से विभूषित किया गया है। इस उपलक्ष्य में आज 25-10-2024 को मानविकी संकाय कक्ष में महाविद्यालय के हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ तीर्थनाथ मिश्र ने डॉ.चौधरी को विभाग की ओर से सम्मानित किया और उनके यशस्वी जीवन की कामना की। इस मौके पर हिंदी विभाग के वरिष्ठ प्राचार्य डॉ सतीश कुमार सिंह, डॉ मीना कुमारी, डॉ सुप्रिता शालिनी, डॉ संगीता कुमारी, डॉ माला कुमारी, संस्कृत विभागाध्यक्ष डॉ विनय कुमार झा, मैथिली विभागाध्यक्ष डॉ मीनू कुमारी, डॉ भवनाथ झा आदि ने डॉ.चौधरी को बधाई दी।

पर्यावरण मंच की बैठक में पौधरोपण का निर्णय

दरभंगा।संस्कृत विश्वविद्यालय में अध्यक्ष छात्र कल्याण सह प्रभारी कुलपति डॉ शिवलोचन झा की अध्यक्षता में आईक्यूएसी के तत्वावधान में पर्यावरण मन्च की पहली बैठक डीन कार्यालय में आयोजित की गई। बैठक में मूल रूप से कैम्पस को हरा भरा करने तथा वृहत पैमाने पर पौधरोपण करने पर विचार किय गया। इसी क्रम में निर्णय लिया कि नवम्बर माह के दूसरे सप्ताह में सभी पदाधिकारियों एवं स्नातकोत्तर के सभी शिक्षकों से प्रतिव्यक्ति एक हजार एक रुपये बतौर सहयोग राशि ली जाएगी और पौधरोपण किया जाएगा। उक्त जानकारी देते हुए पीआरओ निशिकान्त ने बताया कि नीम, बेल, जामुन, रुद्राक्ष, लीची, कटहल समेत अन्य फलदार पौधों को रोपने में प्राथमिकता दी जाएगी। साथ ही चौथे सप्ताह में ऑन लाईन व्याख्यान का भी आयोजन किया जाएगा। वहीं, पर्यावरण मंच के अध्यक्ष भूसंपदा पदाधिकारी डॉ उमेश झा ने कहा कि पर्यावरण संरक्षण बेहद जरुरी है। इसलिए व्यापक पैमाने पर पौधरोपण की तैयारी चल रही है। बैठक में संयोजक डॉ. धीरज कुमार पाण्डेय, सचिव राजेश कुमार, सह सचिव विश्वमोहन झा समेत अन्य पदाधिकारी उपस्थित थे।

विवाहिता को प्रताड़ित करने वाला आरोपी गिरफ्तार

मधुबनी झंझारपुर थाना क्षेत्र के एक गांव में एक विवाहिता के साथ मानसिक व शारीरिक प्रताड़ना के आरोप में युवक को गिरफ्तार कर न्यायिक हिरासत में भेजा गया है। गिरफ्तार युवक कमाल पमरिया उमर करीब 35 वर्षीय पुत्र जमाल पमरिया उर्फ कारी को न्यायिक हिरासत में भेजा गया है। पीड़ित महिला के आवेदन पर अनुसूचित जाति जनजाति एक्ट के अलावा शारीरिक मानसिक प्रताड़ना गालीगलौज करने की धाराओ में प्राथमिकी दर्ज कीया गया है दर्ज प्राथमिकी में कहा गया है कि घटना के दिन शाम में वो अपने घर जा रहे थे। ब्रह्म स्थान के पास आरोपी युवक पीछा करने लगा। बाद में जबरन मुंह पर कपड़ा रखकर गाछी में ले गया और चाकू दिखा रहा था। जब उसको बोले कि पहचान गए है तो उसने कहा किसी को बताओगे तो जान से मार देगे। फिर वहां से भाग गया। दूसरे दिन अपने कुछ ग्रामीणो के साथ उलाहना देने उसके घर गए तो जातिसूचक शब्द बोलकर गाली बकने लगा। मेरे शरीर पर झूठा चाय फेकने के साथ मछली का रस भी डाल दिया था।

डीएलसीसी की बैठक में जिलाधिकारी ने निर्धारित लक्ष्य को पूर्ण करने का दिया निर्देश

प्रात : किरण संवाददाता

दरभंगा। डॉ.भीमराव अम्बेडकर सभागार में जिलाधिकारी राजीव रौशन की अध्यक्षता में जिला स्तरीय परामर्शदात्री,समीक्षा समिति की बैठक आयोजित की गई। बैठक में एल डी एम. राज नंदनी ने पी.एम.ई.जी.पी. एवं पी.एम.एफ.एम.ई. आदि के संबंध में पावर प्वाइंट के माध्यम से जिलाधिकारी महोदय को अवगत कराई बैठक में जिलाधिकारी ने सभी बैंकों का सीडी रेशियो का जानकारी लिया और सीडी रेशियो को बढ़ाने के निर्देश दिए । उन्होंने कहा कि आम लोगों के समस्या का समाधान करें। ऋण लेने वालों को कोई समस्या न हो यह सुनिश्चित करें। जिलाधिकारी ने कहा कि माननीय केंद्रीय वित्त मंत्री का दरभंगा जिला आगमन संभावित है,को लेकर सभी बैंक अपना लक्ष्य को स-समय पूरा करें। जिलाधिकारी ने सभी बैंक के बैंक मैनेजर को ठगी फ्रॉड पर नजर रखने के निर्देश दिए साथ ही जिला प्रशासन को सूचना देने को कहा।बैठक में बताया गया कि कृषि क्षेत्र में वार्षिक लक्ष्य 361491 लाख के विरुद्ध जून 2024 तिमाही की उपलब्धि 39284.85 रुपये लाख है जो कृषि क्षेत्र के लक्ष्य का 10.87 प्रतिशत है।साख जमा अनुपात जून 2024 में जिले का साख जमा अनुपात 51.69 प्रतिशत है।स्वयं सहायता समूह जीविका जून 2024 तक तिमाही विभिन्न बैंक द्वारा 2413 एसएचजी में क्रेडिट लिंकेज किए गए हैं। 530 आवेदन अभी भी बैंक शाखाओं में वितरण के लिए लंबित है तथा लंबित आवेदन को निष्पादन करने के निर्देश दिए। किसानों की आमदनी दोगुनी करने के लिए नाबार्ड एवं योजना निदेशक आत्मा द्वारा कहा गया कि प्रशिक्षण प्राप्त लोगों द्वारा वर्मी कंपोस्ट, मशरूम की खेती, सब्जी की खेती, फूल की खेती, केला, लीची की खेती, मुर्गी पालन,हेचरी, मछली पालन,गाय पालन आदि क्षेत्रों में खेती को बढ़ावा दिया जाए तथा एफपीओ और एईएफ योजनाओं को सफल की जाए तो किसानों की आय में वृद्धि होगी। आर.सेटी के माध्यम से डायरी,वर्मी कंपोस्ट, मशरूम उत्पादन, सिलाई, कढ़ाई, ब्यूटी पार्लर आदि के लिए प्रशिक्षण दिए जाते हैं,जून 2024 तिमाही तक 305 युवक,युवतियों को प्रशिक्षण दिया गया है।माइनॉरिटी कम्युनिटी वेलफेयर के तहत देश के 121 जिले में से सात जिले बिहार के आते हैं,उस सात जिले में दरभंगा भी एक है। जून 2024 तिमाही तक कुल प्राथमिकता क्षेत्र में 5,14,015 लाख रुपए ऋण दिया गया है, जिसमें माइनॉरिटी कम्युनिटी के 59840 लाख का ऋण दिया गया है।बैठक में सभी बैंकों को निर्देश दिया गया कि प्रत्येक बैंक समन्वयक,क्षेत्रीय प्रबंधक महीने में कम से कम एक बार आरसेटी का भ्रमण कर योग प्रशिक्षणार्थियों को ऋण आवेदन स्वीकृत कर आत्मनिर्भर बनाने में मदद कर, प्रधानमंत्री के आत्मनिर्भर भारत के सपनों को साकार करें, जिससे जिले का कृषि एवं एमएसएमई क्षेत्र के ऋण प्रवाह में उत्तरोत्तर वृद्धि हो सके।

बैठक में नगर आयुक्त राकेश कुमार गुप्ता,अपर समाहर्ता नीरज कुमार दास, उपनिदेशक जनसंपर्क सत्येंद्र प्रसाद, भारतीय रिर्जव बैंक के प्रतिनिधि मलया रंजन के साथ-साथ आदि पदाधिकारीगण उपस्थित थे।

भाजपा सदस्यता अभियान पार्टी के साथ ही राष्ट्र निर्माण का संकल्प है : अश्वनी यादव

प्रात : किरण संवाददाता

दरभंगा।भाजपा सदस्यता अभियान न केवल एक पार्टी का विस्तार है बल्कि राष्ट्र निर्माण का संकल्प है ।उक्त बात भाजपा किसान मोर्चा के प्रदेश प्रवक्ता सह अलीनगर विधानसभा प्रभारी अश्वनी यादव ने बहेड़ी प्रखंड एवं हायाघाट प्रखंड अंतर्गत ददरबारा , पेठिया गाछी मठ , डुमरी एवं हरहच्चा पंचायत के हरहच्चा गांव में पूर्व मुखिया शुभास चंद्र सिंह के आवास पर भाजपा का सर्वव्यापी संगठन पर्व सदस्यता अभियान के दौरान कही।अश्वनी यादव ने उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि भाजपा एकमात्र ऐसी पार्टी है, जो संपूर्ण लोकतांत्रिक प्रक्रिया से चलती है, इसके तहत छह वर्षों में पुराने सदस्य भी नये सदस्यों के साथ पुनः सदस्यता ग्रहण करते हैं।वहीं जिला प्रवक्ता शिवशंकर सिंह ने केंद्र व राज्य सरकार के द्वारा चलाए जा रहे जनकल्याणकारी योजनाओं के बारे में वहां उपस्थित आम लोगों को अवगत कराया, ओर भाजपा की सदस्यता ग्रहण कराया। मौके पर शुभास चंद्र सिंह जी को भाजपा का सदस्यता ग्रहण कराया गया। वहीं सैकड़ों की संख्या में आमलोगों को भाजपा का सदस्यता ग्रहण कराया गया।मौके पर शुभास चंद्र सिंह ने कहा आज हमने भाजपा का सदस्यता ग्रहण की , आज से हम भाजपा के लिए सक्रिय होकर काम करेंगे मौके पर किसान मोर्चा के जिला मंत्री पंकज सिंह,बिनोद सिंह,मंडल महामंत्री दीपक झा, केशव सहनी आशुतोष सिंह , नुनु यादव मदन सिंह , कमलेश यादव , दुखी पासवान, घुरन दास , ओमप्रकाश शर्मा वासुदेव यादव एवं ऊजार्वान कार्यकर्तागण उपस्थिति थे।

देवर ने भाभी को धारदार हथियार से हमला कर सर को धार से किया अलग, पुलिस ने किया गिरफ्तार

प्रात : किरण संवाददाता

अलीनगर(दरभंगा)।अलीनगर विधानसभा के तारडीह प्रखंड अंतर्गत महथौर में एक सनकी देवर (मुनेश्वर दास) ने मंगलवार को अपनी भाभी (समौला देवी) जब खेत में बकरी चरा रही थी, उसी दरमियान मुनेश्वर दास ने सुमौला देवी के ऊपर धारदार हथियार से वार कर सिर को धर से अलग कर दिया। जहां उनकी मौके पर ही मौत हो गई। जिसके बाद पुलिस ने मुनेश्वर दास को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है। इस घटना से पूरे विधानसभा में शोक का मातम पसरा हुआ है। इसी बीच शुक्रवार को किसान मोर्चा के जिला अध्यक्ष संजय सिंह उर्फ पप्पू सिंह मौके पर पहुंचकर पीड़ित परिवार से मिलकर शोक संवेदनाएं प्रकट की। उन्होंने इस बाबत बताया कि मृतक के पति पिछले 12 साल पहले घर द्वार छोड़ कहीं चले गए, जिसके बाद लौटे नहीं। मुश्किल हालात में उन्होंने तीन बच्चें का भली भांति भरण पोषण किया। जिसमें कुछ साल पहले अपनी लड़की का शादी भी की। उनके लड़के शहर में मेहनत मजदूरी कर अपने मां को पैसा भेजता था। दोनों लड़के के ऊपर से पिता का साया तो पहले ही उठ चुका था लेकिन सनकी चाचा मुनेश्वर दास ने मां का साया भी छीन लिया है। उन्होंने आगे कहा कि मैं पुलिस प्रशासन से अपील करता हूं कि ऐसे सनकी मानसिक प्रवृत्ति के लोग समाज के लिए सही नहीं है और ऐसे लोगों को कानूनी तौर पर कड़ी से कड़ी सजा मिलनी चाहिए, ताकि इस तरह की जुर्म करने से पहले अपराधी को भय हो। उन्होंने मृतक के दोनों लड़के राजा दास (17) और सुबोध दास (15) को ढांढस बंधाते हुए एक बड़े भाई के तौर पर हर संभव मदद का भरोसा दिलाया। इस दौरान जिला अध्यक्ष जी ने ईश्वर से मृतक के आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की। इस गमगीन मौके पर किसान मोर्चा के महामंत्री सुजीत चौधरी, किसान मोर्चा के मंत्री अश्विनी जी, मुखिया रामकरण दास, विजय सिंह, गंगा यादव, बजरंगी दास, रामशरण दास आदि लोगों ने भावुक होकर श्रद्धांजलि अर्पित की।

दिवाली में मिट्टी का दीया जलाना स्वास्थ्य और पर्यावरण के लिए बेहतर विकल्प : प्रो. गौरी शंकर

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई:- दीपावली में मिट्टी के दीयों का उपयोग और इसके महत्व पर केकेएम कॉलेज में एक परिचर्चा की गई, जिसकी अध्यक्षता स्नातकोत्तर अर्थशास्त्र विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. गौरी शंकर पासवान ने की। अध्यक्षीय प्रबोधन में डॉ.पासवान ने कहा कि मिट्टी के दीए का प्रयोग प्राचीन सिंधु घाटी सभ्यता और वैदिक काल में शुरू हुआ था। यह प्राचीन कालीन परंपरा है। मिट्टी का दीया जलाना स्वास्थ्य और पर्यावरण के लिए बेहतर विकल्प है। दिवाली में मिट्टी के दिए से घर रोशन करना आज की आवश्यकता है. यदि घी, सरसों और तिल के तेल से मिट्टी के दीए जलाएं तो सोना में सुहागा है.क्योंकि इसके अनेक फायदे हैं. मिट्टी का दीया जलाना तथा पर्यावरण संरक्षण करना वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिक है। इसका उद्देश्य स्थानीय कारीगरों (कुम्हारों) पारंपरिक हस्तकला जीवित करना तथा प्रदूषण मुक्त वातावरण बनाना है. मिट्टी के दिए की मांग बढ़ने से इन कारीगरों को आर्थिक सहायता मिलती है,और उनके व्यवसाय को पुनर्जीवन मिलता है। मिट्टी का दीया स्थानीय शिल्पकारों के लिए आर्थिक संबल का साधन है। कुम्हार सदियों से मिट्टी के दीए बनाते आए हैं, लेकिन आधुनिक समय में प्लास्टिक और अन्य सजावटी सामग्रियों की बाढ़ सी आ गई है. इससे शिल्पकारों की आजीविका पर संकट घिर गए है. प्रभात खबर की यह अपील हमें स्मरण कराती है कि दिवाली केवल एक पर्व ही नहीं, बल्कि एक परंपरा भी है, जो सदियों से चली आ रही है.। उन्होंने कहा कि दिवाली में मिट्टी के दिए का इस्तेमाल सामाजिक धार्मिक और सांस्कृतिक आवश्यकता ही नहीं, बल्कि एक पर्यावरणीय जिम्मेदारी है. दीपावली में मिट्टी के दीए जलाना वाकई में अंधकार पर प्रकाश, बुराई पर अच्छाई और निराशा पर आशा की जीत का उत्सव है.मिट्टी के दीयों से अपना घर रोशन करें,और इसे सच्चे अर्थों में प्रदूषण मुक्त, समृद्धि एवं इको फ्रेंडली पर्व मनाएं. विडंबना है कि अब मिट्टी की सोंधी महक नहीं आती. मतलब मिट्टी निर्मित दीए तथा अन्य सामग्रियों का व्यवसाय विलुप्ति के कगार पर है। अतः नागरिकों से अपील है कि बिजली के लाइट और चाइनीज इलेक्ट्रिक सामग्रियों के बजाय पारम्परिक, देसी और शुद्ध दीए व सामग्रियों का प्रयोग करें। कहा गया है कि मिट्टी के दीए जलाते चलो, संवेदनाओं के लौ जलाते चलो। हर अंधेरा एक दिन सिमटेगा,सपनों का हकीकत बनाते चलो। हर रोशनी एक उम्मीद है,आशा के दीप जलाते चलो। हिंदी के विभागाध्यक्ष प्रो. कैलाश पंडित ने कहा कि मिट्टी के दीए स्वाभिमान के प्रतीक होते हैं. मिट्टी के दीए जलाएं और पर्यावरण को बचाएं. कहते हैं कि - दीप जले पर धुआं न हो, प्रकृति से कोई गिला न हो. कम धुआं ज्यादा उजियारा यही हो हमारा नारा। मिट्टी के दीए जलाने से ऑक्सीजन का स्तर बढ़ता है. घी सरसों और तिल के तेलयुक्त दीए जलाने पर उससे निकलने वाले धुएं से मच्छर और अन्य कीट दूर हो जाते हैं. यह शुद्धता और समृद्धि का प्रतीक भी है. ये पर्यावरण के अनुकूल होते. मिट्टी के दीए जलाना प्राचीन परंपरा है।

प्रखंड विकास पदाधिकारी राजीव रंजन के अध्यक्षता मे बैठक आयोजित

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी जयनगर सामुदायिक प्रशिक्षण भवन के सभा कक्ष में प्रखंड विकास पदाधिकारी राजीव रंजन के अध्यक्षता मे एक बैठक किया गया। बैठक में पंचायती राज विभाग एवं स्वच्छता कार्यालय के कमीयो ने भाग लिया। बैठक के दौरान सभी पंचायत सचिव तकनीकी सहायक एवं लेखापाल को निर्देश दिया गया कि सभी पंचायतों में स्वच्छता से संबंधित सभी सामग्री का खरीदारी कराकर सभी का भुगतान करने हेतु आवश्यक निर्देश दिया गया। साथ ही सभी पंचायत सचिव को निर्देश दिया गया कि प्रत्येक पंचायत के सभी वार्ड में कचड़ा उठाव प्रतिदिन कराने का भी निर्देश दिया गया। प्रखंड समन्वयक को निर्देश दिया गया कि सभी पंचायतो के स्वच्छता पर्यवेक्षक से समन्वय स्थापित कर प्रति महीना 30 रुपैया का स्वच्छता शुल्क वसूली कराने को ले कर दिशा निर्देश दिया गया। वही देवधा दक्षिण पंचायत के पंचायत सचिव तकनीकी सहायक लेखापाल को निर्देश दिया गया कि देवधा दक्षिण पंचायत में प्रखंड स्तर पर प्लास्टिक अवशिष्ट प्रसंस्करण इकाई का निर्माण किया जाना है। जिसमे 15 दिनो के अंदर चाहरदीवारी का निर्माण कराने को निर्देश दिया गया। प्रखंड समन्वयक सभी पंचायतो में सामुदायिक शौचालय निर्माण कराने हेतु अनापत्ति प्रमाण पत्र के लिए कार्य करने व सामाजिक सुरक्षा कार्य करने को ले कमीयो को निर्देश दिया गया । सभी लाभार्थी यो का कार्य भी ससमय निष्पादित करने को ले पंचायत कार्यपालक सहायक को निर्देश दिया गया की प्रतिदिन अपने अपने पंचायत में उपस्थित होकर आम जनो का सभी कार्य ससमय निष्पादित करे। पंचायती राज विभाग के सभी क्रियान्वयन योजनाओ का समय से कार्य पूर्ण कराने को ले भी दिशा निर्देश दिया गया।

छठ पूज एवं पांच दिवसीय महावीरी झंडोत्सव की तैयारी जोरों पर

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी बेनीपट्टी प्रखंड क्षेत्र के पश्चिमी भू भाग के ऐतिहासिक बसैठ लोहा पुल छठ घाट पर श्री सनातन धर्म सेवा समिति बसैठ के तत्वावधान में आयोजित होने वाले चार दिवसीय छठ पूजनोत्सव एवं पांच दिवसीय महावीरी झंडोत्सव की तैयारी जोरों पर चल रहा है। इस संबंध में श्री सनातन धर्म सेवा समिति बसैठ के अध्यक्ष रविशंकर साह सचिव बलदेव ठाकुर कोषाध्यक्ष भोगेंद्र साह उपाध्यक्ष मदन दास उपसचिव नीलांबर कुमार गुप्ता कुशेश्वर ठाकुर महामंत्री साजन लाल दास पीतांबर यादव आदि ने बताया कि लोहा पुल छठ घाट पर इस साल की छठ पूजा में भगवान सूर्यदेव सहित अन्य देवी-देवताओ की मूर्तियो के संख्या जहां दोगुनी होगी तो वही गेट व पंडाल का विस्तारीकरण किया जाएगा। इस बार छठ घाट का लंबाई भी पहले के मुकाबले दोगुनी होगा। छठ पूजा से लेकर महावीरी झंडोत्सव तक कुल कार्यक्रम 9 दिनो का होगा। वही 5 से 8 नवंबर तक चार दिवसीय छठ पूजनोत्सव होगा। 5 नवंबर को नहाय खाय के दिन छठ पूजा का शुरूआत कन्याओ का विशाल कलश शोभा यात्रा के साथ होगा। इसके बाद 9 नवंबर को परना के दिन से 5 दिवसीय महावीरी झंडोत्सव होगा। इस दौरान विशाल मेला का आयोजन भी होगा। 13 नवंबर को महावीरी झंडोत्सव के अंतिम दिन रावण वध कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा।

शराब माफिया को पुलिस ने शराब के साथ किया गिरफ्तार

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी रहिका थाना पुलिस ने एक बड़ी कार्रवाई में दो सहोदर भाइयो को शराब कारोबार के आरोप में गिरफ्तार किया है। पुलिस ने उनके पास से 30 लीटर विदेशी और देशी शराब बरामद की है पुलिस को गुप्त सूचना मिली थी कि ग्राम सप्ता में योगेंद्र महतो के पुत्र प्रदीप महतो और रंजीत महतो घर में शराब खरीद बिक्री का कार्य करते है। सूचना की सत्यापन करने के बाद पुलिस ने घेराबंदी कर दोनो भाइयों को गिरफ्तार कर लिया।रहिका थानाध्यक्ष रविन्द्र कुमार ने बताया कि यह कार्रवाई शराब माफिया के खिलाफ पुलिस की जीरो टॉलरेस नीति का हिस्सा है। उन्होंने कहा कि पुलिस शराब माफिया के खिलाफ लगातार कार्रवाई कर रही है और ऐसे तत्वो को बख्शा नही जाएगा।गिरफ्तार दोनो व्यक्तियो के विरुद्ध उत्पाद मध्य निषेध अधिनियम के अंतर्गत प्राथमिकी दर्ज की गई है। उन्हे न्यायिक हिरासत में लेने के लिए व्यवहार न्यायालय मधुबनी भेज दिया गया जहां माननीय न्यायालय द्वारा अग्रिम कार्रवाई करते हुए कारा मंडल रामपट्टी भेज दिया गया।पुलिस की अपील पुलिस ने लोगो से अपील की है कि वे शराब माफिया के खिलाफ सूचना देने में सहयोग करे। पुलिस ने आश्वासन दिया है कि सूचना देने वालो की पहचान गुप्त रखी जाएगी।

छठ पर्व को लेकर अनुमण्डल प्रशासन ने निरीक्षण किया

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी जयनगर अनुमण्डल क्षेत्र के शहरी और ग्रामीण क्षेत्रो में होने वाले लोक आस्था का महापर्व छठ पर्व को लेकर विधि व्यवस्था एवं छठ व्रतियो आम जन श्रद्धालुओ के लिए सुविधाएं हेतू एसडीएम वीरेंद्र कुमार डीएसपी विप्लव कुमार के नेतृत्व में प्रखण्ड प्रशासन व नगरपंचायत और पुलिस प्रशासन एवं कमिटियों के साथ शुक्रवार को अनुमण्डल मुख्यालय स्थित कमला नदी के वाटर वेज कमला पुल काली मंदिर कबीर कुटी मुकरी टोल समेत कमला नदी के कई घाटों का छठ पूजा को लेकर घाटों का निरीक्षण कर जायजा लिया। एसडीएम वीरेंद्र कुमार और डीएसपी विप्लव कुमार ने बताया कि छठ पर्व को लेकर विधि व्यवस्था व घाटो के साफ सफाई और रौशनी की व्यवस्था एवं छठ व्रतियो श्रद्धालुओ आम लोगो के लिए सुविधाओ को लेकर नगरपंचायत प्रशासन व कमिटियो को कई आवश्यक दिशा निर्देश दिये गये है। छठ पूजा समितियो को छठ घाटो पर सीसीटीवी लगाने महिलाओ के लिये चेजिग रूम बनाने यूनिरल पे जल की व्यवस्था मेडिकल किट रखने और लाईट प्रकाश की व्यवस्था करने ध्वनि विस्तारक यंत्र दिशा निर्देश मानक को अपनाते हुए लगाने वाच टावरो का निर्माण कराने नदी में घाटो के समीप गहरे पानी मे लाल कपड़ा ब्रेकेटिंग मजबूत रस्सी लगाने एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजन को विस्तृत जानकारी देने घाटो पर वोलियेन्टर की तैनाती रखने स्वयं सेवक गणवेश में या बैच लगा कर छठ व्रतियों श्रद्धालुओं की सेवा करने लोकल गोताखोर रखने समेत कई आवश्यक दिशा निर्देश दिये गये। प्रशासन की ओर से घाटो पर कंट्रोल रूम बनेगे मजिस्ट्रेट पुलिस बल और महिला पुलिस बल सादे लिवास में प्रशासन की टीम मेडिकल टीम एसडीआरएफ की टीम की तैनाती रहेगी एवं पुलिस गस्ती दल घाटों आसपास के क्षेत्रो में गश्त लगाते रहेंगे। विधुत विभाग को भी बिजली को लेकर कई दिशा निर्देश दिये जाएंगे ।अनुमंडल अस्पताल के द्वारा छठ घाटो पर मेडिकल टीम औ स्वास्थ्य कर्मी मेडिकल किट के साथ तैनाती करने के लिये भी निर्देश दिये गये है। बाजार और क्षेत्र मे पुलिस पदाधिकारी और जवान गस्त लगाते रहेगे। छठ घाटों पर प्रशिक्षण गोताखोरो और एसडीआरएफ की टीम भी मौजूद रहेगी। पुलिस प्रशासन को भी विशेष दिशा निर्देश दिए गए है साथ ही विधि व्यवस्था बनाये रखने में सभी सहयोग की अपील की गई है। अफवाह फैलाने वाले असामाजिक तत्वो पर पैनी नजर रखी जा रही है किसी भी प्रकार की विधि व्यवस्था भंग करने वाले पर निश्चित रूप से चिन्हित कर कार्रवाई की जाएगी। वही मुख्य पार्षद कैलाश पासवान ने कहा कि विभाग के दिशा निर्देश व गाईड लाईन के तहत व नगरपंचायत प्रशासन के द्वारा छठ व्रतियो और श्रद्धालुओ की सुविधाओ को ले कमला नदी के छठ घाटो और आसपास के क्षेत्रो की साफ सफाई कराई जाएगी ।

नगर परिषद बेनीपुर में भ्रष्टाचार के विरुद्ध एमएसयू का धरना प्रदर्शन

प्रात : किरण संवाददाता

बेनीपुर(दरभंगा)। बेनीपुर नगर परिषद कार्यालय समक्ष मिथिला स्टूडेंट यूनियन के कार्यकताओं ने नगर अध्यक्ष संतोष साहू एवं प्रखंड अध्यक्ष गौतम झा के नेतृत्व में किया प्रदर्शन। कार्यालय के बाहर घंटो तक मुखपार्षद का घेराव किया गया । धरना को संबोधित करते हुए नगर अध्यक्ष संतोष साहू प्रखंड अध्यक्ष गौतम झा ने कहा पिछले दो वर्षों से नप० क्षेत्र में कोई भी कार्य नहीं हो सका लगातार हमलोगों द्वारा कार्यालय में आवेदन दिया गया लेकिन संतोषजनक जवाब देने में कार्यालय असमर्थ है। एनजीओ के द्वारा क्षेत्र में सफाई का काम ढंग से नहीं करवाया जाता है एनजीओ और मुख्यपार्षद आपस में मिलीभगत कर लाखों का लूट मचा रखे हैं अभी तक एनजीओ के विरोध में कई आवेदन कार्यालय को दिया गया लेकिन उस पर आजतक कोई कारवाई नही हुआ।पिछले साल छठ पूजा के नाम पर कार्यालय द्वारा लूट तो मचाया ही गया था इस बार भी धर्म के नाम पर लूटने की तैयारी चल रहा है लेकिन ऐसा हमलोग होने नही देंगे। धरना को संबोधित करते हुए छात्र नेता दीपक डायना ,दिलीप कुमार ,सुधीर कुमार ने कहा नगर परिषद बेनीपुर भ्रष्टाचार के जंजाल में फंसा हूआ है मुख्यपार्षद और उनके कुछ सहयोगी आपस में कमीशन के बंदरबांट का खेल खेलरहा है।

जन शिकायतों को सर्वोच्च प्राथमिकता में रखकर त्वरित निष्पादन

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी जिलाधिकारी अरविन्द कुमार वर्मा के द्वारा शुक्रवार को समाहरणालय स्थित अपने कार्यालय कक्ष में आयोजित जनता के दरबार में जिलाधिकारी कार्यक्रम में जिले के सुदूर क्षेत्रो से आए हुए परिवादियो से मुलाकात कर उनकी शिकायतों को सुनते हुए संबंधित अधिकारियों को त्वरित निष्पादन का निर्देश दिया गया ।गौरतलब हो कि प्रत्येक सप्ताह शुक्रवार को जनता दरबार में जिलाधिकारी कार्यक्रम के आयोजन के मौके पर जिलाधिकारी सभी परिवादियों से मुलाकात करते हैं और उनकी शिकायतों के निपटारे के लिए संबंधित अधिकारियो को निर्देश भी देते है इस परिप्रेक्ष्य में शुक्रवार 25 अक्टूबर को कुल 89 परिवादी अपनी शिकायतों के साथ जिलाधिकारी से मिले.प्रखंड अंचल हरलाखी निवासी चौधरी ठाकुर द्वारा न्यायालय के पारित आदेश के बावजूद आज तक सरकारी आम रास्ता के अतिक्रमण से मुक्त नही करने से संबंधित शिकायत किया गया। प्रखंड अंधराठाढ़ी निवासी तमन्ना बाबू द्वारा निजी जमीन को दखल करने एवं जानमाल को मारने की धमकी देने संबंधी शिकायत किया गया। प्रखंड लदनिया निवासी रविंद्र कुमार सिंह द्वारा उनके ग्रामीण मुकेश कुमार यादव द्वारा सरकारी जमीन में रास्ता पर अतिक्रमण कर पक्का घर बनाए जाने से संबंधित शिकायत किया।डोड़वार पंचायत निवासी ऋषि नारायण सिंह के द्वारा डोड़वार पंचायत मे पंचायत सरकार भवन निर्माण हेतु किया जा रहे जमीन के चयन संबंधी आवेदन दिया।घोघरडिया प्रखंड निवासी सिकंदर ठाकुर द्वारा उनके अपने पड़ोसियों द्वारा उनके निजी जमीन से बेदखल करने संबंधी आवेदन दिया। जिलाधिकारी द्वारा आए हुए सभी परिवादियों से बारी-बारी से शिकायतें सुनी गई और उनके परिवाद के निवारण हेतु संबधित अधिकारियों को आवश्यक निर्देश भी दिए गए. जिलाधिकारी ने कई प्राप्त शिकायतों के आलोक में संबंधित पदाधिकारियो को फोन कर जन शिकायतों को सर्वोच्च प्राथमिकता में रखकर त्वरित निष्पादन करने का निर्देश दिया।उक्त अवसर पर डीडीसी दीपेश कुमार अपर समाहर्ता शैलेश कुमार भी उपस्थित थे।

मदर एंड चाइल्ड संस्था के द्वारा किया गया अक्षरा शक्ति अवार्ड कार्यक्रम

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई [झाझा] ममता हेल्थ इंस्टीटयूट मदर एंड चाइल्ड संस्था के द्वारा शुक्रवार को अक्षरा शक्ति अवार्ड कार्यक्रम प्लस टू उच्च विद्यालय बैजला में आयोजित किया गया।जिसकां उदघाटन विद्यालय के प्रधानाध्यापक एवं शिक्षक एवं शिक्षिका ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया। कार्यक्रम के दौरान स्कूली बच्चों ने बाल विवाह, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, दहेज प्रथा पर रोक, लड़कियों को सम्मान व अधिकार पर नुक्कड़ नाटक, भाषण प्रतियोगिता भी आयोजित किया गया। प्रतियोगिता में शामिल प्रतिभागियों को सम्मानित किया और किशोरियों ने 18 वर्ष तक शिक्षा जारी रखने और बाल विवाह की रोक लगाने का संदेश भी दिया। मौके पर संस्था के जिला समन्वयक अमन कुमार, वरूण सिंह, मिराज खान, राजेश कुमार, करण कुमार, वार्ड सदस्य राम खेलावन ने किशोरियों को संबोधित करते हुए कहा कि बेटी पढ़ती है तो उन्हे समाज में लोग सम्मान देते है। संस्था के सदस्यों ने अभिभावकों को भी जागरूक करते हुए कहा कि अपने अपने बेटी को शिक्षा से वंचित न रखे और उन्हे अच्छे मुकाम तक पहुंचाने में सहयोग करे।

मतदाता सूची का हुआ प्रकाशन, द्वितीय चरण 27 नवंबर को होगा मतदान

प्रात : किरण संवाददाता

विभूतिपुर/समस्तीपुर प्रखंड क्षेत्र के 27 पंचायत में पैक्स चुनाव को लेकर शुक्रवार की देर संध्या तक मतदाता सूची का प्रकाशन किया गया।यह जानकारी बीसीओ रामकुमार ने देते हुए बताया कि प्रखंड कार्यालय और सभी 27 पैक्सों पर फाइनल मतदाता सूची का प्रकाशन किया गया है। उन्होंने बताया कि नामांकन 13, 14 एवं 16 नवंबर को होगा तथा 20 नवंबर को नाम वापसी तथा चुनाव चिन्ह का आवंटन किया जाएगा। 27 नवंबर को मतदान एवं उसी दिन मतदान के बाद मतगणना या 28 नवंबर को मतगणना की प्रक्रिया पूर्ण कर ली जाएगी।

गुमशुदा को लेकर थाना में दिया आवेदन

विभूतिपुर/समस्तीपुर थाना क्षेत्र के कल्याणपुर दक्षिणबारी टोल वार्ड 10 निवासी विदेशी पासवान ने अपने बड़े भाई गणेश पासवान की गुमशुदा को लेकर थाना में लिखित आवेदन देकर मदद की गुहार लगायी हैं। बताया है कि मेरे बड़े भाई गणेश पासवान उम्र 40 वर्ष 14 सितंबर 2024 से गायब है। उनका मानसिक संतुलन ठीक नहीं है। अपने स्तर से काफी खोजबीन किया परंतु कहीं पता नहीं चल पाया है।

संक्षिप्त खबरें

डीएम ने सात अभ्यर्थियों को नियुक्ति पत्र दिया

मुंगेर(ब्यूरो)। महिला एवं बाल विकास निगम, बिहार पटना के मिशन लोक शक्ति योजना अंतर्गत जिला हब फॉर एम्पावरमेंट ऑफ विमेन योजना तथा वन स्टॉप सेंटर के विभिन्न रिक्त पदों पर नियोजित कुल सात अभ्यर्थियों को गुरुवार को समाहरणालय स्थित संवाद कक्ष में जिलाधिकारी अवनीश कुमार सिंह द्वारा नियुक्ति पत्र वितरित किया गया। इस अवसर पर उप विकास आयुक्त अजीत कुमार सिंह, डीपीओ आईसीडीएस रेखा कुमारी उपस्थित थे। जिलाधिकारी द्वारा जिला हब फॉर एम्पावरमेंट ऑफ विमेन योजना के तहत जिला मिशन समन्वयक शालिग्राम प्रसाद, एमटीसी प्रिंस कुमार, वित्तीय साक्षरता विशेषज्ञ मनोज कुमार मंडल तथा लेखा सहायक नीतीश कुमार को नियुक्ति पत्र दिया गया। वहीं वन स्टॉप सेंटर के पारा मेडिकल पर्सन पूजा कुमारी, मनो सामाजिक परामर्शी ब्यूटी कुमारी तथा कंप्यूटर ज्ञान युक्त कार्यालय सहायक मुकेश शर्मा को नियुक्ति पत्र दिया गया। जिलाधिकारी ने सभी नवचयनित अभ्यर्थियों को शुभकामनाएं देते हुए अपने कर्तव्य के प्रति सजग रहने और बेहतर कार्य करने की बात कही।

रतनपुर पंचायत में "प्रशासन आपके द्वार" कार्यक्रम का हुआ आयोजन

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई/गिद्धौर:- प्रखंड के रतनपुर पंचायत के बाबा गरभु स्थान में जिला प्रशासन द्वारा आमजनों की समस्याओं के निदान एवं सरकार के जन कल्याण कारी योजनाओं से क्षेत्र वासियों को लाभान्वित कराने के उद्देश्य से जिला प्रशासन आपके द्वार कार्यक्रम का आयोजन किया गया।रतनपुर पंचायत के मुखिया भोला यादव के देखरेख में उक्त कार्यक्रम का विधिवत उदघाटन जिला कोषांग पदाधिकारी काजल मोदी,प्रखंड विकास पदाधिकारी सुनील कुमार,अंचल अधिकारी आरती भूषण,प्रखंड पंचायती राज पदाधिकारी अपराजिता सुमन,खाद आपूर्ति पदाधिकारी शिवपूजन कुमार द्वारा संयुक्त रूप से फीता काटकर किया गया। उक्त कार्यक्रम में संबंधित विद्युत विभाग, आरटीपीएस,समाजिक सुरक्षा, सांख्यिकी, खाद्य आपूर्ति, आपदा प्रबंधन, राजस्व एवं भूमि सुधार, आईसीडीएस,ग्रामीण कार्य विभाग, स्वास्थ्य विभाग,पंचायती राज, पीएचईडी,आवास सहित कई विभागों के काउंटर लगाए गए एवं आमजनों की जन समस्याओं से जुड़ा आवेदन लिया गया एवं उनके त्वरित निष्पादन का उन्हें भरोसा दिया गया।इस अवसर पर जिला कोषांग पदाधिकारी काजल मोदी ने कहा कि सरकार पंचायत स्तर पर ग्रामीण इलाकों में जनहित से जुड़ी योजनाओं से आम जनों को लाभान्वित कराने का हर संभव प्रयास कर रही है, इसे लेकर प्रसासनिक स्तर पर हर मुमकिन कवायद जिला प्रसासन द्वारा की जा रही है।आप सभी सरकार के जन उपयोगी योजनाओं से जुड़कर इसका अक्षरसः लाभ लें। कार्यक्रम को बीडीओ सुनील कुमार,सीओ आरती भूषण,बीपीआरओ अपराजिता सुमन,सीडीपीओ कुमारी बिंदु,प्रखंड खाद आपूर्ति पदाधिकारी शिवपूजन कुमार ने भी संबोधित किया व मौके पर कहा कि जिला प्रसासन ग्रामीण क्षेत्रों में विकास के हर मानक से पंचायत वासियों को जोड़कर उन्हें सबल एवं आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास कर रही है, आप अपनी समस्याओं को हमारे समक्ष रखें, ताकि आपसे प्राप्त आवेदन के आधार पर सरकार के योजनाओं से आपको लाभांवित किया जा सके, साथ ही लोक शिकायतों का निदान निकालकर आपको उनका अक्षरसः लाभ दिलाया जा सके। कार्यक्रम में संबंधित विभाग से जुड़े विभिन्न योजनाओं की विभागीय कर्मियों द्वारा जानकारी आमजनों को दी गयी एवं योजनाओं से लाभान्वित होने की प्रक्रिया से उन्हें अवगत कराया गया।इस दौरान संबंधित विभागों से जुड़े कार्यक्रम में आये फरियादियों द्वारा प्राप्त आवेदन एवं जन समस्याओं से जुड़ी शिकायतों को गंभीरता से लेकर जनहित में इसके निदान का आश्वासन शिविर में मौजूद पदाधिकारियों द्वारा दिया गया। इस मौके पर कई विभागों के पदाधिकारी एवं कर्मी कार्यक्रम में मौजूद थे।

प्रखंड सहकारिता पदाधिकारी की शिविर में अचानक बिगड़ी तबीयत

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई [झाझा] धमना पंचायत में आयोजित प्रशासन आपके द्वार कार्यक्रम के दौरान लगे शिविर में मौजूद प्रखंड सहकारिता पदाधिकारी रंजित लाल की अचानक तबीयत बिगड़ गई और बैठे बैठे वह गिर पड़ा। शिविर में मौजूद पदाधिकारियों की अचानक नजर पड़ने के बाद लोगों में पलभर के लिए हड़कंप मच गया जिसके बाद मौजूद अन्य विभागों के कर्मी के द्वारा तुरंत शिविर में लगे स्वास्थ्य विभाग के एंबुलेंस से उसे उठाकर आनन फानन में इलाज के लिए रेफरल अस्पताल लाया जहां चिकित्सक ने तबीयत बिगड़े प्रखंड सहकारिता पदाधिकारी का इलाज किया और बेहतर इलाज के लिए उसे सदर अस्पताल जमुई रेफर कर दिया। वही प्रखंड के अन्य कमीयों को इसकी सूचना मिलने पर अस्पताल में प्रखंड कर्मी एवं जनप्रतिनिधियों की भीड़ लग गई।

दीपावली, काली पूजा एवं छठ पर्व को लेकर शांति समिति सदस्यों की बैठक आयोजित

सामाजिक सौहार्द के साथ पर्व को मनाने की शांति समिति सदस्यों से की गई अपील

प्रात : किरण संवाददाता

गिद्धौर। गिद्धौर थाना परिसर में शुक्रवार को अंचलाधिकारी आरती भूषण की अध्यक्षता में शांति समिति सदस्यों के साथ एक बैठक आयोजित की गयी, बैठक में बीडीओ सुनील कुमार, थाना प्रभारी पंकज कुमार सहित दर्जनों शांति समिति सदस्यों ने मुख्य रूप से भाग लिया। इस मौके पर सभी सदस्यों से संबंधित पदाधिकारियों ने दीपावली, महापर्व छठ व काली पूजा को समाजिक सौहार्द के साथ मनाने की अपील की गयी बैठक में मुखिया रामाशीष साह,भोला यादव,धनराज यादव, पूर्व प्रमुख श्रवण यादव,पूर्व पैक्स अध्यक्ष गुरुदत्त प्रसाद, सहित दर्जनों शांति समिति सदस्यों से अंचल अधिकारी आरती भूषण ने कहा कि दीपावली, काली पूजा एवं छठ पर्व को सामाजिक समरसता एवं सौहार्दपूर्ण वातावरण के साथ संपन्न कराना हम सबों की जिम्मेवारी है। वहीं बीडीओ सुनील कुमार ने कहा कि दीपावली पर्व अंधेरे पर उजाले की जीत का परिचायक है, छठ पर्व लोक आस्था का महान पर्व है, इसे सामाजिक रीतियों के साथ परंपरा अनुरुप संपन्न कराना हमसबों की जिम्मेवारी बनती है। वहीं थानाध्यक्ष पंकज कुमार ने कहा कि दीपावली व काली पूजा पर्व के दौरान आस्था से खिलवाड़ करनेवाले असामाजिक तत्वों जुआरियों आदि पर प्रशासन की सख्त निगाह बनी रहेगी। किसी भी प्रकार से पर्व के दौरान गड़बड़ी या सामाजिक सौहार्द बिगाड़ने का प्रयास करनेवाले असमाजिक तत्वों एवं उचक्कों को पर्व के दौरान बख्शा नही जाएगा। वहीं पूजा के दौरान होनेवाले कठिनाइयों पर भी आपसी विचार विमर्श किया गया। बैठक में अंचल अधिकारी एवं प्रखंड विकास पदाधिकारी द्वारा छठ पर्व को लेकर घाटों की साफ सफाई को लेकर संबंधित पंचायतों के मुखिया से अपने अपने स्तर से सामाजिक व्यवस्था को ध्यान में रखते हुए पर्व पर विधि व्यवस्था को ले पहल करने की बात कही गयी। इस मौके पर बैठक में सहायक अवर निरीक्षक राजेश्वर साह के अलावे शांति समिति के सदस्य मथुरा मिस्त्री,शंभु यादव,मंसूर अली, मोहम्मद नियाज खान,संजय कुमार, शिव शंकर कुमार,अनिल वर्णवाल, दिलीप कुमार वर्मा, अमर नाथ केशरी, शिवेंदु कुमार,बहादुर यादव आदि मौजूद थे।

गिद्धौर के पूर्वी गुगुलडीह में 11 नवंबर को प्रसासन आपके द्वार कार्यक्रम का होगा आयोजन

- सरकार के योजनाओं से पंचायत वासियों को कराया जाएगा अवगत

प्रात : किरण संवाददाता

गिद्धौर। जिले के आमजनों को सरकार के विभिन्न विभागों से जुड़े जन कल्याणकारी योजनाओं से अवगत कराने एवं उन योजनाओं से उन्हें लाभान्वित कराने को लेकर जिला प्रसासन द्वारा प्रसासन आपके द्वार कार्यक्रम का जिले के विभिन्न प्रखंड में आयोजन किया जा रहा है। इसके तहत गिद्धौर प्रखंड में इसकी शुरूआत 24 नवंबर से की गयी है जिसके तहत 24 अक्टूबर को पतसंडा एवं 25 अक्टूबर को रतनपुर में कार्यक्रम आयोजित किया गया है। उक्त प्रखंड के आठ पंचायतों में जिला प्रसासन द्वारा यह कार्यक्रम स्थानीय स्तर पर किया जाना है। वहीं आगामी 11 नवंबर को पूर्वी गुगुलडीह,12 नवंबर को सेवा,13 नवंबर को कुंधुर,14 नवंबर को कोल्हुआ,15 नवंबर को मौरा एवं 18 नवंबर को गंगरा पंचायत में यह कार्यक्रम संबंधित पंचायत भवन में आयोजित किया जाएगा। इस आशय की जानकारी देते हुए अंचल अधिकारी आरती भूषण ने बताया कि जिला प्रसासन के दिशा निर्देश पर जिले के विभिन्न प्रखंड में संबंधित पंचायत के पंचायत भवन में प्रसासन आपके द्वार कार्यक्रम के माध्यम से क्षेत्र वासियों एवं आम जनों को सरकार के महत्वाकांक्षी योजनाओं से जोड़कर उन्हें लाभान्वित करने का हर मुमकिन प्रयास कर रही है। उन्होंने गिद्धौर प्रखंड के विभिन्न पंचायतों के वासियों को इस कार्यक्रम में भाग लेकर सरकार के योजनाओं से जुड़कर उनका लाभ लेने की अपील की है। वहीं उक्त कार्यक्रम में क्षेत्र वासियों के जन शिकायतों का भी प्राप्त आवेदन के आधार पर उनका निष्पादन कर उन्हें सहयोग कर उनके समस्या का निदान किया जाएगा।

पतसंडा,कोल्हुआ,सेवा,रतनपुर के भौराटांड़ गांव के किसानों को तेज हवा और बारिश से भारी नुकसान

चक्रवर्ती तूफान दाना से पहले हुई बारिश बनी आफत,सैकडो.एकड़ में लगी फसल नष्ट

प्रात : किरण संवाददाता

गिद्धौर। चक्रवर्ती तूफान दाना को लेकर जारी अलर्ट से किसान चिंतित नजर आने लगे थे। हुआ भी वही, जिसका डर किसानों को था। दरअसल,जिले में चक्रवाती तूफान दाना का दस्तक देने से पहले गुरूवार की देर रात जमकर हुई बारिश ने किसानों के फसलों पर आफत बनकर बरसी। तेज बारिश होने व हवा से जिले भर में कई एकड़ धान की फसल पानी में गिर गया। इस दौरान सबसे अधिक नुकसान गिद्धौर प्रखंड के पतसंडा,कोल्हुआ,सेवा,रतनपुर पंचायत के भौराटांड़ गांव में हुआ। जहां लगभग सैकडो.एकड़ से ज्यादा खेत में लगे धान की फसल पानी में गिर गया। जिससे किसानों को लाखों रुपए का नुकसान होने की चिंता सता रही है। किसान अर्जुन यादव,प्रवीण सिंह,अमित दास,मोहन यादव,विजय राम,मनोज यादव,पप्पू चौरसिया,शंकर यादव,विमल मिश्रा ने बताया कि गुरूवार देर रात भारी बारिश से हमारे बहियार में दर्जनों एकड़ में लगे धान का फसल पानी में गिरकर क्षति हो गई। छठ पूजा के बाद धान कटाई का समय है लेकिन,इस समय पानी और तेज हवा दोनों एक साथ किसानों पर आपात बनाकर बरस रही है। किसानों का कहना है कि अगर पानी और तूफान ज्यादा कहर बरसाएगी तो किसानों की कमर टूट जाएगी। पूरे प्रखंड में लगे धान की फसल पूरी तरह से बर्बाद हो जाएगा। कई किसानों का कहना है बड़ी मुश्किल से इस बार धान की खेती में अच्छी पैदावार होने की उम्मीद जगी थी।जिससे इस बार किसानों को अच्छा मुनाफा मिलने का उम्मीद था।अब दाना तूफान की दस्तक देने से तेज हवा चलने से तैयार फसल खेत में ही सिमट कर रह जाएगी। किसानों ने बताया कि यहां के दर्जनों किसानों के लिए एकमात्र आमदनी का रास्ता धान की खेती ही होती है जहां से पूरे साल का परिवार का भरण पोषण होता है।

सांसद अरुण भारती के निर्देश पर लोजपा आर की टीम मृतक के घर पहुंच परिजनों को दी सांत्वना

प्रात : किरण संवाददाता

तारापुर(मुंगेर)। दो दिन पूर्व गंगटा थाना क्षेत्र के परमानंदपुर मैदान पर युवक कपिल रविदास की हत्या की खबर के उपरांत जमुई के लोकप्रिय सांसद अरुण भारती के निर्देश पर शुक्रवार को लोजपा रामविलास की टीम मोहनपुर स्थित मृतक के घर पहुंच परिजनों को सांत्वना दी । मौके पर लोजपा आर के राष्ट्रीय सचिव मिथिलेश सिंह ने परिजनों से पूरी वारदात की जानकारी कर घटना की घोर निंदा करते हुए परिजनों को आश्वस्त किया कि घटना में शामिल लोगों को पुलिस जल्द गिरफ्तार कर उनके खिलाफ कठोर कार्रवाई करेगी। साथ ही उन्होंने टेटिया बंबर के अंचल पदाधिकारी से दूरभाष पर बात कर जल्द उचित मुआवजे दिए जाने का अनुरोध किया। मौके पर सांसद प्रतिनिधि चंद्रशेखर चौधरी, आईटी सेल के जिलाध्यक्ष रोहित सिंह, युवा छात्र जिला अध्यक्ष नीतीश कुमार, जदयू के बिट्टू सिंह ने भी इस घटना पर दुख व्यक्त करते हुए परिजनों के प्रति संवेदना व्यक्त किया। तो वहीं दूसरी ओर मिल्की गांव निवासी सुमन कुमार जो आर्मी में राजस्थान के कोटा में पदस्थापित थे , इनके शहीद होने की सूचना मिलते ही मृतक के गांव मिल्की पहुंचकर लोक जनशक्ति पार्टी रामविलास के राष्ट्रीय सचिव मिथिलेश कुमार सिंह ने उनके परिजनों से मिलकर इस दुख की घड़ी में ढांढस दिया। राष्ट्रीय सचिव के साथ गए पार्टी के सभी लोगों ने सेना के शहीद जवान के प्रति गहरी शोक संवेदना व्यक्त किया ।

चिकित्सा प्रभारी सह उपाधीक्षक , डॉक्टर और रोगियों के साथ नर्स करती है दुर्व्यवहार

मुंगेर (ब्यूरो)। खड़गपुर अनुमंडल सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में एक नर्स के द्वारा अस्पताल में आए दर्जन भर मरीजों के साथ दुर्व्यवहार किए जाने से संबंधित समाचार प्राप्त हुआ है ।सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार अनुमंडलीय सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में कार्यरत एक नर्स द्वारा रोगियों के साथ दुर्व्यवहार करती है । बताया जाता है कि ये नर्स अस्पताल के प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी सह उपाधीक्षक सहित अन्य डॉक्टरों के निर्देश का खुले आम अवहेलना करती रहती है। खड़गपुर अनुमंडलीय सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के एक चिकित्सक ने नाम नहीं छापने के शर्त पर बताया कि तथा कथित नर्स हम डॉक्टरों के निर्देश का अनुपालन नहीं करती है। इधर गुरुवार देर शाम करीब 8:00 बजे रोगी काजल कुमारी इंजेक्शन लेने अस्पताल पहुंची।

अचानक विद्यालय पहुंचकर अपर मुख्य सचिव ने मध्याहन भोजन का किया जांच

बच्चों को मिलने वाले मध्याहन भोजन की जांच करते अपर मुख्य सचिव

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई [झाझा] सिमुलतला आवासीय विद्यालय का निरीक्षण करने जा रहे शुक्रवार को शिक्षा विभाग के अपर मुख्य सचिव डॉ. एस सिद्धार्थ ने प्रखंड क्षेत्र के रजला पंचायत में स्थित प्राथमिक विद्यालय औरेया में अचानक निरीक्षण करने के लिए रूक गए जहां विद्यालय में स्कूली बच्चों को मध्याहन भोजन करवाया जा रहा था। विद्यालय में अचानक अपर मुख्य सचिव के पहुंचने से विद्यालय में शिक्षक-शिक्षिकाओं के बीच अचानक हड़कंप मच गया। अपर मुख्य सचिव ने उसी दौरान स्कूली बच्चों को मिलने वाली मध्याहन भोजन की गुणवता की जांच किया। बच्चों को भोजन में दिए गए चावल से भरी थाली को उठाकर चावल की जांच कि और साथ मे मौजूद जिला शिक्षा पदाधिकारी राकेश कुमार से विद्यालय में रोस्टर के अनुसार मिनू के बारे में पूछा गया तो उन्होनें मीनू के अनुसार शुक्रवार को स्कूली बच्चों को अंडा न मिलने के पूछे सवाल पर डीईओ ने कार्तिक मास में दीपावली और छठपूजा की बात का हवाला देते हुए बच्चों के द्वारा अंडा न खाने की बात बताया। अपर मुख्य सचिव ने विद्यालय में शिक्षकों की उपस्थिति, बच्चों के नामांकन सहित अन्य कई तरह की जानकारी भी लिया।विद्यालय का निरीक्षण करने के बाद अपर मुख्य सचिव जिलाधिकारी अभिलाषा शर्मा और अधीनस्थ अधिकारियों के साथ सिमुलतला के लिए रवाना हो गए।

धमना में आयोजित हुआ प्रशासन आपके द्वार में पदाधिकारियों के बीच पंचायतवासियों ने रखी अपनी समस्या

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई [झाझा] शुक्रवार को धमना पंचायत स्थित पंचायत भवन में प्रशासन आपके द्वार कार्यक्रम को लेकर शिविर लगाया गया। जिसका उदघाटन पंचायत के मुखिया प्रतीक शर्मा और बीडीओ रविजी के द्वारा फीता काटकर किया गया। शिविर में आपूर्ति विभाग, मनरेगा विभाग, कृषि, आवास योजना, सामाजिक सुरक्षा कल्याण, बाल विकास परियोजना, स्वास्थ्य विभाग सहित अन्य कई विभाग के पदाधिकारी मौजूद थे। बीडीओ ने बताया कि प्रशासन आपके द्वार जिलाधिकारी के निदेर्शानुसार पंचायतवार लगाया जा रहा है। शिविर में जो भी ग्रामीण अपनी समस्याओं को लेकर आवेदन दिया है उसका शत प्रतिशत समाधान भी किया जाएगा ताकि ग्रामीण को आगे चलकर किसी भी तरह की कोई परेशानी न हो। शिविर में अलग अलग विभाग के लगाए गए स्टॉल पर पंचायत वासियों के द्वारा अपनी अपनी रखी समस्याओं को उपस्थित पदाधिकारियों के समक्ष रखा गया जहां संबंधित पदाधिकारियो ने पंचायतवासियों की समस्याओं को सुनने के बाद समस्या समाधान करने का आश्वासन दिया। मौके पर बड़ी संख्या में ग्रामीण मौजूद थे।

प्रशासन आपके द्वार कार्यक्रम में लोगों की समस्याओं का होगा त्वरित निष्पादन : उप समाहर्ता

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई/ ई०अलीगंज : जिलाधिकारी के निदेर्शानुसार प्रशासन आपके द्वारह्व कार्यक्रम के तहत अलीगंज प्रखंड के इस्लामनगर पंचायत के पंचायत सरकार भवन में शिविर का आयोजन पंचायत के दिलीप रावत की अध्यक्षता में आयोजित की गई।इस कार्यक्रम का उद्घाटन जिला उपसमाहर्ता नागमणि कुमार वर्मा बीडीओ अभिषेक भारती, अंचलाधिकारी रंजन कुमार दिवाकर,बीपीआरओ सौरभ कुमार सुमन,मुखिया दिलीप रावत,ने संयुक्त रूप से फीता काटकर दीप प्रज्वलित करते हुए किया।इस शिविर में सभी विभाग राजस्व विभाग , चिकित्सा विभाग ,मनरेगा,प्रधानमंत्री आवास योजना, कृषि विभाग, वाल विकास परियोजना, बिजली विभाग, आपूर्ति विभाग, कृषि विभाग,सहित अन्य विभाग के द्वारा अलग-अलग स्टाल लगाकर मामले का ऑन स्पोर्ट निदान करने तथा सरकार द्वारा सम्बंधित विभाग के माध्यम से चलाये जा रहे कल्याणकारी योजनाओं को आम जनता तक पहुचाने का निर्देश दिया गया। इस मौके पर आए हुए लोगो को उपसमाहर्ता ने सम्बोधित करते हुए कहा कि इस शिविर का उद्देश्य सरकार द्वारा जनहित के लिए जारी सभी कल्याणकारी योजनाओ को जानकारी देना है,तथा स्थानीय स्तर पर प्रशासन के सभी इकाइयों के प्रति विश्वास कायम करना है। प्रशासन द्वारा सभी लोगो के साथ समन्वय स्थापित कर प्रशासन को सहयोग कर स्थानीय स्तर पर विकास करना है। इसी लिए सरकार यह योजना चला रही ताके सुदूर गाँव के लोग रोज अपनी परेशानी लेकर कई मीटर चल कर कार्यलय के चक्कर लगाते है, इन्ही सब समस्याओं को दूर करने का सरकार एवं प्रशासन की मदद से यह कार्यक्रम चलाया जा रहा है,की पहल वही बीडीओ अभिषेक भारती ने कहा कि सरकार द्वारा जो भी योजनाएं चलाई जा रही है उसकी जानकारी हर व्यक्ति तक पहुचाने के लिये कृत संकल्प है, सरकार द्वारा प्रदत्त किसी भी योजना को उसके वास्तविक लाभार्थी तक पहुचाना ही उद्देश्य है।जो लाभार्थी की समस्या को समाधान करने हेतु प्रशासन आपके द्वार कार्यक्रम चलाया जा रहा, बीपीआरओ सौरभ कुमार ने कहा की जो भी लाभुक उपस्थित हुए अपनी समस्या का निष्पादन इस शिविर के माध्यम से अपनी समस्या का समाधान कराये, मुखिया दिलीप रावत ने कहा कि पंचायत में अभी जो भी योजनाएं चल रही है और जो भी परेशानी एवं समस्या है उसका निष्पादन करने के लिए सभी विभाग के पदाधिकारी मौजूद है, इस शिविर का लाभ सभी लोगो ले,उपसमाहर्ता द्वारा शिविर में लगाये गए सभी विभागीय स्टाल का बारी -बारी से निरीक्षण कर विकास से सम्बंधित जानकारी ली गई। इस मौके पर बालविकास परियोजना स्टॉल पे उप समाहर्ता ने शिशु को पोषण आहार ग्रहण करवाया, वहीं बाल विकास परियोजना पाधिकारी ज्योति कुमारी ने कहा की बिहार सरकार की यह महत्त्व काक्षी योजना चलाई जा रही ताके सरकार हर घर तक पहुंचे और आपकी जो भी समस्या है उसे ऑन द स्पोर्ट समाधान करें, सुदूर गाँव के लोग प्रखंड एवं जिला का चक्कर नहीं लगाए, इस योजना का उदेश्य सरकार को हर गाँव एवं हर लोग तक पहुंचे, वहीं इस शिविर मे भूमि लगान अपडेट का 10 मामला आया जिसमे 9 मामला ऑन द स्पोर्ट निष्पादन किया।

मुंगेर जिला ब्राउन शुगर बिक्री का केंद्र बनता जा रहा है

प्रात : किरण संवाददाता

मुंगेर। मुंगेर जिले में मादक द्रव्यों की बिक्री इन दोनों वे रोक-टोक तौर से हो रही है जिले के सभी प्रखंड क्षेत्र में ब्राउन शुगर बेचे जा रहे हैं इस ब्राउन शुगर की बिक्री से जिले के हजारों नौजवान युवा छात्र के बीच ब्राउन शुगर बेचकर उन्हें नशे का शिकार बनाया जा रहा है मुंगेर के हवेली खड़गपुर असरगंज जमालपुर आदि शहरों में ब्राउन शुगर धड़ल्ले से बेचा जा रहा है जिले में ब्राउन शुगर की तस्करी का एक नेटवर्क चल रहा है मुंगेर पुलिस ने अभी तक लगभग आधा दर्जन से अधिक ब्राउन शुगर बेचने वालों को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है ब्राउन शुगर जब्त भी किया है इस मादक द्रव्यों के बिक्री से हजारों जवान बच्चों का भविष्य अंधकार में चला गया है ब्राउन शुगर का सेवन करने वाले कई तो स्वर्ग भी सिधार चुके हैं । सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार मुंगेर विश्वविद्यालय के आसपास रोड और डीजे कॉलेज लाल दरवाजा जमालपुर ईस्ट कॉलोनी क्षेत्र हवेली खड़गपुर का पॉलिटेक्निक कॉलेज क्षेत्र इंजीनियरिंग कॉलेज क्षेत्र असरगंज बाजार आदि क्षेत्र ब्राउन शुगर की बिक्री धड़ल्ले से किया जा रहा है असरगंज बाजार में गत मंगलवार को असरगंज पुलिस ने ब्राउन शुगर एवं पिस्टल के साथ एक तस्कर को गिरफ्तार किया है। थाना प्रभारी शिव अमित प्रकाश कौशिक ने बताया कि ब्राउन शुगर के साथ शुभम कुमार को मंगलवार को तथा एक पिस्टल और 44000 नगद एक मोबाइल और डिलीवरी के सामान बरामद किया गया है। इससे स्पष्ट होता है कि ब्राउन शुगर तस्कर मुंगेर जिले के सभी प्रखंडों के बाजारों और कॉलेज पर अपना दस्तक देकर ब्राउन शुगर के लत में युवाओं को और छात्रों को फंसा रहे हैं जानकारी मिली है कि छात्रों को पहले मुफ्त में दिया जाता है और कॉलेज के चपरासी के माध्यम से ब्राउन शुगर छात्रों को उपलब्ध कराया जाता है और चपरासी को इसके एवरेज में कुछ पैसे दिए जाते हैं जब युवाओं को और छात्रों को इसकी लत लग जाती है तब तस्कर पैसे उगाही करते हैं सूत्रों ने बताया कि ब्राउन शुगर का लत लगाकर युवाओं को और छात्रों को इस तस्करी के धंधे में भी धकेल रहे हैं।

एनजीओ सफाईकर्मियों का पैसा खा रही है मुंगेर महापौर एवं निगम प्रशासन : केशरी

प्रात : किरण संवाददाता

मुंगेर (ब्यूरो)। मुंगेर महापौर कुमकुम देवी एवं निगम प्रशासन एनजीओ से सांठगांठ कर शहर की गंदगी साफ करने वाले नगर निगम के एनजीओ सफाईकर्मियों के हक का पैसा खा रही है जिसे किसी भी कीमत पर बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। उपर्युक्त बातें एनसीपी (शरदचंद्र पवार) के प्रदेश महासचिव सह प्रवक्ता संजय केशरी ने अपने चार दर्जन समर्थकों के साथ मुंगेर नगर निगम कार्यालय पर हल्ला-बोल प्रदर्शन करते हुए कहा। उन्होंने कहा कि स्थानीय एनजीओ के बदले नोएडा के एनजीओ को सफाई व्यवस्था के एवज में प्रतिवर्ष नौ करोड़ अस्सी लाख रुपए भुगतान का करार हुआ लेकिन एजेंसी 365 दिनों की जगह 311 दिन ही सफाई व्यवस्था का कार्य कर साल में 54 दिनों का एक करोड़ पैतालीस लाख रुपए नाजायज तरीके से बंदरबांट कर रही है। श्री केशरी ने कहा कि यह एक करोड़ पैतालीस लाख रुपए महापौर एवं निगम प्रशासन में बंटने की बजाय सभी सफाईकर्मियों में बांट दिया जाना चाहिए। इसके अलावा उन्होंने एनजीओ एवं दैनिक सफाईकर्मियों को परमानेंट करने का आवाज भी जोरदार ढ़ंग से उठाया। श्री केशरी ने इस अवसर पर महापौर कुमकुम देवी के द्वारा स्कूटर एवं मोटरसाइकिल से कूड़ा उठाव घोटाला का सबूत भी स्कूटर और मोटरसाइकिल के मालिकों का नाम एवं नंबर सहित पेश किया। उन्होंने महापौर कुमकुम देवी को चुनौती दिया कि निगम की सम्पत्तियों को बेचने सहित तमाम घोटालों पर सार्वजनिक बहस कर लें। इस अवसर पर जिला अध्यक्ष सत्यनारायण साह, महिला जिला अध्यक्ष संयुक्ता सिंह चौहान सहित कई दर्जन भर कार्यकर्ता मौजूद थे।

क्या सचमुच भरोसा करने लायक है चीन?

भारत चीन के बीच सीमा पर पैट्रोलिंग को लेकर हुए समझौते को लेकर उम्मीद जताई जा रही है कि अब भारत और चीन के बीच गलवान जैसा टकराव नहीं होगा। भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के ब्रिक्स समिट में जाने से पहले इसे बड़ा कदम बताया जा रहा है। कहा जा रहा है कि भारत और चीन के बीच एलएसी पर पेट्रोलिंग के लिए सहमति होने से दोनों देशों के बीच सीमा विवाद सुलझ सकता है और टकराव में भी कमी आ सकती है। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने कहा कि भारतीय और चीनी सैनिक मई 2020 में सीमा पर गतिरोध शुरू होने से पहले की तरह गश्त फिर से शुरू कर सकेंगे। विदेश सचिव विक्रम मिस्री ने भी घोषणा की है कि भारत और चीन हिमालय में वास्तविक नियंत्रण रेखा पर गश्त व्यवस्था पर पहुंच गए हैं और इससे सैनिकों की वापसी और तनाव का समाधान हो सकता है। लेकिन इतिहास के मद्देनजर सवाल फिर मौजूद है कि क्या भारत चीन की सहमति पर विश्वास कर सकता है? क्या चीन की पिछली हरकतें भरोसा करने लायक आधार देती है? शायद नहीं यही वजह है कि भारत को इस समझौते के बावजूद पल पल जागरूक रहना होगा। प्रधानमंत्री मोदी की ब्रिक्स समिट में शिरकत से पहले भारत और चीन के बीच लाइन ऑफ एक्चुअल कंट्रोल (एलएसी) पर भारत और चीन के बीच सीमा विवाद सुलझाने पर सहमति एक बड़ी उपलब्धि मानी जा सकती है, क्योंकि पिछले करीब साढ़े चार सालों से पूर्वी लद्दाख में सीमा पर दोनों देशों के बीच तनाव का माहौल बना हुआ था। दोनों देशों के बीच सीमा पर शांति और यथास्थिति बनाए रखने को लेकर इन सालों में कई दौर की सैन्य अधिकारियों की बैठकें हो चुकी है, लेकिन चीन के अड़ियल और धूर्तापूर्ण रवैये के कारण बात नहीं बन पा रही थी। अभी यह अच्छी बात है कि पूर्वी लद्दाख में 52 महीनों से चल रहा सीमा तनाव फिलहाल सुलझ गया है। दोनों देशों के बीच सैन्य और कूटनीतिक स्तर पर चली कवायद के बाद वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) पर गश्त और सैन्य तनाव घटाने पर सहमति बन गई है। विदेश सचिव द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार दोनों ही देश 2020 में वास्तविक नियंत्रण रेखा पर हुई घटनाओं के बाद से सैन्य और कूटनीतिक स्तर पर लगातार संपर्क में थे। डब्ल्यूएमसीसी और सैन्य कमांडर स्तर पर दोनों देशों के बीच कई दौर की बातचीत हुई है। आखिरकार वार्ता की इन कवायदों के कारण कई मोर्चों पर टकराव और तनाव मिटाने में कामयाबी मिली है। हालांकि अभी भी असहमति के कुछ बिंदु बाकी हैं। देखा जाए तो चीन से सीमा विवाद पर यह सहमति पीएम मोदी की ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में हिस्सा लेने के लिए रूस के शहर कजान के दौरे से एक दिन पहले आई है। इससे यह उम्मीद थोड़ी पक्की होती दिख रही है कि रूस के कजान शहर में मोदी जिनपिंग की मुलाकात सम्मेलन के इतर भी हो सकती है। इसलिए इसमें कोई संदेह नहीं कि एलएसी पर गश्त को लेकर समझौते पर पहुंचना एक बड़ी कामयाबी है क्योंकि भारत और चीन के बीच 2020 से शुरू हुआ सीमा विवाद बेहद भयंकर रूप ले चुका है। ताजा समझौते से इससे सीमा पर तैनात सेनाओं की वापसी हो सकती है और तनाव कम हो सकता है। इस समझौते को क्षेत्र में शांति बहाली की दिशा में एक बड़ा कदम माना जा रहा है। इससे दोनों देशों के बीच रिश्तों में जारी खटास कम हुई है, इसलिए मोदी और जिनपिंग के बीच मुलाकात की संभावना बनती दिख रही है।

अरब-इजरायल संघर्ष

एक अक्टूबर को ईरान की तरफ से इजरायल पर 150 से भी ज्यादा बैलिस्टिक मिसाइलों से हमले किए जाने के बाद से ही यह कयास लगाए जा रहे थे कि इजरायली सेना (आईडीएफ) इसका बदला शीघ्र लेगी? गौरतलब है कि ईरान के मिसाइल हमलों के तुरंत बाद ही आईडीएफ और पीएम बेंजामिन नेतन्याहू ने कहा भी था कि ईरान को सही समय पर सही तरीके से जवाब दिया जाएगा और हाल के दिनों में इजरायल से जुड़ी मीडिया की कुछ खबरों से ये संकेत भी मिलने लगे थे कि इजरायल ने ईरान पर प्रतिशोधात्मक कार्रवाई करने की तैयारी पूरी कर ली है। 14-15 अक्तूबर को इससे संबद्ध आई खबरों के मुताबिक इजरायली सेना ने कथित तौर पर ईरान के उन ठिकानों की सूची भी तैयार कर ली थी, जिन पर वह तेहरान के बैलिस्टिक मिसाइल हमलों के जवाब में हमले करना चाहता था। फर्स्टपोस्ट की रिपोर्ट में यह दावा ह्यचैनल 12ह्ण न्यूज के हवाले से किया गया था। रिपोर्ट के अनुसार इजरायली सेना ने ईरान पर हमले की अपनी तैयारियों के बारे में प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू और रक्षा मंत्री योव गैलेंट को लक्ष्यों की एक सूची सौंपी थी। साथ ही उसने यह स्वीकार भी किया था कि आईडीएफ के लक्ष्य बिल्कुल साफ एवं स्पष्ट हैं और अब वह कभी भी जवाबी हमला कर सकता है। रिपोर्ट में यह भी बताया गया था कि इजरायल ने ईरान पर हमले की योजना के बारे में अपने सबसे महत्वपूर्ण सहयोगी अमेरिका को भी बता दिया है, लेकिन अमेरिका को हमले के विशिष्ट लक्ष्यों पर कोई अपडेट नहीं दिया है। रिपोर्ट में इसकी वजह यह बताई गई थी कि यह मुद्दा बेहद संवेदनशील होने के कारण इजरायल अंतिम समय में भी अपना लक्ष्य बदल सकता है। इस मामले में आई ताजा खबरों के अनुसार इजरायल ईरानी परमाणु तथा ऊर्जा स्थलों पर हमले करने से बचेगा। ऐसा माना जाता है कि इजरायल ने अमेरिकी विरोध के बाद अपनी योजना बदल दी, अन्यथा पहले उसकी मंशा तेहरान में परमाणु साइट तथा ऊर्जा स्थलों और बुनियादी ढांचों पर हमला करने की थी। हालांकि इजरायली प्रधानमंत्री नेतन्याहू के कार्यालय की ओर से यह कहा गया है कि वे अमेरिका की सलाह तो सुनेंगे, लेकिन अंतिम निर्णय स्वयं करेंगे। इन सारी बातों को लेकर अभी दुनिया भर में ऊहापोह की स्थिति कायम थी। मीडिया कर्मियों, राजनीतिक विश्लेषकों, रक्षा विशेषज्ञों एवं मध्य-पूर्व से जुड़े मुद्दों पर राय रखने वाले तमाम विशेषज्ञों द्वारा तरह-तरह के कयास लगाए जा रहे थे और तभी अचानक इजरायल की ईरान पर हमले की उस योजना से जुड़ा दस्तावेज लीक हो गया, जिसके बाद दुनिया भर में इजरायल की बड़ी फजीहत हुई। गौरतलब है कि लीक हुए दस्तावेज 15 एवं 16 अक्तूबर की तारीख वाले हैं, जिन पर ह्यटॉप सीक्रेटह्ण की मुहर लगी हुई है। खबरों के अनुसार 18 अक्तूबर को मैसेजिंग प्लेटफॉर्म टेलीग्राम के ह्यमिडिल ईस्ट स्पेक्टेटरह्ण नामक अकाउंट पर इन्हें शेयर किया गया था। हालांकि इन दस्तावेजों के लीक होने के बाद शुरूआती दौर में ऐसा लगा था कि यह सारा मामला फर्जी है, परंतु इसी बीच एक अमेरिकी अधिकारी ने एसोसिएटेड प्रेस को दस्तावेजों की प्रामाणिकता की पुष्टि कर दी।

भारत से सीखा परोपकार सारे विश्व ने

ये हर रोज एम्स, सफदरजंग अस्पताल, राम मनोहर लोहिया अस्पातल के आगे बिहार, उड़ीसा, मध्य प्रदेश वगैरह से रोगियों के साथ आए तीमारदारों को भरपेट भोजन करवाते हैं। कौन हैं बालाजी कुनबा के सदस्य? यह सब हनुमान जी के भक्त हैं। इनकी कारों पर हनुमानजी की तस्वीर वाला एक बैनर लगा होता है। जिस पर ह्यबालाजी कुनबा- एक परिवार भूख के खिलाफह्ण लिखा रहता है। भंडारे के लिए पैसे का जुगाड़ पिलंजी गांव के लोग ही करते हैं। यह अधिकतर गुर्जर समाज से संबंध रखते हैं। आप भंडारा संस्कृति को भी तो जन सेवा ही कहेंगे। क्या अब भी किसी को बताने की जरूरत है कि परोपकार औस समाज सेवा तो हरेक भारतीय के जीवन का हिस्सा है।

आर.के. सिन्हा

लेखक वरिष्ठ संपादक, स्तंभकार और पूर्व सांसद

रतन टाटा के निधन के पश्चात उनके परोपकारी कामों की विस्तार से चर्चा हो रही है। वैसे, जरा गौर करें तो न केवल टाटा समूह, बल्कि भारत के हरेक छोटे-बड़े लाखों कारोबारी या उद्योगपति अपने स्तर पर कुछ न कुछ परोपकार से जुड़े कामों में लगे हुए ही मिल जायेंगे। यह कहना सरासर गलत होगा कि परोपकार की भावना हमने यूरोप से सीखी है। यह कुछ नासमझ अज्ञानियों का प्रचार भर है। भारत में परोपकार की परंपरा प्राचीन काल से ही गहरी जड़ें जमाए हुए है। हम सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे संतु निरामया में विश्वास करने वाले हैं। अभी भी आपको पहली रोटी गौ माता को में विश्वास करने वाले लाखों लोग मिल जायेंगे। धर्म, संस्कृति और समाज के हरेक पहलू में दान, सेवा और परोपकार का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। वेद और उपनिषद जैसे ग्रंथों में परोपकार को दान और सेवा के रूप में वर्णित किया गया है। हिन्दू धर्म में दान और सेवा का बहुत बड़ा महत्व है। ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यासः इन चार आश्रमों में से वानप्रस्थ और संन्यास आश्रमों में परोपकार को ही जीवन का मुख्य लक्ष्य माना गया है। जैन धर्म में दान को अहिंसा के सिद्धांत के साथ जोड़ा गया है। भारत भूमि की देन बौद्ध धर्म में भी दान का खासा महत्व है जो सभी प्राणियों के कल्याण के लिए होता है। भगवान बुद्ध ने अपने जीवनकाल में दान, सेवा और अहिंसा का मार्ग दिखाया। गांधी जी ने सर्वोदय के सिद्धांत पर बल दिया और ग्रामीणों की सेवा और विकास के लिए जीवन भर काम किया। मदर टेरेसा ने भी गरीबों, बीमारों और जरूरतमंदों की सेवा करके मानवता की सेवा की। रतन टाटा की तरह बिड़ला समूह , अजीम प्रेमजी, नंदन नीलकेणी, शिव नाडार जैसे सैकड़ों उद्योगपति परोपकार से जुड़े कार्यों के लिए हर साल हजारों करोड़ रुपया दान देते हैं। भारत के कारोबारियों के डीएनए में समाज सेवा है। टाटा समूह के संस्थापक जमशेदजी टाटा की दूरदृष्टि से स्थापित इस समूह ने शुरू से ही समाज सेवा को अपने कार्यों का अभिन्न अंग बनाया है। जमशेद जी के परोपकार के प्रेरणा स्रोत स्वामी विवेकानंद थे, जिसे अब उनकी तीसरी पीढ़ी भी निभा रही है ।इसी तरह जिस फक्कड़ संन्यासी के आशीर्वाद से घनश्याम दास बिड़ला ने अपना उद्योग जमाया, उस संन्यासी के आशीर्वाद से करनी और बरनी का काम आज भी बिड़ला समूह अपना रहा है। यह अपने धर्मार्थ कार्यों के माध्यम से भारत में समाज के विभिन्न क्षेत्रों में सकारात्मक प्रभाव डालता है, जो देश के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। जमशेदजी टाटा को यह प्रेरणा स्वामी विवेकानंद जी से ही प्राप्त हुई थी। शिकागो के सर्व धर्म सम्मेलन में जाने के पूर्व जब वे दक्षिण भारत का भ्रमण कर रहे थे तो उन्हें यह बात खली कि दक्षिण भारत में विज्ञान की उच्चतर शिक्षा प्रदान करने वाला कोई संस्थान नहीं है ।तब उन्होंने विचार किया कि इस काम में टाटा स्टील के संस्थापक जमशेदजी नसरवानजी टाटा उपयुक्त व्यक्ति होंगें और उन्होंने शिकागो जाने के पूर्व उन्हें एक पत्र लिखा ।स्वामीजी ने टाटा को लिखा कि ह्लआप बिहार के जमशेदपुर से अच्छा पैसा कमा रहे हो। मेरी शुभकामना है कि और ज्यादा धन अर्जित करो और ज्यादा लोगों को रोजगार दो। लेकिन, विज्ञान की उच्चतर शिक्षा से वंचित दक्षिण भारत की भी थोड़ी चिंता करो और दक्षिण भारत में कहीं भी विज्ञान की ऊँची पढाई और रिसर्च का कोई बढ़िया संस्थान स्थापित करो। मैं जानता हूँ कि तुम यह कर सकते हो और विश्वास ही कि तुम ऐसा ही करोगे। स्वामी विवेकानंद जी की इस प्रेरक चिट्ठी पढ़ने के बाद जमशेदजी इतने प्रेरित हुए कि उन्होंने बैंगलुरु में तत्काल ही एक विज्ञान का बढिया संस्थान शुरू कर दिया जो आज इण्डियन इंस्टिट्यूट ऑफ साइंस के नाम से विश्व विख्यात हैं और जो प्रतिभाशाली बच्चे वैज्ञानिक बनाना चाहते है, या रिसर्च या अध्यापन कार्य में अपना करियर बनाना चाहते हैं वे किसी भी आईआईटी में जाने से ज्यादा आईआईएस में जाना ज्यादा पसंद करते हैं। महात्मा बुद्ध, गुरु नानक, और अन्य संतों ने भी परोपकार पर जोर दिया। मध्ययुगीन भारत में, राजाओं और धनिकों द्वारा अनेक धर्मार्थ संस्थानों की स्थापना की गई, जो स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा, और गरीबों की सहायता के लिए समर्पित थे। आपको हरेक गांव, कस्बे, शहर वगैरह में गैर सरकारी प्रयासों से चल स्कूल, कॉलेज, धर्मशालाएं, लंगर और प्याऊ वगैरह मिल जाते हैं। स्वामी विवेकानंद ने दीन-दुखिया जन के लिए सेवा को सर्वोच्च धर्म बताया। उनका मानना था कि सामाजिक सेवा ही सच्चा धर्म है। विवेकानंद ने सर्वधर्म समभाव और मानवतावाद का संदेश देते हुए, हर व्यक्ति के कल्याण के लिए काम किया। उन्होंने रामकृष्ण मिशन की स्थापना की, जो आज भी भारत में विभिन्न क्षेत्रों में सामाजिक सेवाएं प्रदान करता है। अभी कुछ दिन पहले शारदीय नवरात्र समाप्त हुए। इस दौरान देश की राजधानी दिल्ली समेत देश के तमाम शहरों में भंडारे चलते रहे। आप कह सकते हैं इस दौरान भंडारों की बहार थी। सब भंडारे के प्रसाद को प्रसन्नता पूर्वक ग्रहण कर रहे थे। भंडारों में समाज वादी व्यवस्था वास्तव में बहुत प्रभावशाली होती है। भंडारों में प्रसाद के रूप में बंटते हैं छोले,कुलचे,हलवा,पूढ़ी-आलू, ब्रेड पकोड़ा आदि। कुछ भंडारों में खीर का प्रसाद भी वितरित होता है। देश की राजधानी दिल्ली भंडारों की भी राजधानी है। कहने वाले कहते हैं कि कैसेट किंग गुलशन कुमार ने भंडारा संस्कृति का पुनर्जागरण किया था। उन्होंने वैष्णो देवी में भंडारे का आयोजन शुरू किया था। तब दिल्ली वाले वैष्णो देवी में जाकर गुलशन कुमार की तरफ से चलने वाले भंडारे में भोग अवश्य लगाया करते थे। यहां से ही भंडारा संस्कृति न पैर जमाए थे। भंडारे के प्रसाद की बात ही अलग होती है। इसका स्वाद अतुल्नीय होता है। ये भंडारे की महिमा ही मानी जाएगी। भंडारा अपने आप में जात-पात और वर्ग की दीवारों को तोड़ता है। इसमें सब प्रेम से प्रसाद लेते हैं। भंडारे का प्रसाद पूरे अनुशासन से लिया जाता है। कनॉट प्लेस में रोज हजारों लोग नवरात्रों के दौरान भंडारे का प्रसाद खाते हैं।जो भंडारा आयोजित करते हैं, वे या तो हनुमान मंदिर के आगे से प्रसाद खरीद कर बांट देते हैं या फिर खुद ही कहीं से बनवा कर लाते हैं। भंडारों की एक खास बात ये भी है कि इनसे प्रसाद हिन्दू, मुसलमान,सिख, ईसाई सब ग्रहण करते हैं। साउथ दिल्ली के पिलंजी गांव में कुछ युवकों ने कुछ साल पहले बालाजी कुनबा नाम से एक संगठन स्थापित किया। इसका मकसद है भूखों की भूख मिटाना।

चीन से समझौता अहम, लेकिन भरोसे की ज्यादा अपेक्षा

यह ध्यान रहे कि अतीत में चीन ने अपने अति महत्वाकांक्षी एवं अतिक्रमणकारी रवैये को तभी छोड़ा है, जब भारत ने यह जताने में संकोच नहीं किया कि वह बहुपक्षीय सहयोग के ब्रिक्स और एससीओ जैसे संगठनों को अपेक्षित महत्व देने से इन्कार कर सकता है। अब चीन को झुकना उसकी विवशता बन गयी है, क्योंकि उसे यह आभास हुआ कि भारत का असहयोग उसके आर्थिक हितों पर प्रतिकूल असर डाल सकता है। ऐसा हुआ भी है कि भारत ने चीन को अपने देश में बाजार नहीं बनने दिया, जिसका बड़ा खामियाजा उसे भुगतना पड़ा है। चीन की अर्थ-व्यवस्था में भारत की महत्वपूर्ण भूमिका है। निःसंदेह संबंध सामान्य होने से चीन के आर्थिक हित सधेंगे, लेकिन भारत को अपने आर्थिक हितों को सर्वोच्च प्राथमिकता देनी होगी।

ललित गर्ग

लेखक

गलवान संघर्ष के बाद भारत-चीन दोनों देशों के रिश्तों में एक बर्फ सी जम गई थी, वह बर्फ अब पिघलती-सी प्रतीत हो रही है। दोनों देश रूस के कजान शहर में ब्रिक्स शिखर सम्मेलन की पूर्व संध्या पर पूर्वी लद्दाख में वास्तविक नियंत्रण रेखा यानी एलएसी पर गश्त लगाने पर एक समझौते पर पहुंचे हैं। दोनों देशों के बीच लम्बे समय से चले आ रहे तनाव के बादल अब छंट सकते हैं। सीमा विवाद से जुड़े इस फैसले के गहरे कूटनीतिक व सामरिक निहितार्थ हैं। लेकिन इस फैसले का अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक समीकरणों पर भी गहरा प्रभाव पड़े गा, इससे दुनिया की महाशक्तियों के निरंकुशता को नियंत्रित किया जा सकेगा, ब्रिक्स समूह को ताकतवर बनाने के प्रयासों में सफलता मिलेगी। यह घटनाक्रम उस विश्वास को भी मजबूती देगा, जिसमें कहा जा रहा है कि मोदी और शी जिनपिंग यूक्रेन-रूस संघर्ष में मध्यस्थ की भूमिका निभा सकते हैं। इन आशा एवं सकारात्मक दृष्टिकोणों के बावजूद एक बड़ा प्रश्न चीन के पलटूराम नजरिये को लेकर निराश भी करता है। भारत को गहरे तक इस बात का अहसास है कि बीजिंग को सीमा समझौतों की अवहेलना करने की पुरानी आदत है। उसने अनेक बार भारत के भरोसे को तोड़ा है। पूर्व के अनुभवों से ऐसी आशंकाओं से इनकार नहीं किया जा सकता है। हालिया फैसले का भी ऐसा ही कोई हश्र न हो जाये, इसके लिये भारत को फूंक-फूंक कर कदम रखने की जरूरत है। भारत-चीन दोस्ती महत्वपूर्ण ही नहीं, बल्कि उपयोगी भी है। यह दोनों देशों के हित में होने के साथ दुनिया में शांति, स्थिरता, सौहार्द एवं आर्थिक विकास की भी जरूरत है। इसीलिये प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी व चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने दोस्ती की तरफ कदम बढ़ाते हुए हाथ मिलाये हैं और सौहार्दपूर्ण बातचीत के लिये टेबल पर बैठे हैं। गलवान संघर्ष के चार साल बाद आखिरकार दोनों देश निकट आये है, परस्पर वार्ता का गतिरोध दूर हुआ है, दुनिया को कुछ सकारात्मक एवं आशाभरा दिखाने की संभावनाएं बढ़ी है। इस गतिरोध के चलते दोनों देशों के बीच लगातार तनाव एव संघर्ष का माहौल बना रहा है, व्यापारिक गतिविधियां रूक-सी गयी थी, एक बेहद जटिल भौगोलिक परिस्थितियों में दोनों देशों की सेनाओं को चौबीस घंटे तैयार रहने की स्थिति में खड़ा कर दिया था। लेकिन अब ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में दोनों देशों के निकट आने के घटनाक्रम से एक बड़ा संदेश भी दुनिया में जाएगा कि दोनों देश बातचीत के जरिये अपने मतभेदों को सुलझा सकते हैं। द्विपक्षीय वार्ता के बाद दोनों देशों के संबंध सामान्य होने की संभावना बढ़ अवश्य गई है, लेकिन इसमें समय लगेगा, क्योंकि बीते चार वर्षों में चीन ने अपनी हरकतों से भारत का भरोसा खोने का काम किया है। भारतीय प्रधानमंत्री और चीनी राष्ट्रपति के बीच करीब पांच वर्षों के बाद विस्तार से वार्ता इसीलिए हो सकी, क्योंकि चीन देपसांग एवं डेमचोक से अपनी सेनाएं पीछे हटाने और सीमा पर निगरानी की पहली वाली स्थिति बहाल करने पर सहमत हुआ। यह एक अच्छा एवं शुभ संकेत है। प्रधानमंत्री मोदी ने सीमा पर शांति की अपेक्षा करते हुए चीन से कहा है कि आपसी विश्वास एवं सहयोग को बढ़ावा देने के साथ एक-दूसरे की संवेदनशीलता का सम्मान किया जाना चाहिए। यह कहना आवश्यक एवं प्रासंगिक था, क्योंकि चीन यह तो चाहता है कि भारत उसके हितों को लेकर अतिरिक्त सावधानी बरते, लेकिन खुद उसकी ओर से भारत के प्रति अपेक्षित संवेदनशीलता को लगातार नजरअंदाज करता रहा था। इसका प्रमाण यह है कि वह कभी कश्मीर तो कभी अरुणाचल प्रदेश को लेकर मनगढ़ंत दावे करता रहा है। इसकी भी अनदेखी नहीं कर सकते कि चीन किस तरह पाकिस्तान को भारत के खिलाफ मोहरे की तरह इस्तेमाल करता रहा है। चीन पाकिस्तान के उन आतंकियों का संयुक्त राष्ट्र में बचाव करता रहा है, जो भारत के लिए खतरा हैं। चीन किये गये वायदों एवं समझौतों से पीछे हटता रहा है, चीनी राष्ट्रपति ने दोनों देशों के बीच 1993, 1996, 2005 और 2013 में परस्पर भरोसा पैदा करने वाले समझौतों को पूरी तरह नजरअंदाज कर दिया। उन्होंने अपनी सेना को भारतीय दावे वाले इलाकों में अतिक्रमण करने का आदेश दिया। इसी का अंजाम रही जून 2020 में गलवान घाटी जैसी घटना। इसके बावजूद भारत के राजनीतिक और सैन्य नेतृत्व ने बहुत संयम बरता, भड़काने वाली परिस्थितियों में भी उन्होंने धैर्य से काम लिया और बातचीत के जरिये ही मामले का हल निकाला। लेकिन, चिंता कम नहीं हुई है। पिछले साढ़े चार बरसों के दौरान चीनी सेना ने बेहद दुर्गम पर्वतीय इलाकों में पक्के निर्माण कर लिए हैं। आशंका है कि चीन अपने इन सैन्य ढांचागत निर्माण को ध्वस्त कर इलाका पूरी तरह छोड़ देने के लिए तैयार होगा भी या नहीं? ऐसी स्थिति में पूर्वी लद्दाख के सीमांत इलाकों में सैन्य तनाव और परस्पर अविश्वास की स्थिति बनी रहेगी। भारतीय सामरिक पर्यवेक्षकों के बीच चीन के इरादों को लेकर शक बना रहेगा, क्योंकि हमारे इस पड़ोसी का भरोसा तोड़ने का पुराना इतिहास रहा है। लेकिन देर आये दुरस्त आये की कहावत के अनुसार चीन को भारत से दोस्ती का महत्व समझ आ गया है तो यह दोनों देशों के साथ समूची दुनिया के हित में है। भारतीय प्रधानमंत्री और चीनी राष्ट्रपति की मुलाकात के बाद दोनों देशों के विशेष प्रतिनिधि भी शीघ्र टेबल पर बैठकर भरोसे एवं विश्वास बहाली के उपायों पर चर्चा करेंगे, लेकिन भारत को इसकी अनदेखी नहीं करनी चाहिए कि चीन कहीं दो कदम आगे बढ़कर चार कदम पीछे न हट जाये, ऐसा पहले भी हो चुका है। भारत को चीन से संबंध सामान्य करने की दिशा में आगे बढ़ने के पहले इसकी पड़ताल करनी चाहिए कि कहीं वह फिर से वैसी हरकत तो नहीं करेगा, जैसी डोकलाम, गलवन, देपसांग आदि में की है।

मोदी-जिनपिंग संवाद के मायने

पांच साल के बाद प्रधानमंत्री मोदी और चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग की मुलाकात हुई और करीब 50 मिनट तक बातचीत हुई। यह एक महत्वपूर्ण द्विपक्षीय प्रयास माना जा सकता है। दोनों नेताओं ने हाथ मिलाए। अपने-अपने राष्ट्रीय ध्वजों की पृष्ठभूमि में मुलाकात हुई। कुछ मुस्कराए भी, लेकिन प्रधानमंत्री मोदी की मुलाकात की जो शैली होती है, वह गायब रही। दोनों नेता आलिंगनबद्ध नहीं हुए। मुलाकात में गर्मजोशी और अंतरंगता महसूस नहीं हुई। इस द्विपक्षीय संवाद को अंतिम और निर्णायक भी नहीं माना जा सकता। एक तानाशाह किस्म के देश और एक लोकतांत्रिक देश के राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री के बीच ऐसी मुलाकात और बातचीत, बेशक, एक महत्वपूर्ण कदम है। उसके जरिए आगे का रास्ता तय किया जा सकता है। यह दो समान शक्तियों के दरमियान समान स्तर का संवाद भी नहीं था, क्योंकि चीन भारत से करीब 6 गुना बड़ी अर्थव्यवस्था वाला देश है। सामरिक स्तर पर भी चीन एक वैश्विक महाशक्ति है। फिर भी 5 साल के गतिरोध के बाद चीन भारत के साथ द्विपक्षीय बातचीत को सहमत हुआ, इसे प्रत्येक लिहाज से कमतर नहीं आंकना चाहिए। चीन भारत को प्रतिस्पर्द्धी नहीं, सहयोगी मानता है, यह चीन की नई सोच है। दोनों नेताओं ने वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) पर गश्त करने और सेनाओं के पीछे हटने के समझौते का स्वागत किया है। दोनों नेता मानते हैं कि उनकी सीमाओं पर शांति और स्थिरता रहनी चाहिए। सीमा विवाद निपटाने के लिए विशेष प्रतिनिधि नियुक्त किए गए हैं। भारत की तरफ से राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजित डोभाल और चीन से विदेश मंत्री वांग यी जल्द ही औपचारिक बैठकें शुरू करेंगे। राष्ट्रपति जिनपिंग ने कहा है कि चीन और भारत को एक-दूसरे के प्रति अच्छी धारणा रखनी चाहिए। पड़ोसी होने के नाते सद्भाव से रहने के लिए सही रास्ता खोजने पर काम करना जरूरी है। दोनों का मानना है कि भारत-चीन के संबंध उनके देशों के लिए ही नहीं, बल्कि वैश्विक स्तर पर भी अहम हैं। प्रधानमंत्री मोदी ने रेखांकित किया कि परस्पर विश्वास, परस्पर सम्मान और परस्पर संवेदनशीलता के आधार पर ही दोनों देशों के संबंध तय होने चाहिए। लब्बोलुआब यह रहा कि दोनों देश शांति, स्थिरता, सद्भाव, सौहार्द के पक्षधर हैं, लेकिन सवाल है कि क्या ऐसा संभव और व्यावहारिक होगा? अधिकतर राजनयिक और रक्षा विशेषज्ञ बार-बार यह कह रहे हैं कि चीन की फितरत पर भरोसा नहीं करना चाहिए और भारतीय सैनिकों को हरदम सचेत रहना चाहिए। दरअसल भारत 1947 और चीन 1949 में स्वतंत्र हुए। उस दौर में दोनों ही देश समान स्थितियों में थे। 1960, ह्ल65,ह्ल70,ह्ल80 और 1987 के कालखंडों तक भारत-चीन की अर्थव्यवस्था में कोई खास अंतर नहीं था। हालांकि भारत 23.2 लाख करोड़ रुपए की जीडीपी के साथ चीन की 22.7 लाख करोड़ रुपए की अर्थव्यवस्था से आगे था। 1990 के दशक में प्रधानमंत्री नरसिम्हा राव ने देश की अर्थव्यवस्था को खोला और आर्थिक उदारीकरण, भूमंडलीकरण का दौर शुरू हुआ। वहीं से चीन ने हमें पीछे करना शुरू किया। चीन ने कृषि का निजीकरण किया। उसे वामपंथी शासन और कायदे-कानूनों से मुक्त रखा। चीन ने गांव-गांव में औद्योगिक जोन बनाए, नतीजतन ग्रामीणों का शहर की ओर पलायन नहीं हुआ। गांव में ही रोजगार का प्रबंध किया गया। भारत में जातियों पर राजनीति चल रही थी और गठबंधन सरकारें बेहद अनिश्चित और अस्थिर थीं। चीन के लोगों ने रात-दिन मेहनत की। वहां उस दौर में किसान की औसत सालाना आमदनी 15 लाख रुपए थी, जबकि भारत में यह औसत 1.5 लाख से भी कम थी। चीन ने तय किया कि 9 साल तक स्कूल में पढा अनिवार्य होगा। शिक्षा के साथ-साथ कौशल पर भी गहरा ध्यान दिया गया। नतीजा सामने है कि आज चीन को ह्यदुनिया की फैक्टरीह्ण माना जाता है। चीन 1522 लाख करोड़ रुपए और भारत 324 लाख करोड़ रुपए की अर्थव्यवस्था वाला देश है। भारत भी तेजी से विकास कर रहा है, लेकिन चीन सीमेंट, इस्पात, जूते, सोलर पैनल, एयरकंडीशनर, मोबाइल आदि की ह्यमंडीह्ण बना है। दुनिया कई स्तरों पर चीन पर आश्रित है।

उपविकास आयुक्त ने लौरिया प्रखंड कार्यालय का किया निरीक्षण

ग्राम पंचायत राज गोबरौरा एवं सिंहपुर सतवरिया में खेल के मैदान का भी किया निरीक्षण

प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण, मनरेगा एवं लोहिया स्वच्छ बिहार अभियान योजना से संबंधित कार्यों की हुई समीक्षा

प्रात : किरण, संवाददाता

बेतिया।उप विकास आयुक्त सुमित कुमार के द्वारा शुक्रवार को लौरिया प्रखंड का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के क्रम में ग्राम पंचायत राज गोबरौरा एवं सिंहपुर सतवरिया में खेल के मैदान का निरीक्षण किया गया।

उपस्थित कार्यक्रम पदाधिकारी, मनरेगा एवं कनीय अभियंता, मनरेगा को अविलंब प्राक्कलन तैयार करने का निदेश दिया गया। तत्पश्चात प्रखंड कार्यालय लौरिया का निरीक्षण किया गया।

निरीक्षण के क्रम में अभिलेखो के रख-रखाव तथा पंजी का विधिवत संधारण हेतु प्रखंड विकास पदाधिकारी को निदेशित किया गया। प्रखंड कार्यालय लौरिया का निरीक्षण के क्रम में उपस्थित प्रखंड स्तरीय पदाधिकारी के साथ प्रधानमंत्री आवास योजना ग्रामीण, मनरेगा एवं लोहिया स्वच्छ बिहार अभियान योजना से संबंधित समीक्षा की गयी।

प्रधानमंत्री आवास योजना ग्रामीण समीक्षा में पाया गया कि प्रखंड में वित्तीय वर्ष 2016-17 एवं 2021-22 में कुल 18 आवास अपूर्ण जिसे अविलंब पूर्ण कराने का निदेश दिया गया। तथा वित्तीय वर्ष 2024-25 के

लक्ष्य के विरूद्ध शतप्रतिशत आवासो को 31 दिसम्बर तक पूर्ण कराने का निदेश प्रखंड विकास पदाधिकारी को दिया गया।

लोहिया स्वच्छ बिहार अभियान डब्लू०पी०यू० के निर्माण की समीक्षा की गयी। समीक्षा के क्रम में पाया गया कि ग्राम पंचायत राज सिंहपुर सतवरिया, बसवरिया पराउ टोला एवं बगही बसवरिया में डब्लू०पी०यू० निर्माण से संबंधित कार्य भूमि विवाद के कारण लंबित है, जिसे हल करते हुए कार्य प्रारंभ कराने हेतु अंचल अधिकारी एवं प्रखंड विकास पदाधिकारी, लौरिया को निदेशित किया गया। लोहिया स्वच्छ बिहार अभियान अंतर्गत आई०एच०एच०एल० से संबंधित लंबित आवेदन का पोर्टल पर इन्ट्री/जियो टैग एवं

भुगतान से संबंधित कार्य यशाशीघ्र पूर्ण करने हेतु प्रखंड विकास पदाधिकारी को निदेशित किया गया।

मनरेगा निरीक्षण के क्रम में पाया गया कि कार्यक्रम पदाधिकारी द्वारा मात्र दो हीं खेल के मैदान को चिन्हित किया गया है, जिसपर उप विकास आयुक्त, महोदय द्वारा नाराजगी व्यक्त की गयी एवं कार्यक्रम पदाधिकारी को निदेशित किया गया कि प्रत्येक पंचायत में खेल का मैदान चिन्हित कर प्राक्कलन तैयार करना सुनिश्चित करें। प्रखंड कार्यालय के निरीक्षण के क्रम में प्रखंड कार्यालय के चाहर दिवारी का निर्माण कराने हेतु प्रखंड विकास पदाधिकारी को निदेशित

जिलाधिकारी के जनता दरबार में 80 मामलों की हुई सुनवाई

कई मामलों का हुआ ऑन-द-स्पॉट समाधान

प्रात : किरण, संवाददाता

बेतिया(घनश्याम)। जिलाधिकारी कार्यालय प्रकोष्ठ में शुक्रवार को जनता दरबार का आयोजन किया गया। जिलाधिकारी दिनेश कुमार राय ने लोगों की समस्याओं एवं शिकायतों को बारी-बारी से सुना। जनता दरबार में कई समस्याओं एवं शिकायतों का ऑन-द-स्पॉट समाधान कराया गया। साथ ही कई मामलों में संबंधित प्रशासनिक एवं पुलिस अधिकारियों को फोन कर समस्याओं का समाधान करने के लिए शीघ्र समुचित कार्रवाई करने का निर्देश दिया गया। जिलाधिकारी के जनता दरबार में 80 मामले आए। जिन मामलों का समाधान आज नहीं हो सका, उसे संबंधित विभाग/अधिकारियों को भेजते हुए त्वरित गति से नियमानुकूल समाधान कराने हेतु निर्देशित किया गया।

जनता दरबार में कई तरह के मामले आए। जिसमें शिक्षा, आपूर्ति, आइसीडीएस, आवास, स्वास्थ्य, राजस्व से जुड़ी समस्या आदि शामिल हैं। जिलाधिकारी ने हर मामले को बहुत गौर से सुना और नियमानुसार समाधान की दिशा में आवेदन को आगे बढ़ाया। जिन लोगों द्वारा अपनी समस्याओं से जिलाधिकारी को अवगत कराया गया उनमें नरेश प्रसाद यादव, सुमेला खातून, रामपुकार मिश्रा, मैरून नेशा, मथुरा साह, कांति कुंवर, सोहन साह, सोबरन बैठा, अशरफ जमाल, एजाज अहमद, प्रेमचंद महतो, मुकेश कुमार आदि के नाम शामिल हैं।इस अवसर पर उप विकास आयुक्त सुमित कुमार, अपर समाहर्ता राजीव कुमार सिंह सहित अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

संक्षिप्त खबरें

पिपरा मे विदेशी शराब बरामद,कारोबारी पर मामला दर्ज

प्रात : किरण, संवाददाता

बनियापुर। सहाजितपुर थाना क्षेत्र के पिपरा गाव मे पुलिस को मिली गुप्त सूचना के आधार पर की गयी छापामारी मे पुलिस ने शराब कारोबारी के घर से 15. 8,25 लीटर विदेशी शराब बरामद किया,वही पुलिस की भनक पर कारोबारी बाप- बेटा फरार होने मे सफल रहे। मामले मे पुलिस पदाधिकारी लाल बहादुर सिंह के ब्यान पर दर्ज प्राथमिकी मे बताया गया है कि पुलिस संध्या गस्ती मे वाहन चेकिंग व शराब छापमारी मे निकली थी कि सूचना के अनुरूप पिपरा गाव मे शराब कारोबारी बिपुल कुमार सिंह पिता सुभाष सिंह दोनो मिलकर शराब का होम डिलेवरी करते है तथा कारोबार करते है,सूचना की सत्यापन मे पहुंची पुलिस को देख दोनो बाप बेटा घनी आबादी होने के कारण पुलिस बल को चकमा देकर भागने मे सफल हो गए,तलाशी के क्रम मे उनके पुराने कोठरी के बक्सा से 15. 825 लीटर लीटर विदेशी शराब बरामद करते दोनो को सुसंगत धाराओं मे नामजद किया गया है।

नेटवर्क के सुस्त चाल से लोग परेशान

प्रात : किरण, संवाददाता

बगहा। बगहा पुलिस जिला स्थित दोन इलाके के तमाम क्षेत्र में फोन नेटवर्क की सुस्त चाल से आम लोग परेशान है। बतादें की दोन क्षेत्र अत्यंत पिछड़ा थारू बाहुल्य क्षेत्र है।जहां विकास की रफ्तार बहुत धीमी है। यह क्षेत्र मूलभूत सुविधाओं के अभाव से जूझ रहा है। ऐसे में फोन नेटवर्क के जरिये अन्य क्षेत्र से संपर्क करने में असमर्थ लोगों ने सम्बंधित अधिकारियों से गुहार लगाई है।स्थानिय ग्रामीणों का कहना है कि व्यपार से लेकर नाते रिश्तेदारों से भी संपर्क करने में परेशानी हो रही है। उन लोगों का मानना है कि फोन नेटवर्क सुविधा कहीं न कहीं विकास की गति को प्रभावित करती है। इस लिए आज के दौर में नेटवर्क विकास के गति में अहम भूमिका निभाने में मुख्य भूमिका निभा रही है ऐसे में दोन क्षेत्र के लोग फोन नेटवर्किंग अधिकारियों से अविलंब पहल कर नेटवर्क की सुस्त चाल को दुरुस्त करने की मांग की है।

फरार आरोपी को पुलिस ने किया की गिरफ्तारी

जलालपुर। सारण जिला के जलालपुर थाना के सकडी निवासी सुधांशु पांडे की गिरफ्तारी जिनके पिता का नाम मुनेश्वर पांडे है जो जलालपुर थाने के सकडी गांव के रहने वाले हैं विगत 7 महीना पहले दो पक्षों में हुई थी मारपीट झगड़ा जिस मामले में 7 महीने से फरार चल रहा था सुधांशु पांडे जिनकी गिरफ्तारी आज जलालपुर थाने में हुई और उन्हें जेल भेज दिया गया ।

हाईवा ट्रक ने पेड़ में मारी ठोकर

प्रात : किरण, संवाददाता

परसा।परसा-बनकेरवा परसा मुख्य पथ पर दरियापुर थाना क्षेत्र के सैदपुर कब्रिस्तान के समीप शुक्रवार की अहले सुबह अनियंत्रित हाईबा ने सड़क किनारे पेड़ मे जोरदार ठोकर मार दिया.जिससे पेड़ जड़ से उखड़ गया.तथा हाईबा की अगला भाग छतिग्रस्त हो गया.चालक तथा उप चालक बाल बाल बच गया घटना के सबंध में बताया जाता है कि हाईबा सोनपुर रेवा बांध के रास्ते बनकेरवा बांध से कट कर परसा बाजार की तरफ आ रहा था.इसी दौरान चालक द्वारा नियंत्रण खो दिया।

सारन जिला में मां के नाम एक लाख पेड़ लगाने का लक्ष्य

प्रात: किरण, संवाददाता

छपरा कोर्ट।बिहार राज्य विधिक अधिकार पटना के निर्देश पर जिला विधिक सेवा प्राधिकार के तत्वावधान में सारण जिला प्रशासन और सरण पुलिस के सहयोग से एक पेड़ मां के नाम पर लगाने के लिए संपूर्ण सारण जिला में 26 अक्टूबर को वृक्षारोपण किया जाएगा जिसका उद्घाटन जिला विधिक सेवा प्राधिकार के अध्यक्ष सह विद्वान प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश पुनीत कुमार गर्ग, सारण जिला विधिक सेवा प्राधिकार के सचिव धर्मेंद्र कुमार पांडे जिला अधिकारी सह उपाध्यक्ष सारन जिला विधिक सेवा प्राधिकार अमन समीर तथा पुलिस अधीक्षक सह सदस्य सारण जिला विधिक सेवा प्राधिकार डॉक्टर कुमार आशीष के द्वारा 26 अक्टूबर को जयप्रकाश विश्वविद्यालय परिसर में प्रातः 9:30 बजे चार हजार पेड़ों को लगाकर उद्घाटन किया जाएगा। जिला के प्रत्येक प्रखंड के प्रखंड कार्यालय सरकारी विद्यालय के परिसर में एक एक पेड़ मां के नाम लगाने का लक्ष्य रखा गया है।

सदर अस्पताल में मरीजों को स्वच्छ वातावरण में अच्छी स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराएं : डीडीसी

- **सदर अस्पताल का उप विकास आयुक्त और अनुमंडल पदाधिकारी ने किया निरीक्षण**
- **विभिन्न वार्डों का लिया जायजा, साफ-सफाई का दिया निर्देश**

प्रातः किरण, संवाददाता

छपरा। सारण के उपविकास आयुक्त यतेंद्र कुमार पाल और सदर अनुमंडल पदाधिकारी लक्ष्मण तिवारी द्वारा छपरा सदर अस्पताल का निरीक्षण किया गया। डीडीसी के द्वारा ओपीडी, दवा वितरण केंद्र, निबंधन केंद्र, इमरजेंसी वार्ड का गहनता से निरीक्षण किया गया। उन्होंने कहा कि सदर अस्पताल में आने वाले मरीजों को गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सुविधाएं मुहैया कराएं। सदर अस्पताल के इमरजेंसी वार्ड में प्रतिदिन चादर बदला जाए, और साफ-सफाई का विशेष ख्याल रखें।वार्ड की साफ-सफाई और स्वच्छता पर जोर दिया। उन्होंने निर्देश दिए कि प्रतिदिन चादर बदले जाएं और सफाई का विशेष ध्यान रखा जाए। यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है कि मरीजों को एक स्वच्छ और सुरक्षित वातावरण मिले। डीडीसी ने सिविल सर्जन को आदेश दिया कि आयुष्मान कार्ड बनाने में तेजी लाएं और आयुष्मान सेंटर को नियमित संचालन किया जाए। उन्होंने बताया कि मरीजों को स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ उठाने के लिए आयुष्मान कार्ड की आवश्यकता होती है, इसलिए इसे प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

उन्होंने कहा कि सदर अस्पताल में जल्द हीं आधार सेंटर खोला जायेगा, जिससे नागरिकों को आधार कार्ड बनाने की सुविधा मिल सके। यह कदम लोगों के लिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि इससे उनकी अन्य सरकारी सेवाओं का उपयोग करना सरल हो जाएगा। दवा वितरण काउंटर पर मरीजों को शत-प्रतिशत दवा मिले इसके लिए ऑनलाइन दवा इंडेंट और उठाव सुनिश्चित करें।उन्होंने कहा कि दवा की कमी नहीं होनी चाहिए और इसकी व्यवस्था को नियमित रूप से अपडेट किया जाना चाहिए।

जन्म प्रमाण पत्र बनाने के कार्य में तेजी लाएं। उन्होंने कहा कि यह प्रक्रिया सुगम होनी चाहिए ताकि नागरिकों को समय पर प्रमाण पत्र मिल सके। डीडीसी ने एक सप्ताह के अंदर व्यवस्था को सुदृढ़ करने का आदेश दिया।

अस्पताल प्रशासन को एक सप्ताह के भीतर सभी व्यवस्थाओं को सुदृढ़ करने का आदेश दिया। उन्होंने कहा कि सभी कदम उठाए जाएं ताकि मरीजों को बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं मिल सकें। इस मौके पर सदर अनुमंडल पदाधिकारी लक्ष्मण तिवारी, सिविल सर्जन डॉ सागर दुलाल सिन्हा, अस्पताल उपाधीक्षक, डीपीएम अरविन्द कुमार, अस्पताल प्रबंधक राजेश्वर प्रसाद, लेखपाल बंटी कुमार रजक, सिफार के डिवीजनल कोऑर्डिनेटर गनपत आर्यन समेत अन्य मौजूद थे।

जेपीयू का परीक्षा विभाग ने जारी किया पार्ट थर्ड का परीक्षा शेड्यूल

प्रात : किरण, संवाददाता

छपरा सदर। जयप्रकाश विश्वविद्यालय के परीक्षा विभाग के द्वारा स्नातक पार्ट थर्ड 2020-23 के लिए परीक्षा का शेड्यूल जारी कर दिया गया है। इस बात की जानकारी देते हुए जे पी यू के परीक्षा नियंत्रक डॉ अशोक कुमार मिश्रा ने बताया कि उक्त परीक्षा 16 नवंबर से शुरू होकर 25 नवंबर तक ली जाएगी ।उन्होंने कहा की परीक्षा को कदाचार मुक्त एवं शांतिपूर्ण तरीके से संपन्न करने के लिए विभिन्न विषयों को चार ग्रुपों में बांटा गया है ग्रुप ए में अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, अंग्रेजी, उर्दू, गणित और ग्रामीण अर्थशास्त्र, ग्रुप - बी में

इतिहास, एआईएच और सी, संस्कृत, हिंदी, दर्शन, संगीत और भोजपुरी, ग्रुप सी में राजनीति विज्ञान, प्राणीशास्त्र, वनस्पति विज्ञान, गृह विज्ञान और वाणिज्य तथा ग्रुप - डी में मनोविज्ञान, रसायन विज्ञान, भौतिकी, भूगोल और आईएफएफ को रखा गया है। उक्त परीक्षा दो पालियों में ली जाएगी जिसमें

प्रथम पाली का समयः प्रातः 09:00 बजे से अपराह्न 12:00 बजे तक तथा दूसरी पाली का समयः दोपहर 01:15 बजे से शाम 04:15 बजे तक निर्धारित किया गया गया है।

उन्होंने यह भी कहा कि परीक्षा में बड़े पैमाने पर अनुचित साधनों के प्रयोग की रिपोर्ट पर वॉकआउट/बाहर रहने/रद्द करने की स्थिति में कोई परीक्षा आयोजित नहीं की जाएगी।

विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित केन्द्र के अलावा किसी अन्य केन्द्र पर कोई परीक्षा आयोजित नहीं की जाएगी।केंद्र में कोई परिवर्तन नहीं किया जाएगा।परीक्षा हॉल में मोबाइल फोन ले जाने की अनुमति नहीं होगी, यदि ऐसा पाया गया तो उसे जब्त कर लिया जाएगा तथा वापस नहीं किया जाएगा।

11 नवम्बर से शुरू होगा मिशन परिवार विकास अभियान: सीएस

30 नवम्बर तक पुरुष नसबंदी पखवाड़ा का होगा आयोजन

प्रात : किरण, संवाददाता

बेतिया(घनश्याम)।पश्चिमी चंपारण जिले में 11 नवम्बर से मिशन परिवार विकास अभियान शुरू होने जा रहा है। 30 नवम्बर तक इसके तहत पुरुष नसबंदी पखवाड़ा भी आयोजित किया जाएगा। 11 नवम्बर से 17 नवम्बर तक ह्रदम्पत्ति सम्पर्क सप्ताहह्र एवं 18 नवम्बर से 30 नवम्बर तक ह्रपरिवार नियोजन सेवा पखवाड़ाह्र संपादित किया जाएगा। सिविल सर्जन डॉ विजय कुमार ने बताया कि पूरे राज्य में जनसंख्या स्थिरीकरण के प्रति जागरूकता उत्पन्न करना, परिवार नियोजन कार्यक्रम अंतर्गत उपलब्ध सेवाओं की जानकारी आमजन तक पहुंचाना तथा योग्य दम्पतियों को इच्छित सेवा प्रदान करना स्वास्थ्य विभाग का लक्ष्य है, जिसके लिए जिलास्तर पर तैयारियाँ शुरू कर दी गई है। सीएस ने बताया कि इस कार्यक्रम के आयोजन को लेकर राज्य स्वास्थ्य समिति के तरफ से निर्देश दिया गया है। पुरुष नसबंदी पखवाड़ा के बेहतर प्रबंधन हेतु विभागों से समन्वय हेतु जिला स्तर पर बैठक का आयोजन किया जायगा। समुदाय स्तर पर आमजन को उत्प्रेरित करने में आशा, आंगनबाड़ी सेविका, जीविका दीदी, विकास मित्र आदि की भागीदारी होगी। जागरूकता उत्पन्न के उद्देश्य से ई-रिक्शा (सारथी रथ) चलवाया जाएगा।

महिला बंध्याकरण और पुरुष नसबन्दी कराने पर मिलेगा आर्थिक लाभ

जिला सामुदायिक उत्प्रेरक राजेश कुमार ने बताया कि जिले के सभी 18 प्रखंड के स्वास्थ्य केंद्रों पर परिवार नियोजन दिवस का आयोजन किया जाता है जिसमें गर्भनिरोधक दवाएँ, सुई, माला, छाया, अंतरा एवं कंडोम के साथ ही अन्य गर्भनिरोधक सामग्रियों का वितरण कराया जाता है।

महिला बंध्याकरण एवं पुरुष नसबंदी हेतु आमजनों को जागरूक किया जाता है।

बंध्याकरण/नसबंदी के गुणवत्तापूर्ण सेवा अंतर्गत परामर्श, चिकित्सीय जाँच, पैथोलॉजी जाँच इत्यादि की निःशुल्क सेवा उपलब्ध करायी जाती है।

लाभार्थी को प्रत्येक अंतरा सूई पर 100/-रुपए की राशि उनके खाता में भेजी जाती है। जिला स्वास्थ्य समिति के डीपीसी अमित कुमार ने बताया कि नसबंदी के लिए पुरुष लाभार्थी को 3000 रुपए एवं प्रेरक को प्रति लाभार्थी 300 रुपए प्रोत्साहन के तौर पर दिए जाने का प्रावधान है।

छात्र संगठनों ने निकला कुलपति का अर्थी जुलूस

मुंडन करा छात्र नेता ने कुलपति को दी मुखाग्नि

प्रात : किरण, संवाददाता

छपरा सदर। छात्रों की विभिन्न मांगों को लेकर आर एस ए एवं छात्र जदयू के संयुक्त तत्वाधान में शुक्रवार को जे पी यू के कुलपति का अर्थी जुलूस विश्वविद्यालय कैंपस से निकाला गया। अर्थी जुलूस विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों में घुमाया गया,अर्थी के अंतिम दर्शन के लिए सभी विभाग में रखा गया जिसमें सभी छात्र-छात्राओं ने अंतिम दर्शन किए और फिर आर एस ए नेता राहुल यादव ने अपना मुंडन करवा कर कुलपति को मुखाग्नि दी। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए छात्र नेताओं ने कहा कि जयप्रकाश विश्वविद्यालय के कुलपति को सारंण प्रमंडल के गरीब छात्र -छात्राओं से कोई लेना-देना नहीं है। हजारों डिग्रियां सिग्नेचर के लिए इनका राह देख रही है । छात्रों का आरोप है कि कुलपति प्रत्येक विभाग में कर्मचारी एवं पदाधिकारी की नियुक्ति एक जाति विशेष के लोगों का कर रहे है। विश्वविद्यालय में जात -पात का नंगा नाच इसके पहले कभी नहीं हुआ था। प्रवेश पत्र में भारी गड़बड़ी अंक पत्र में भारी गड़बड़ी, लगातार की जा रही है । छात्र नेताओं द्वारा कुलपति का विधवत रूप से इनका दाह संस्कार किया गया, 10 कर्म के दिन सद्बुद्धि यज्ञ होगा, ब्रह्म भोज में तीनों जिलों के छात्र-छात्राएं ब्रह्म भोज(श्राद्ध कर्म) में शामिल भी होंगे और प्रसाद ग्रहण करेंगे. कार्यक्रम में प्रमुख रूप से गुलशन यादव, परमेंद्र कुमार, उज्जवल कुमार सिंह, प्रशांत बजरंगी, विकास सिंह सेंगर,राहुल यादव, गोलू कुमार, विवेक कुमार विजय, श्रुति पांडे, मनीष पांडे, अलीशा कुमारी, सुनील कुमार, अबुल हसन सोनू, अमरेश कुमार, हेमा कुमारी, प्रिया रानी समेत कार्यकर्ता उपस्थित थे।

दो बच्चों की मां अपने पति को छोड़ दूसरे के साथ हुई फरार

प्रात : किरण, संवाददाता

परसा।थाना क्षेत्र के बालहा गांव से दो बच्ची की माँ पति को छोड़कर दूसरे के साथ फरार होने का मामला प्रकाश में आया है।घटना को लेकर महिला की पति द्वारा थाना में सास ससुर,साला पर पत्नी को भगाने का आरोप लगाते हुए प्राथमिकी दर्ज कराया।दर्ज प्राथमिकी में बताया गया है कि बर्ष 2017 में थाना क्षेत्र के पट्टी मुजौना शादी हुआ था।गत 5 अक्टूबर को साला द्वारा पत्नी तथा दो बच्ची को लेकर मायके गया।गत 11 अक्टूबर को जब ससुराल पत्नी से मिलने गया तो ससुराल वाले ने पत्नी को भागने की जानकारी दिया।उसके बाद से ससुर तथा साला द्वारा जान से मारने की धमकी देने का आरोप लगाया है।पुलिस मामले की छान बीन में जुटी है।

रामचौरा पंचायत के वार्ड तीन में 3 वर्षों से बंद है नल जल योजना

प्रात : किरण, संवाददाता

इसुआपुर। प्रखंड के रामचौरा पंचायत के वार्ड नंबर 3 के वार्ड सदस्य सरिता देवी ने पूर्व वार्ड सदस्या नीलम देवी पर प्रभार नहीं देने तथा नल जल के लिए पाइप बिछाने के दौरान भारी गबन का आरोप लगाया है । वर्तमान वार्ड सदस्या ने इस बाबत कई बार प्रखंड विकास पदाधिकारी, पंचायती राज पदाधिकारी तथा जिलाधिकारी छपरा को भी पत्र द्वारा सूचित कर गबन की जांच की मांग की है। साथ ही नल जल को चलाने के लिए प्रभार की भी मांग की है। उनका कहना है कि उनके बार-बार आवेदन देने के बाद भी आज तक उन्हें नल जल का प्रभार नहीं मिल सका है।जिसके कारण वार्ड नंबर 3 में नल जल का गिरना 3 बर्षो से बंद है। उन्होंने कहा है कि कुछ ही जगहों पर पाईप बिछाया गया है। बाकी पूरे वार्ड में पाइप का बिछाव नहीं हुआ है। अधूरा कार्य छोड़कर ही 12 लाख रुपये का उठाव कर लिया गया है। जो भारी गबन है। इस बावत समाहर्ता सारण ने पंचायती राज पदाधिकारी को नीलम देवी पर प्राथमिकी दर्ज करने तथा गबन की जांच करने का आदेश दिया था। लेकिन आज 16 महीना बीत जाने के बाद भी जांच नहीं किया गया।

भागवत विद्यापीठ छपरा में शुरू हुआ छः दिवसीय स्काउट और गाइड का प्रशिक्षण

- **विद्यालय के प्राचार्य ने ध्वजारोहण करके शिविर का किया उद्घाटन**

प्रात : किरण, संवाददाता

छपरा कार्यालय।जिला कार्यक्रम पदाधिकारी समग्र शिक्षा सारण के निर्देश पर प्रथम सोपान प्रशिक्षण शिविर का आयोजन भागवत विद्यापीठ छपरा में किया गया है।जिसमें जिला कार्यक्रम पदाधिकारी समग्र शिक्षा सारण के द्वारा शिविर प्रधान के रूप में इस्लामिया उच्च विद्यालय के शिक्षक एवम जिला आयुक्त स्काउट अरुण परासर एवं गाइड में उच्च माध्यमिक विद्यालय बकवा पानापुर की शिक्षिका सह संयुक्त जिला सचिव डॉ० सुषमा सिंह को नियुक्त किया गया है।शिविर में भाग लेने वाले स्काउट गाइड को प्राथमिक चिकित्सा,गांठ विद्या,ध्वज शिष्टाचार,ड्रिल,सफाई, व्यायाम,सीटी संकेत,खेल व ताली आदि का प्रशिक्षण दिया जायेगा। उद्घाटन समारोह में विद्यालय के प्राचार्य डॉ० अमरेन्द्र सिंह ने कहा कि आज के परिवेश में बच्चों में स्काउटिंग गाइडिंग की शिक्षा बहुत ही जरूरी है,स्काउटिंग शिक्षा बच्चों को स्वालंबन व अनुशासन के साथ साथ देश प्रेम की भावना का विकास करता हैं।वहीं विद्यालय के प्राचार्य संदीप पाण्डेय ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि स्काउट गाइड से बच्चों में शारीरिक,मानसिक और नैतिक विकास होता है।इस अवसर पर विद्यालय के शिक्षक सर्वेश कुमार, जेपी सिंह,मुस्कान, तरुण सर आदि उपस्थित थे।

दिवाली विद माई भारत के प्रथम वर्षगांठ पर सारण जिले में कार्यक्रम का होगा आयोजन

प्रात : किरण, संवाददाता

छपरा। नेहरू युवा केंद्र एवं कनफेडरेशन का ऑल इंडिया ट्रेडर्स सारण के संयुक्त तत्वावधान में ह्यदिवाली विद माई भारतह्र के प्रथम वर्षगांठ पर सारण जिले में विभिन्न कार्यक्रम का आयोजन किया जायेगा। चार दिवसीय होने वाले इस कार्यक्रम में स्वच्छता को लेकर लोगों को जागरूक तो किया ही जायेगा उसके साथ साथ सफाई अभियान भी चलाया जायेगा। प्रेस वार्ता को सम्बोधित करते हुए नेहरू युवा केंद्र की जिला युवा अधिकारी रश्मि गुप्ता ने बताया कि सूबे में नेहरू युवा केंद्र और कनफेडरेशन का ऑल इंडिया ट्रेडर्स के द्वारा दिवाली विद माई भारत के प्रथम वर्षगांठ पर विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। अपने जिले में भी ट्रेडर्स एसोसिएशन और माय भारत स्वयंसेवकों को सहयोग प्रदान कर कार्यक्रम का आयोजन किया गया है।यह कार्यक्रम 27 अक्टूबर से लेकर 30 अक्टूबर तक चलेगा। उन्होंने बताया कि यातायात नियमों का पालन करते हुए इस कार्यक्रम में सबका सहयोग भी अपेक्षित है खासकर युवाओं की भागीदारी विशेषकर प्राथमिकता रहेगी।इससे आम लोगों के बीच अच्छा संदेश भी मिलेगा।कनफेडरेशन का ऑल इंडिया ट्रेडर्स के प्रमंडलीय अध्यक्ष वरुण प्रकाश राजा ने कहा कि देश के 435 जिलों में इस कार्यक्रम का आयोजन होना है। कैट के राष्ट्रीय महामंत्री सह माननीय सासंद प्रवीण खंडेलवाल और बिहार में प्रदेश अध्यक्ष अशोक वर्मा के नेतृत्व में यह अभियान चलाया जायेगा। उसी क्रम में छपरा में भी चार दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया है। 27 अक्टूबर को सुबह सदर अस्पताल में सफाई अभियान का कार्यक्रम किया जाएगा। उसके बाद हथुआ मार्केट में स्वच्छता अभियान चलाया जायेगा। दोपहर 2 बजे स्वयंसेवकों के द्वारा यातायात नियमों से संबंधित जानकारी भी दी जाएगी।नगर निगम,छपरा की पूर्व मेयर राखी गुप्ता ने भी नगर निगम से जुड़े सफाई अभियान से संबंधित कार्यों का उल्लेख किया तथा कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के सपने इस अभियान से साकार अवश्य होंगे ऐसा विश्वास है ।

घर के मुंडेर पर चढ़े पायथन सांप का किया गया रेस्क्यू

प्रात : किरण, संवाददाता

बगहा। वीटीआर से सटे रिहायशी इलाके में जंगली जीवों के निकल आने का सिलसिला जारी है।इसी क्रम में जलसंसाधन विभाग गंडक प्रोजेक्ट के जी टाइप कॉलोनी के एक घर के मुंडेरे पर चढ़े विशालकाय पाइथन सांप का वन विभाग के कर्मियों ने रेस्क्यू किया। स्थानीय निवासी कृष्णनंद कुमार ने बताया कि घर के मुंडेर पर चढ़े विशालकाय पायथन सांप को लोगों ने देखा जो घर के अंदर छत के रास्ते घुसने की कोशिश कर रहा था।तत्काल लोगों ने इसकी जानकारी वन विभाग को दी। 5 से 6 की संख्या में वनकर्मियों की टीम घटनास्थल पर पहुंच कर रेस्क्यू करने में जुट गई। चुकी सांप मुंडेरे पर और विशालकाय होने के कारण रेस्क्यू करने में मुश्किलें आ रही थी। बहरहाल किसी तरह पायथन को जमीन पर लाने में रेस्क्यू टीम ने सफलता प्राप्त की।रेंजर राजकुमार पासवान ने बताया कि रेस्क्यू के बाद पायथन सांप को वीटीआर जंगल मे सुरक्षित छोड़ दिया गया।

बाइक चोरों का कार से पीछा कर रहे शख्स को अपराधियों ने मारी गोली, मौत

बाइक चुरा कर भाग रहे थे सभी अपराधी, पीछा करने के दौरान पत्रकार के भाई को मारी पांच गोलियां

प्रातः किरण संवाददाता

शिवसागर (रोहतास): बिहार के रोहतास जिले में एक युवक की बाइक चुराकर भाग रहे बदमाशों ने गोली मारकर हत्या कर दी। वारदात शिवसागर थाना इलाके में गुरुवार रात को हुई। मृतक की पहचान कैमूर जिले के सकरी निवासी भानु प्रताप सिंह के रूप में हुई है। बताया जा रहा है कि भानु प्रताप बाइक चोरी कर भाग रहे अपराधियों का सकरी से अपनी कार से पीछा कर रहे थे। तभी उन्होंने कार से टक्कर मारकर अपराधियों को रोड पर गिरा दिया। जब वह चोरों को पकड़ने लगे तो बदमाशों ने बंदूक निकालकर फायर कर दिया। गोली लगने से युवक की मौत हो गई।

जानकारी के अनुसार यह घटना रात के डेढ़ बजे की बताई जा रही है। सूचना मिलने पर पुलिस टीम मौके पर पहुंची। पुलिस ने घटनास्थल पर पड़ी बाइक को अपने कब्जे में लिया। जांच के लिए एफएसएल की टीम को भी बुलाया गया। पुलिस अपराधियों के बारे में जानकारी जुटा रही है। अभी तक बदमाशों का सुराग नहीं लग पाया है। मृतक के शव को पुलिस ने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए सदर अस्पताल सासाराम भेज दिया।

शुक्रवार सुबह रोहतास एसपी रौशन कुमार भी मौके पर पहुंचे और घटना का जायजा लिया। उन्होंने कहा कि मामले की जांच की जा रही है।

नगर थाना पुलिस की बड़ी उपलब्धि

हत्या का षडयंत्र रचने वाला आरोपी गिरफ्तार

आरा। आरा नगर थानान्तर्गत को दोपहर 11:00 बजे मीरगंज बैरियर के पास मो० साहिद आलम, पिता-अब्दुल रहीम, ग्राम बड़की सिंगही, थाना-नगर को अज्ञात मोटरसाईकिल सवार अभियुक्त द्वारा गोली मार कर जख्मी कर दिया गया। जो वर्तमान में ईलाजरत है। अनुसंधान / छापामारी के कम में इस घटना के साजिश कर्ता मो० शहनबाज पे०-स्व० अबुनसर सा०-बड़की सिंगही थाना-आरा नगर जिला-भोजपुर को गिरफ्तार किया गया है। एवं घटनास्थल से दो खोखा एवं 01 मिसफायर कारतूस बरामद किया गया है। (छापामारी के अभियुक्त शाहनवाज उर्फ गुड्डु जाली के घर से 01 एन०बी० बोर राईफल, 07 जिन्दा कारतूस, एयर गन-02, तीन पॉकिट छर्रा, 01 रूपया गिनने वाला मशीन एवं 17,50,000/रू० तथा पुराना नोट-26.000/ रू० बरामद किया गया है इस संबंध में अग्रतर कार्रवाई की जा रही है। घटना का कारण जमीन खरिद बिक्री में हुए विवाद है। इस संबंध में आरा नगर थाना कांड सं०-701/24 दि०-24.10.24 धारा-109/61, मा०न्या०सं० एवं 27 आर्म्स एक्ट अन्तर्गत दर्ज किया गया। बरामद वस्तुएँ:-एन०बी० बोर राईफल, जिन्दा कारतूस, एयर गन, छर्रा-नकद-गिरफ्तार अभियुक्त का नाम व पता- पुराना नोट- रूपया गिनने वाला मशीन,खोखा, मिसफायर आदि शामिल हैं।

भोजपुर पुलिस की बड़ी उपलब्धि अवैध 02 हथियार एवं 10 करातूस के साथ एक अभियुक्त गिरफ्तार

प्रातः किरण संवाददाता

भोजपुर। भोजपुर पुलिस अधीक्षक श्री राज ने अपने कार्यालय में प्रेस वातार्वार्ता कर बताया कि भोजपुर जिलान्तर्गत तरारी विधान सभा उप चुनाव-2024 के मद्देनजर दिनांक-24.10.2024 को सघन वाहन चेकिंग अभियान चलाया गया जिसमें अजीमाबाद थाना द्वारा ग्राम कमरिया के पास वाहन चेकिंग के कम में 01 मोटर साईकिल, 02 पिस्टल एवं 10 जिन्दा कारतुस के साथ एक अभियुक्त को गिरफ्तार किया गया।

इस संबंध में अजीमाबाद थाना कांड सं०-88/24 दि०-24.10.24 धारा-25 (1-बी) ए/26/35 आर्म्स एक्ट अन्तर्गत दर्ज किया गया।

बरामद वस्तुएँ:- पिस्टल-02जिन्दा कारतुस-10 मोटर साईकिल-01 गिरफ्तार अभियुक्त का नाम व पता- संदीप कुमार पे०-दया शंकर सिंह सा०-पिंजरोही, थाना-संदेश, जिला-भोजपुर रहने वाला है जिसे पुलिस ने गिरफ्तार कर जेल भेज दिया।

संक्षिप्त खबरें

सेमरा ओपी पुलिस ने चलाया वाहन जांच अभियान

प्रातः किरण संवाददाता

दिनारा(रोहतास): वरीय पदाधिकारी के दिशा निर्देश पर सेमरा ओपी की पुलिस ने वाहन जांच अभियान चलाया। थानाध्यक्ष विकास कुमार सिंह ने बताया कि थाना क्षेत्र के बैरीपुर पुल के समीप पुलिस पदाधिकारी ने वाहन जांच अभियान चलाया। वाहन जांच के क्रम में वाहन चालकों का जूता, हेलमेट, डिक्की,ड्राइविंग लाइसेंस, प्रदूषण जांच सहित अन्य बिंदुओं पर बारीकी से जांच की गई। श्री सिंह ने बताया कि वाहन जांच के क्रम में पुलिस पदाधिकारी द्वारा करीब आठ हजार रुपए का ऑनलाइन चालान काटा गया। उन्होंने बताया कि वाहन जांच की प्रक्रिया निरंतर चलते रहेगा। मौके पर स्थानीय थाना के पुलिस पदाधिकारी ,वाहन चालक एवं पुलिस बल के जवान मौजूद थे।

जहरीली शराब कांड में बीमार पूर्व मुखिया पुत्र की मौत

प्रातः किरण संवाददाता

मशरक। मशरक में जहरीली शराब से बीमार एक व्यक्ति की मौत गुरुवार को इलाज के दौरान पटना में मौत हो गई। मशरक में जहरीली शराब से मरने वालों की संख्या 13 पहुंच गई है। मृतक मशरक के जजौली पंचायत अंतर्गत बलि बिशनपुरा गांव निवासी पूर्व मुखिया स्व सत्यनारायण सिंह इंजीनियर साहेब के पुत्र राजेश सिंह 54 वर्ष है। मृतक के भाई महेश सिंह भी पंचायत के मुखिया रह चुके है। जहरीली शराब कांड के दूसरे दिन राजेश सिंह की तबीयत बिगड़ने लगी तब उन्होंने घरवालों को शराब पीने की बात बताई।

आनन फानन में पूर्व मुखिया महेश सिंह ने अपने भाई को पटना के रूबन हॉस्पिटल में भर्ती कराया जहां से डॉक्टरों ने जवाब दे दिया फिर वे पीएमसीएच में पर पिछले तीन दिनों से वेंटिलेटर पर थे। डॉक्टरों ने बचाने का काफी प्रयास किया लेकिन गुरुवार की शाम राजेश सिंह जहरीली शराब की वजह से जिंदगी की जंग हार गए।

पोस्टमार्टम के बाद परिजनों ने अंतिम संस्कार पटना में ही किया।

गौरतलब है कि दो साल पहले की तरह ही इस बार भी शराब काण्ड में मशरक सुर्खियों में था। इस मामले में कई पुलिस कर्मियों व पुलिस अफसरों तक पर कार्रवाई हो चुकी है। बिहार के बाहर एसआईटी की छापेमारी के बाद यूपी से इसके तार जुड़ने का एसपी ने खुलासा किया। महिलाएं समेत दर्जन भर से अधिक इसमें संलिप्त लोगों की गिरफ्तारी हो चुकी है। शराब व शराब बनाने में इस्तेमाल की गई सामग्री भी जब्त हुई है।

भारतीय रेड क्रॉस सोसाइटी,आरा द्वारा तिरपाल,बर्तन एवं अनाज का वितरण, सिन्हा पंचायत के विभिन्न गांवों में किया गया

प्रातः किरण संवाददाता

आरा:बाबा हजारी कार्यालय सिन्हा बाजार पे भारतीय रेड क्रॉस सोसाइटी,आरा द्वारा प्रदत 25 तिरपाल,बर्तन एवं अनाज का वितरण सिन्हा पंचायत के विभिन्न गांवों के चिन्हित एवं चयनित बाढ विभीषिका से अत्यंत प्रभावित एवं पीड़ित व्यक्तियों के बीच बाबा हजारी समाज सेवा संस्थान एवं यूथ फॉर सेवा के संयुक्त तत्वाधान में वितरित किया गया। इस नेक काम में देवानंद उपाध्याय,आनंद पार्यावरण प्रेमी,आनंद शर्मा,शिवशंकर राम,रामसुरेश सिंह,अनिल शर्मा,छोटू शर्मा सहित कई स्वयंसेवकों ने सक्रिय भूमिका निभाई। भारतीय रेड क्रॉस सोसाइटी,भोजपुर के सारे पदाधिकारियों एवं स्टाफों को शाल से सम्मानित किया गया। अध्यक्षीय भाषण में देवानंद उपाध्याय ने बाबा हजारी समाज सेवा संस्थान एवं यूथ फॉर सेवा के तमाम स्वयंसेवकों की ओर से सामूहिक रूप से भारतीय रेड क्रॉस सोसाइटी, भोजपुर के सभी आगंतुक पदाधिकारियों एवं स्वयंसेवकों के साथ साथ इस संस्था के द्वारा संपूर्ण विश्व में आपदा पीड़ित मानव समाज के हित में किए जा रहे उल्लेखनीय,अविस्मरणीय एवं सराहनीय कार्यों की भूरी भूरी प्रशंसा करते हुए स्थानीय जिले के संस्था के प्रति आभार एवं साधुवाद प्रकट किया गया

बिहार विधानसभा उप-चुनावः तरारी में गरजे प्रशांत किशोर, कहाः उप चुनाव बिहार सरकार को सबक सिखाने का चुनाव है

प्रातः किरण संवाददाता

पीरो। जन सुराज के सूत्रधार प्रशांत किशोर ने आज पीरो नगर परिषद क्षेत्र में तरारी विधानसभा से जन सुराज पार्टी के प्रत्याशी श्रीमती किरण सिंह के पक्ष में पदयात्रा कर नामांकन रैली में भाग लिया और जनता से जनसंवाद किया। प्रशांत किशोर पीरो हाई स्कूल मैदान से अनुमंडल कार्यालय तक हजारों की संख्या में आए लोगों के साथ पदयात्रा की और अपने प्रत्याशी का नामांकन करवाया। इसके पूर्व उन्होंने लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि जनता अब लालू जी के जंगल राज और नीतीश कुमार के अफसर राज से तंग आ चुकी है और उन्हें उखाड़ फेंकने के लिए तैयार है। उन्होंने लोगों को याद दिलाया कि जिस व्यक्ति को भाजपा ने तरारी से अपना उम्मीदवार बनाया है, वह पहले जदयू में था। वही जदयू जिसके नेता मुख्यमंत्री पलटू नीतीश कुमार हैं। मुख्यमंत्री की अपनी कुर्सी बचाने के लिए उन्होंने जनता के विश्वास के साथ विश्वासघात किया है। उन्होंने जनता को टोपी पहना दी है, इसलिए आप भाजपा को वोट देंगे तो फिर से मुख्यमंत्री पलटू कुमार ही बनेंगे।

प्रशांत किशोर कहा कि भाजपा प्रत्याशी दबंग है, बदमाश है बदमाश की कोई जाति नहीं होती। इसलिए इस बार माफिया राज को खत्म करने के लिए जाति से ऊपर उठकर अपना वोट तरारी की बेटी और महिला सशक्तिकरण की नेत्री किरण सिंह को दें। आपका भाई, आपका बेटा प्रशांत किशोर किसी दबंग से नहीं डरता। आपका भाई आपको माफिया राज से बाहर निकालेगा। इसलिए आपको भी उढक(टछ) माले के डर से भाजपा को और भाजपा के डर से माले को वोट देने की जरूरत नहीं है। अभी तक आप कहते थे कि आपके पास कोई विकल्प नहीं है लेकिन अब आपके पास जन सुराज पार्टी का विकल्प है, इसलिए बिना किसी से डरे आने वाली 13 नवंबर को अपने वोट की ताकत दिखाएं। इस बार वोट अपने बच्चों के भविष्य के लिए करें।

माउंट व्यू इंटरनेशनल स्कूल का 100 छात्र छात्राओं का दल परिभ्रमण के लिए रवाना

प्रातः किरण संवाददाता

नासरीगंज(रोहतास)। नासरीगंज धुस स्थित माउंट व्यू इंटरनेशनल स्कूल का लगभग 100 छात्र छात्राओं का दल बस द्वारा परिभ्रमण के लिए निकला। वही स्कूल के निदेशक सह समाजसेवी जितेंद्र दुबे व संरक्षक सुदामा सिंह ने हरी झंडी दिखा कर रवाना किया। वही निदेशक जितेन्द्र दुबे ने बताया की शैक्षिक परिभ्रमण का मकसद सिर्फ छात्र-छात्राओं को ऐतिहासिक व दर्शनीय स्थलों की सैर कराने तक ही सीमित नहीं बल्कि उन स्थलों के स्थापत्यकला आदि का बारीकी से अध्ययन करके उनके ज्ञान को समृद्ध कराना भी है। वही लम्बे समय बाद अयोध्या में भगवान श्रीराम का भव्य मंदिर बना है जो हमारे लिए सौभाग्य की बात है। भगवान श्री राम के दर्शन किया जाएगा। वही तीर्थयात्रियों ने भी जय श्री राम के जयकारों से अपनी यात्रा प्रारंभ की। वही प्रिंसिपल जीत पाल ने बताया कि अयोध्या में राम मंदिर,प्रयागराज में अशोक सम्राट की किला एवं गंगा जमुना सरस्वती संगम, विंध्याचल, बनारशी में राजा के किला,चंदगुप्त के किला व सारनाथ मन्दिर,माँ ताराचण्डी एवम अन्य ऐतिहासिक स्थलों का दर्शन कर पुनः चौथे दिन अपने विद्यालय में लौट जाएंगे। मौके पर राकेश कुमार पाल,रामगोविंद,परवेज खान,सविता कुमारी,हैप्पी कुमारी,आँचल कुमारी,संरक्षक सुदामा सिंह,गुड्डू पाण्डेय,बिकु दुबे एवम बच्चे गए हुए हैं।

निजी स्कूल के निदेशक ने बीईओ पर रिश्वत मांगने का लगाया आरोप

प्रातः किरण, संवाददाता

संझौली (रोहतास) जिला क्षेत्र के संझौली प्रखंड के मझौली गांव स्थित ग्रीन वैली पब्लिक स्कूल में बीते बुधवार को संझौली बीइओ ने निरीक्षण किया। इस दौरान स्कूल के संस्थापक मुन्ना कुमार ने उन पर जिले के बड़े अधिकारी के नाम पर पैसे की मांग करने का आरोप लगाया है। स्कूल संस्थापक के अनुसार, बीइओ ने उन्हें सीधे कहा कि अगर वे पैसे नहीं देते, तो वे अपनी सैलरी से जिला शिक्षा पदाधिकारी को यह राशि देंगे। बीइओ ने यह भी बताया कि डीईओ (जिला शिक्षा पदाधिकारी) के तीन बार कॉल आ चुके हैं, जिससे यह मांग की जा रही है। उन्होंने पत्रकारों को बताया कि यह पहली बार नहीं है जब बीइओ ने इस तरह की मांग की हो। उनके द्वारा पहले भी बीइओ ने स्कूल में निरीक्षण के दौरान बच्चों की उपस्थिति रजिस्टर लेकर चले गए थे, उसे लौटाने के बदले दस हजार रुपये की मांग की थी। इस मांग के चलते उन्होंने जिला शिक्षा पदाधिकारी से शिकायत भी की थी, जिसके बाद ही रजिस्टर लौटाया गया था। इस घटना से स्कूल प्रशासन में नाराजगी का माहौल है। स्कूल के संस्थापकों का कहना है कि बीइओ के कार्यों में डर और लज्जा का अभाव दिखाई देता है, और इस तरह के भ्रष्टाचारपूर्ण रवैये से स्कूल का प्रशासनिक माहौल प्रभावित हो रहा है। संस्थापकों का मानना है कि बीइओ द्वारा लगाई गईं ये मांगें शिक्षा प्रणाली में सुधार की दिशा में बाधा डालती हैं। इस मामले को गंभीरता को देखते हुए स्कूल प्रशासन ने इस पर सख्त कार्रवाई की मांग की है। ताकि भविष्य में ऐसे भ्रष्टाचारपूर्ण कार्यों को रोका जा सके। इस संबंध में जिला शिक्षा पदाधिकारी मदन राय ने संपर्क करने पर उन्होंने बताया कि यह मामला मेरे संज्ञान में आया है,जांच के बाद उनके विरूद्ध निश्चित करवाई की जाएगी।

चिकित्सक ने छात्राओं के विभिन्न समस्याओं पर की चर्चा

प्रातः किरण संवाददाता

आरा। स्थानीय गोढ़ना रोड स्थित आर्यन रेसिडेंसियल पब्लिक स्कूल के रजत जयंती के त्रैमासिक गतिविधियों के अंतर्गत शुक्रवार को व्याख्यान माला में साईं इमरजेंसी हॉस्पीटल से पधारीं चिकित्सक श्रुति तिवारी के द्वारा वर्ग सात से वर्ग दस के छात्राओं के उम्र जनित समस्याओं को सुना गया और निवारण किया गया। छात्रा अनुष्का, डिम्पल, विजेता, आयुषी, अदिति, जान्हवी, वैष्णवी, दीपिका, सुहाना, ज्योत्सना, आराध्या, कृतिका, साक्षी, रिया, निशा, सौम्या कुमारी ने प्रश्नावली में बढ़ चढ़ कर भाग लिया। मुख्यतया हेयर, मुंहासे, पीरियड, एलर्जी, हाइट प्रोब्लम, पेट की समस्या व नींद आदि विषयों पर बखूबी विस्तार से चिकित्सक महोदया ने प्रकाश डाला। छात्रा अमृता, स्याली, रितिका, प्रिती, दिक्षा, सोनाक्षी के सवालों से डा. तिवारी प्रभावित होते हुये सभी को अपने चिर-परिचित अंदाज से संतुष्ट किया।इससे पूर्व निदेशक द्वय विजय कुमार ठाकुर व महेंद्र प्रसाद शर्मा के द्वारा डाक्टर तिवारी का अंग वस्त्र से स्वागत किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रधानाचार्य बाबूराम पाण्डेय तथा मूल्यांकन शिक्षिका सविता कुमारी, अन्वी शौर्या, तनुजा वर्मा ने किया।

जिला पदाधिकारी ने किया जनता दरबार का आयोजन

सासाराम(रोहतास): जिलाधिकारी उदिता सिंह ने शुक्रवार को अपने कक्ष में जनता दरबार का आयोजन किया गया। जिमसें 115 आम नागरिकों से लोक साक्षात्कार किया गया। उक्त जनता दरबार में अपर समाहर्ता-सह-अपर जिला दंडाधिकारी, रोहतास, जिला बंदोबस्ती पदाधिकारी, रोहतास, सासाराम, जिला भू-अर्जन पदाधिकारी, रोहतास, एवं अन्य जिला स्तरीय पदाधिकारियों ने भी भाग लिया। जिला जनता दरवार में मनोज पासवान, प्रखंड कोचस के द्वारा भूमि विवाद, ओमप्रकाश आजाद, प्रखंड विक्रमगंज के द्वारा मकान खाली कराये जाने, बेदामी देवी, कोरान सराय, सासाराम के द्वारा धमकी एवं जबरन हस्ताक्षर कराये जाने, अनोज कुमार ग्राम कुशडिहरा प्रखंड तिलौथू के द्वारा अतिक्रमण से मुक्त कराये जाने आदि के संबंध में आवेदन दिया गया है। इस तरह से कुल 115 मामलों जैसे भूमि बंदोबस्ती, लाल कार्ड, अतिकमण एवं भूमि परिमार्जन आदि मामलों को निष्पादन करने हेतु संबंधित पदाधिकारियों को समुचित कार्रवाई करने हेतु निदेशित किया गया।

विद्युत प्रवाह से एक किसान की मौत

नोखा(रोहतास): नोखा थाना के खैराडीह में कल शाम खेत के पटवन में लगे विद्युत प्रवाहित तार के संपर्क में आने से 30 वर्षीय भोला राम की हुई मौत के उपरांत ग्रामीणों के द्वारा आज अहले सुबह उचित मुआवजे एवं दोषियों के ऊपर कार्रवाई की मांग को लेकर सड़क जाम कर बवाल काटा। सूचना मिलते ही घटनास्थल पर भीम आर्मी जिलाध्यक्ष रोहता अमित पासवान अपने दल बल के साथ पहुंच पीड़ित परिवार के पक्ष से उनके मांग पर अमल करने हेतु वरीय पदाधिकारी एवं इऊ्ड और थानाध्यक्ष से वातार्लाप किया और ग्रामीणों को समझा बुझाकर घंटों से बाधित सड़क जाम को मुक्त कराया।

दीपावली पर्व की तैयारी में जुट गए हैं लोग

बिक्रमगंज(रोहतास): बिक्रमगंज अनुमंडल क्षेत्र में सभी लोग दीपावली पर्व की तैयारी में युद्ध स्तर पर जुट गए हैं। लोग अपने घरों की साफ-सफाई और पेंटिंग करने व कराने में लगे हुए हैं। दुकानदार भी अपनी दुकानों की पेंटिंग कराने में जुट गए हैं। शहर से लेकर ग्रामीण इलाकों में दीपावली की तैयारी चल रही है। पेंट की दुकानों पर खरीदारों की भीड़ काफी उमड़ रही है। ग्राहक अपने पसंद के कलर बनवा कर मकान पेंट करवाने के लिए पेंट ले जा रहे हैं। लोग पेंटर से दुकान और मकानों की पुताई करवा रहे हैं। दीपावली के दिन हर किसी का मकान और दुकान सुंदर दिखे इसके लिए लोग सजावट की दुकानों पर पहुंचकर लड़ियां और झालर खरीद रहे हैं ताकि दीपावली में मकान और दुकानों की रौनक बढ़े।

छठ महापर्व को देखते हुए ह्लशौच से मुक्तिह्व हेतु चला जागरूकता अभियान

काराकाट(रोहतास): गुरुवार की देर संध्या छठ महापर्व को देखते हुए काराकाट प्रखंड क्षेत्र अंतर्गत ग्राम पंचायत देव मार्कण्डेय निज ग्राम स्थित सूर्य मंदिर एवं गांव में भ्रमण कर ह्लशौच से मुक्ति ह्लहेतु लोगों के बीच जागरूकता अभियान चलाया गया। जिस अभियान में काराकाट प्रखंड समन्वयक आलोक आनंद एवं स्वच्छता पर्यवेक्षक कन्हैया कुमार सिंह के द्वारा लोगों को जागरूक किया गया। मौके पर ग्राम पंचायत देव मार्कण्डेय के मुखिया प्रतिनिधि अजय कुमार सिंह,शिक्षक आनंद कुमार सिन्हा, छठ पूजा समिति के सदस्य,वार्ड सदस्य सहित सैकड़ो की संख्या में स्थानीय ग्रामीण लोग मौजूद थे।

डीएम ने की राजस्व विभाग अंतर्गत दाखिल समीक्षा बैठक

प्रातः किरण संवाददाता

आरा :जिलाधिकारी,भोजपुर के द्वारा राजस्व विभाग अंतर्गत दाखिल खारिज,परिमार्जन एवम अभियान बसेरा 2 की विगत 2 सप्ताह मे हुई प्रगति की समीक्षा की गयी।

समीक्षा के क्रम में जिलाधिकारी ने 75 दिनों एवं 35 दिनों से लंबित दाखिल खारिज के मामलों का अविलंब निष्पादन हेतु सभी अंचलाधिकारी को निर्देश दिया।

परिमार्जन से संबंधित आवेदन का निष्पादन करने हेतु जिला पदाधिकारी द्वारा निर्देश देते हुए कहा गया कि बिना किसी कारण के आवेदन को निरस्त नहीं करें। परिमार्जन से संबंधित मामले कर्मचारी स्तर पर अधिक पायी गयी परिमार्जन हेतु कैंप मोड मे कार्य निष्पादन करने का निर्देश दिया गयो

जिलाधिकारी ने राजस्व कर्मचारी के कार्यों की समीक्षा के क्रम में बॉटम 3 परफोंस वाले कर्मचारी के विरुद्ध स्पष्टीकरण करते हुए जिला को रिपोर्ट भेजने को उड को निर्देशित कियो अभियान बसेरा 2 के अंतर्गत निर्गत किये गए ऑफलाइन पर्चा को विभागीय निर्देश के आलोक मे ऑनलाइन कराना सुनिश्चित करने का निर्देश दिया गयो साथ ही विभागीय निर्देश के आलोक मे नये सर्वे करने का भी निर्देश दिया गयो। जिलाधिकारी ने सभी भूमि सुधार उप समाहर्ता को लंबित मामलों का सतत अनुश्रवण करते हुए ससमय निष्पादन सुनिश्चित कराने का निर्देश दियो इस समीक्षा बैठक में अपर समाहर्ता भोजपुर, प्रभारी पदाधिकारी राजस्व,सभी भूमि सुधार उपसमाहर्ता, भोजपुर,सभी अंचलाधिकारी उपस्थित थे।

संत रविदास जनसेवा संगठन एवं मदर टेरेसा सेवाकर्मी भोजपुर आरा के तत्वाधान में दो अज्ञात लवारिस शवों का किया गया दाह संस्कार

प्रातः किरण संवाददाता

आरा। संत रविदास जनसेवा संगठन भोजपुर एवं टीम मदर टेरेसा सेवाकर्मी भोजपुर आरा के सयुक्त तत्वाधान में 115वीं एवं 116वीं के रुप में दो अज्ञात लवारिस पुरूष शवो का दाह संस्कार किया गया गांगी मुक्तीधाम आरा शमशान घाट पर '

बताते चले की दोनो अज्ञात लवारिस हालात में मृत पुरूष का शव अधीक्षक सदर अस्पताल आरा कार्यालय से और दुसरा पुरूष का शव आरा नगर थाना भोजपुर से पोस्मार्टम कराने के बाद सामाजिक संस्था को अधिक्षक सदर अस्पताल कार्यालय के लीपिक सत्य प्रकाश यादव के पहल पर अस्पताल परिचार्यी सर्वजीत तिवारी उर्फ भुँवर एवं आरा नगर थाना कैंप सदर अस्पताल आरा के पुङ्कअङ्कनिङ्क संतोष कुमार सिंह द्वारा प्राप्त हुआ जिसको पहचान हेतु नियमानुसार 72घंटे के लिए सुरक्षित रखा गया हैं '

अज्ञात लवारिस मानव शव का विधिवत अपना परिजन वारिस बनकर निस्वार्थ भाव से आरा गांगी शमशान मानव मोक्ष घाट पर अंतिम क्रियाक्रम के रुप में हिन्दू रितीरिवाज के अनुसार संस्था संस्थापक महासचिव सह समाजसेवी अमरदीप कुमार जय ने सभी अज्ञात लवारिस शवो को मुखाग्नी देने का बखूबी कार्य करते आ रहे हैं ' दाह संस्कार कराने में मुख्य रुप से संस्था के मुख्य नियमित मंथली सक्रिय सदस्य के रुप में योगदान देते आ रहे संस्था के मुख्य संरक्षक मिश्रीलाल वी. जैन , इंजीनियर सत्येन्द्र नारायण सिंह संग अशोक कुमार श्रीवास्त्व जी के आर्थिक सहयोग के बल पर तीन अज्ञात शवो को मानव मोक्ष दिलाया गया।

दाह संस्कार कराने से पूर्व सदर अस्पताल पोस्मार्टम हाउस शीतगृह केन्द्र आरा से शव को बाहर निकालकर प्लास्टिक में लपेटकर इसके बाद कफन देकर इत्र लगाकार सिविल सर्जन कार्यलय के बाहर ही संस्थापक महासचिव के कर कमलो द्वारा मृत आत्मा के शांति हेतु एक मिनट का मौन धारण कर राम नाम सत्य हैं (

यही सत्य हैं, गंगिया महरानी की जय आदि नारों के साथ ही संस्था के सभी सक्रिय सेवाकर्मी एवं सेवादार सदस्यों के तरफ से पुष्प चढ़ा कर श्रद्धांजली अर्पित कर गांगी श्मशान घाट आरा के लिए शव को रवाना किया गया।

दाह संस्कार के इस पुनित नेक कार्य में हौसला बढ़ाने से लेकर प्रेरणास्त्रोत के रुप में मनोबल बढ़ाकर कार्य किये रहे संस्था के मुख्य संरक्षक मिश्रीलाल वी जैन , अशोक कुमार श्रीवास्तव , समाजसेवी अमरदीप कुमार जय , मेजर विकास सिंह , ध्रुव कुमार यादव , डा.प्रेम प्रकाश सिंह , गोपाल जी सिंह, विश्वनाथ गुप्ता उर्फ बिहारी भैंया , धनजय सिंह बबलू पैक्स अध्यक्ष सोहरा , रवि सुंदर दास , संजय तिवारी , शिक्षक अजय जैन , संतोष पांडेय , दिपक कुमार , अहमद अली आदि सहित संस्था के सक्रिय सेवादार विकाश राम , विशाल राम , जुगली राम आदि के साथ गांगी शमशान घाट के सभी उपस्थित घटवार सबों ने भी अज्ञात लवारिस शवो का दाह संस्कार कराने में अपना सक्रियता दिखाकर मानव मोक्ष दिलाया गया '

पूजा समिति के सदस्यों ने सरकारी पदाधिकारियों को किया सम्मानित

प्रातः किरण संवाददाता

रिविलगंज। रिविलगंज दशहरा विसर्जन शोभायात्रा शांतिपूर्ण से संपन्न होने पर सभी पूजा समितियों के द्वारा बीडीओ,सीओ, थानाध्यक्ष के साथ अन्य पुलिस पदाधिकारियों को अंग वस्त्र से सम्मानित किया गया।इस अवसर पर सभी पूजा समितियों के सदस्य मौजूद थे। मालूम हो कि रिविलगंज दशहरा विसर्जन शोभायात्रा और जुलूस देखने के लिए जिले के अलावा दूसरे प्रदेशों से भी हजारों श्रद्धालु आते हैं। प्रशासन की तैयारी भी मजबूत होती हैं।जिला मुख्यालय से डीएम, एसपी और अन्य अधिकारी रिविलगंज के धार्मिक,ऐतिहासिक और पौराणिक विसर्जन शोभायात्रा शांतिपूर्ण तरीके से संपन्न होने पर पूजा समितियों और अखाड़े के लोगों ने पदाधिकारियों को सम्मानित किया।इस अवसर पर बीडीओ रितेश कुमार सिंह,सीओ कौशल कुमार, थानाध्यक्ष सुभाष कुमार पासवान के साथ अन्य पदाधिकारियों को पूजा समितियों द्वारा अंग वस्त्र से सम्मानित किया गया।

डीएम ने जनता दरबार में 20 परिवादियों की सुनी फरियाद

अधिकारियों को दिया समधान करने का निर्देश

परिवादियों द्वारा भूमि विवाद, बिजली बील, वृद्धा पेंशन, बंदोबस्त पर्चा, नाली निर्माण, कब्जा, मनरेगा, अनुदान की राशि, अनियमितता, मजदूरी, दाखिल खारिज आदि मामले रखे गए

प्रातः किरण संवाददाता

अरवल। जिला पदाधिकारी कुमार गौरव के निदेशानुसार अपर समाहर्ता अरवल, डॉ अनुपमा द्वारा जनता दरबार का आयोजन किया गया। जनता दरबार में 20 परिवादियों के फरियाद को सुना गया। परिवादियों द्वारा भूमि विवाद, बिजली बील, वृद्धा पेंशन, बंदोबस्त पर्चा, नाली निर्माण, कब्जा, मनरेगा, अनुदान की राशि, अनियमितता, मजदूरी, दाखिल खारिज, विधि शाखा, परिवहन विभाग, डीआरसीसी, बाल संरक्षण विभाग, आईसीडीएस, विद्युत विभाग एवं अन्य विभागों से संबंधित मामले थे। फरियादियों के आवेदनों के शीघ्र निष्पादन हेतु अपर समाहर्ता द्वारा संबंधित पदाधिकारियों को आवश्यक निदेश दिये गये। कुर्था प्रखण्ड स्थित ग्राम बेनीपुर निवासी मंजू कुमारी द्वारा बताया गया कि बिजली बील प्रत्येक माह जमा करने के बाद स्मार्ट मीटर लगने से माह अक्टूबर 2024 में बकाया 44554 रूपया का मैसेज आ रहा है। कनीय एवं सहायक अभियंता के पास आपत्ती देने के बाद कोई सुधार नहीं किया जा रहा है।

बिजली बकाया राशि की सुधार करवाने की कृपा की जाए। इस संबंध में अपर समाहर्ता द्वारा एस. डी.ओ. विद्युत विभाग अरवल को नियमानुसार निष्पादन करने हेतु निदेशित किया गया। वंशी प्रखण्ड स्थित ग्राम पहरपुरा निवासी गोलु कुमार द्वारा बताया गया कि ग्राम पहरपुरा वार्ड नं० 06 में नाली का पानी निकालने में काफी कठिनाई हो रही है। ग्राम पंचायत मुखिया द्वारा नाली निर्माण करने के उपरांत पहरपुरा निवासी विद्या मोहन शर्मा द्वारा मजदूर लोगों को गाली गलौज दी जाती है तथा नाली निर्माण कार्य को बंद करा दिया जाता है। नाली निर्माण कार्य प्रारम्भ करवाने की कृपा की जाए।

इस संबंध में अपर समाहर्ता द्वारा प्रखण्ड विकास पदाधिकारी एवं अंचलाधिकारी वंशी को संयुक्त रूप से जाँच करते हुए परिवाद को निष्पादन करने हेतु निदेशित किया गया। डीआरसीसी कार्यालय अरवल के सफाई कर्मी द्वारा बताया गया कि कार्यालय की साफ-सफाई से संबंधित माह सितम्बर 2023 से फरवरी 2024 तक का भुगतान लंबित है। भुगतान करवाने की कृपा की जाए। इस संबंध में अपर समाहर्ता द्वारा योजना पदाधिकारी एवं प्रबंधक, डीआरसीसी अरवल को जाँचोपरांत कारवाई कर प्रतिवेदन उपलब्ध कराने हेतु निदेशित किया गया।

छः दिवसीय मिथिला चित्रकला कार्यशाला संपन्न

प्रातः किरण संवाददात

गया।आसरा सेवा केंद्र , बी.पी. कोईराला इंडिया नेपाल फाउंडेशन द्वारा आयोजित , किलकारी बिहार बाल भवन गया में भगवान बुद्ध के जन्म से लेकर ज्ञान प्राप्ति स्थल तक की प्रमुख घटनाओं को ले कर लुम्बिनी से बोधगया शीर्षक से छः दिवसीय मिथिला चित्रकला कार्यशाला का समापन शुक्रवार की शाम किलकारी बिहार बाल भवन के नवनिर्मित प्रेक्षागृह में किया गया है

इस कार्यक्रम के समापन अवसर पर कृति पदक से सम्मानित कर्नल पंकज कुमार ने सभी कलाकारों को प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया है।इस अवसर पर कला संस्कृति जिला पदाधिकारी सुरभि बाला उपस्थित रहीं हैं ।कर्नल पंकज कुमार ने अपने संबोधन में कहा कि यह छः दिनों का अवसर सचमुच ऐतिहासिक है।जिसमे दो पदमश्री , तीन राष्ट्रीय, पांच राजकीय सम्मान से नवाजे गये मिथिला चित्रकला के हस्ताक्षरों ने किलकारी में रहकर अद्भुत कला कृतियाँ रची हैं।सबकी पेंटिंग एक से बढ़ कर एक है` मिथिला पेंटिंग के क्षेत्र में देश-विदेश के ख्यातिलब्ध कलाकारों में , शांति देवी , दुलारी देवी , विभा लाल, अवदेश कुमार कर्ण, अम्बिका देवी, हेमा देवी , श्रवण पासवान , भगवान ठाकुर , नलिनी शाह , राकेश पासवान ने अपनी बनाई चित्रकला को प्रदर्शित करते हुए उसके बारे में दर्शकों को विस्तार पूर्वक बताया हैं।इस अवसर पर शहर के कई गणमान्य अतिथियों में रूपक सिन्हा , रजनीश कुमार , प्रियदर्शन दायर , विनय कुमार आदि उपस्थित रहे हैं सबने मुक्तकंठ से चित्रों की प्रशंसा की` इस कार्यशाला को किलकारी में आयोजित करने के लिए सी.पी.सी. राजीव रंजन श्रीवास्तव ने दोनों संगठनों एवं सभी कलाकारों का धन्यवाद ज्ञापित किया गया है किलकारी के संगीत विधा के बच्चों ने गायन व गौतम कुमार गोलू के नेतृत्व में लोक नृत्य सामा चकेवा की प्रस्तुति दी है इस कार्यशाला को सुचारू रूप से सञ्चालन करने में संयोजिका फिरदौस कौसर , दीपा कुमारी , और सहायक कार्यक्रम पदाधिकारी अनुभवी सिन्हा , मो० महमूद , गुडिया कुमारी , पिंटू कुमार , चंदना मुखर्जी , प्रियंका कुमारी , निशी खान, कल्पना , दिनेश मउआर , संदीप कुमार सिन्हा , पंकज कुमार आदि प्रमुख रहे हैं

फाइनेंस कंपनी की महिला स्टाफ से हुई छिनतई

प्रातः किरण संवाददाता

शेरघाटी।थाना क्षेत्र के शेरघाटी जमुआईन मुख्य मार्ग पर मुर्गिया टांड़ के समीप गुरुवार के शाम माइक्रो फाइनेंस कंपनी की स्कूटी सवार महिला ज्योति कुमारी से अज्ञात बदमाशों ने रुपए और मोबाइल छीन लिए। उन्होंने कहा कि 11 हजार आठ सौ रुपए थे।इस मामले में छीनतई पीड़ित महिला ने शिकायत दर्ज कराई है। उन्होंने कहा है कि देर शाम कंपनी का बैठक एवं कलेक्शन कर लौट रही थी तो बदमाशों ने घटना को अंजाम दिया। गनीमत रही कि जाते जाते मोबाइल फेंक कर फरार हो गए। थाना अध्यक्ष अजीत कुमार ने बताया कि महिला द्वारा दिए गए आवेदन के आलोक में मामले की छानबीन की जा रही है।

ग्राम बंदा में कब्रिस्तान व मस्जिद के मामले का ऑल इंडिया मोमीन अंसारी समाज के साहेब उद्दीन अंसारी ने किया समाधान

प्रातः किरण संवाददात

गया ।ग्राम बंदा में कब्रिस्तान और मस्जिद का मामला था जहां मोहम्मद साहेब उद्दीन अंसारी साहेब ने जाकर समस्या का समाधान किया और मोहम्मद साहेब उद्दीन अंसारी साहेब जो ऑल इंडिया मोमीन अंसारी समाज का बिहार के प्रदेश अध्यक्ष सह राष्ट्रीय महा सचिव है इनके साथ इनके सहयोगी डॉ प्रकाश चंद्र गोयल उर्फ अंबुज सर जो ऑल इंडिया यादव महासभा के प्रदेश महा सचिव भी उपस्थित रहे और मोहम्मद जाहिद अंसारी जो ऑल इंडिया मोमीन अंसारी समाज के प्रदेश उपाध्यक्ष वो भी उपस्थित रहे ज्ञात होकी अम्बा तरी पंचायत के वर्तमान मुखिया मोहम्मद अजमत आलम के सुचना के आधार पे ही ये कार्य संपन्न हुआ इस मौके पर मुखिया जी सहित सभी ग्राम वासियों ने फुल और माला से स्वागत किए और उचित सम्मान दिए।

शराब सेवन में एक वर्ष की मिली सजा

प्रातः किरण संवाददात

औरंगाबाद। औरंगाबाद में उत्पाद न्यायालय के द्वारा संशोधित मद्यनिषेध कानून का उल्लंघन करने वाले व्यक्तियों पर लगातार सख्त कार्रवाई की जा रही है। उत्पाद कांड संख्या 752/23 में विशेष उत्पाद न्यायाधीश नीतीश कुमार की अदालत ने अभियुक्त संतोष मिस्त्री को दोबारा शराब सेवन करने के आरोप में दोषी मानते हुए एक वर्ष साधारण कारावास की सजा सुनाई है। उत्पाद विभाग के विधि परामर्शी शेखर कुमार ने अभियोजन की ओर से न्यायालय में पक्ष रखा था। सजायाफ्ता अभियुक्त संतोष मिस्त्री कुटुंबा थाना क्षेत्र के अंतर्गत जगदीशपुर गांव का निवासी है। 26 सितम्बर 2023 को एरिका कुटुंबा चेकपोस्ट के समीप से शराब के नशे में पकड़ा गया था। ब्रेथ एनेलाइजर से जांच करने के बाद शराब पीने की पुष्टि हुई थी।

बंधन बैंक का कुल कारोबार 24 प्रतिशत से बढ़ कर 2.73 लाख करोड़ पर पहुंचा

प्रातः किरण संवाददाता

पटना, अक्टूबर 2024: बंधन बैंक ने वित्त वर्ष 2024-25 की दूसरी तिमाही के लिए अपने वित्तीय नतीजों की घोषणा की है। बैंक का कुल कारोबार 24% बढ़कर 2.73 लाख करोड़ रुपये पर पहुंच गया है। कुल जमा में खुदरा हिस्सेदारी अब लगभग 68% है। पिछली तिमाही में देखी गई उत्साहजनक वृद्धि वितरण, व्यावसायिक दक्षता और अनुकूल परिचालन वातावरण में इसके विस्तार से प्रेरित है।

बैंक अब भारत में 6,300 बैंकिंग आउटलेट्स के माध्यम से 3.5 करोड़ से अधिक ग्राहकों को सेवा प्रदान करता है। बंधन बैंक में कार्यरत कर्मचारियों की कुल संख्या अब लगभग 80,000 है।

वित्त वर्ष 25 की दूसरी तिमाही के दौरान बैंक की जमाराशि में पिछले वर्ष की इसी अवधि की तुलना में 27% की वृद्धि हुई है। कुल जमाराशि अब 1.43 लाख करोड़ रुपये हो गई है, जबकि कुल अग्रिम राशि 1.31 लाख करोड़ रुपये है। चालू खाता और बचत खाता (सीएएसए) अनुपात कुल जमाराशि का 33.2% है। बैंक की स्थिरता का सूचक पूंजी पर्याप्तता अनुपात (सीएआर) 15.6% है, जो विनियामक आवश्यकता से अधिक है। बैंक के प्रदर्शन पर बोलते हुए, एमडी और सीईओ (अंतरिम) रतन कुमार केशन ने कहा, ह्लदूसरी तिमाही में बंधन बैंक का मजबूत प्रदर्शन प्रभावी जोखिम प्रबंधन और अनुपालन पर हमारे फोकस के साथ गुणवत्ता वृद्धि में गति को दर्शाता है। हमारी सफलता हमारे ग्राहकों के विश्वास और हमारे कर्मचारियों के समर्पण पर आधारित है। प्रौद्योगिकी में नवाचार पर ध्यान केंद्रित करके, हमारी प्रक्रियाओं को परिष्कृत करके, और उत्पादों व लोगों की क्षमताओं को बढ़ाकर, हम बंधन बैंक 2.0 के लिए विकास के अगले चरण को आगे बढ़ाने के लिए अच्छी स्थिति में हैं।

बैंक अपनी परिसंपत्तियों में विविधता लाने के लिए प्रतिबद्ध है, जिसका स्पष्ट ध्यान अपने खुदरा पोर्टफोलियो के विस्तार पर है। अधिक से अधिक डिजिटलीकरण एक प्रमुख प्राथमिकता है, जिसका उद्देश्य उत्पादकता और दक्षता को बढ़ावा देना है, साथ ही समग्र ग्राहक अनुभव को बेहतर बनाना है। हाल के महीनों में, बैंक ने कई नए उत्पाद लॉन्च किए हैं, जिनमें व्यापार सेवाएं, पेंशन योजनाएं, अवनी बचत खाता और जीएसटी भुगतान सेवा शामिल हैं।

हुबली–मुजफ्फरपुर एवं एसएमवीटी बेंगलुरू–दानापुर के मध्य चलेगी पूजा स्पेशल ट्रेन

प्रातः किरण संवाददात

हाजीपुर । दीपावली एवं छठ पूजा में यात्रियों के सुविधाजनक आवागमन को देखते हुए पूर्व मध्य रेल के विभिन्न स्टेशनों से लगभग 122 जोड़ी पूजा स्पेशल ट्रेनों का परिचालन किया जा रहा है ।इसके अलावा लगभग 42 जोड़ी स्पेशल ट्रेनें ऐसी भी हैं जो पूर्व मध्य रेल के स्टेशनों से गुजरती हैं । इसी क्रम में इसके अलावा पंडित दीन दयाल उपाध्याय जंक्शन के रास्ते हुबली-मुजफ्फरपुर एवं एसएमवीटी बेंगलुरू-दानापुर के मध्य एक-एक जोड़ी पूजा स्पेशल ट्रेन का परिचालन किया जाएगा ।

1. गाड़ी संख्या 07373 हुबली-मुजफ्फरपुर पूजा स्पेशल हुबली से 27.10.2024 को 17.20 बजे प्रस्थान कर विभिन्न स्टेशनों पर रूकते हुए दूसरे दिन 16.00 बजे मुजफ्फरपुर पहुंचेगी ।
2. गाड़ी संख्या 07374 मुजफ्फरपुर-हुबली पूजा स्पेशल 30.10.2024 को मुजफ्फरपुर से 13.15 बजे खुलकर विभिन्न स्टेशनों पर रूकते हुए दूसरे दिन 10.30 बजे हुबली पहुंचेगी ।
3. गाड़ी संख्या 06235 एसएमवीटी बेंगलुरू-दानापुर पूजा स्पेशल 03.11.2024 को एसएमवीटी बेंगलुरू से 23.00 बजे खुलकर विभिन्न स्टेशनों पर रूकते हुए दूसरे दिन 16.30 बजे दानापुर पहुंचेगी ।
4. गाड़ी संख्या 06236 दानापुर-एसएमवीटी बेंगलुरू पूजा स्पेशल 09.11.2024 को दानापुर से 08.05 बजे खुलकर विभिन्न स्टेशनों पर रूकते हुए दूसरे दिन 07.30 बजे एसएमवीटी बेंगलुरू पहुंचेगी ।

यात्रीगण एनटीईएस द्वारा रेल परिचालन से जुड़ी अद्यतन जानकारी प्राप्त कर सकते हैं ।

बिना ओपन हार्ट सर्जरी के टीएवीआर प्रक्रिया से 74 वर्षीय विदेशी मरीज की जान बचाई गई

प्रातः किरण संवाददात

सर्वोदय हॉस्पिटल, सेक्टर 8, फरीदाबाद में हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ. रंजन मोदी एवं टीम ने एओर्टिक स्टेनोसिस नामक गंभीर हृदय की बीमारी का सफल इलाज कर अफ्रीका के 74 वर्षीय अर्मू अग्निमन पॉल मरीज की जान बचाई यदि इसका समय पर इलाज ना किया जाए, तो मरीज की हालत तेजी से बिगड़ सकती है और यह जानलेवा भी साबित हो सकता है। एओर्टिक स्टेनोसिस ज्यादातर 65 वर्ष से अधिक उम्र के लोगों में (लगभग 5-7% तक) पाया जाता है। डॉ. रंजन मोदी, सीनियर कंसलटेंट एंड हेड - इंटरवेंशनल कार्डियोलॉजी बताते है कि ह्लमरीज जब हमारे पास आया तो उसने बताया की उसे पिछले 4-5 महीनों से सीने में दर्द, साँस लेने में कठिनाई, बेहोशी, और चक्कर आने जैसे गंभीर लक्षणों का सामना करना पड़ रहा था। अगर सही समय पर इसका इलाज नहीं होता तो हार्ट फेलियर का जोखिम बढ़ जाता है।

जब हमारी टीम ने जाँच की तो पता चला की मरीज को गंभीर एओर्टिक स्टेनोसिस है इसमें हमने ओपन हार्ट सर्जरी ना करके ट्रांसकैथेटर एओर्टिक वाल्व रिप्लेसमेंट टीएवीआर (ळअश्फ) प्रक्रिया को अंजाम दिया । ळअश्फ प्रक्रिया के दौरान मरीज का वाल्व सिर्फ 8 मिमी था, जो सामान्य वाल्व से छोटा था, इसके बावजूद सर्जरी सफलतापूर्वक की गई। इस प्रक्रिया में हम कैथेटर के माध्यम से खराब वाल्व की जगह नयी वाल्व लगाते हैं` इस प्रक्रिया को करने का सबसे बड़ा फायदा यह है कि टीएवीआर (ळअश्फ) ना केवल ओपन-हार्ट सर्जरी की आवश्यकता को रोकता है, बल्कि संक्रमण की संभावना को भी कम करता है और सर्जरी के बाद वाले दर्द के जोखिम को भी कम करता है` इन जटिलताओं के बावजूद, टीएवीआर (ळअश्फ) प्रक्रिया सफल रही। मरीज अब बिलकुल ठीक है और तीन दिनों के भीतर उसे छुट्टी दे दी गई और वह अब अपनी सामान्य गतिविधियों को करने में भी सक्षम है`

सर्वोदय हेल्थकेयर के चेयरमैन डॉ. राकेश गुप्ता ने बताया कि ह्लआज सर्वोदय हॉस्पिटल में हमारे पास सेंटर फॉर कार्डियक साइंसेज में अनुभवी हृदय विशेषज्ञों की टीम जटिल हृदय रोगों के उपचार और देखभाल के लिए प्रशिक्षित हैं हमने क्षेत्र के हृदय रोग की जरूरतों को समझते हुए बच्चों से लेकर बड़ों तक की सभी हृदय रोग से जुडी बीमारियों का इलाज उपलब्ध करवाया है, चाहे उसके लिए छोटे छिद्र से सर्जरी हो या एडवांस्ड डायग्नोस्टिक मशीनों से बीमारी का पता लगाना हो` यही सब मिलकर हमें उत्तर भारत के बेहतरीन हार्ट इंस्टिट्यूट में से एक बनाते हैं`

तेलपा थाना मे दीपावली एवं छठ पूजा को लेकर शांति समिति की बैठक

प्रातः किरण संवाददात

करपी। शहर तेलपा थाना के प्रांगण में दीपावली एवं छठ महापर्व को शांतिपूर्वक संपन्न करने के लिए क्षेत्र के बुद्धिजीवियों समाजसेवियों एवं जनप्रतिनिधियों के साथ प्रशासनिक स्तर पर बैठक की गई ।बैठक की अध्यक्षता करपी प्रखंड के अंचल अधिकारी आलोक कुमार ने की ।उन्होंने उपस्थित लोगों से आग्रह किया कि दीपावली जैसे दीपोत्सव एवं छठ जैसे पवित्र पर्व को हम सही ढंग से कैसे मनाए इसमें सभी लोगों का सहयोग आवश्यक है। प्रशासन की जिम्मेदारी बनती है कि आपके सहयोग से यह दोनों त्योहारों को सामाजिक सौहार्द के साथ व्यवस्थित किया जाए। कार्यक्रम में उपस्थित लोगों को से आग्रह करते हुए थाना प्रभारी अध्यक्ष सचिन कुमार ने कहा कि आप सभी के सहयोग से ही कोई भी त्यौहार शांतिपूर्वक संपन्न होती है ।शहर तेलपा थाना क्षेत्र में पूर्व में भी कोई ऐसा इतिहास नहीं रहा है जहां कोई आपसी विवाद हो ।लोग आपस में मिलकर सभी धर्म के लोग एक दूसरे के पूजा में सहयोग करते रहे हैं ।शांति समिति की बैठक में पंचायत के मुखिया प्रतिनिधि सुरंजन कुमार खड़ासिंन पंचायत के मुखिया रवि शंकर चौधरी बंभई पंचायत के पूर्व मुखिया देव मंदिर सिंह एवं वर्तमान मुखिया मंटू पटेल राकेश राही राकेश मुस्कान निरज कुमार एवं तेलपा थाना के सभी पुलिस कर्मी उपस्थित रहे।

काराधीन हत्यारोपी भतीजा दोषी करार

प्रातः किरण संवाददाता

औरंगाबाद। व्यवहार न्यायालय औरंगाबाद में एडिजे तीन सुनील कुमार सिंह ने देव थाना कांड संख्या 87/22, एस टी आर -90/24 में निर्णय पर सुनवाई करते हुए एकमात्र काराधीन हत्यारोपी भतीजा गया कुमार नरची देव को भार्दवि धारा -302 में दोषी करार दिया है और सजा के बिन्दु पर सुनवाई के तिथि -28/10/24 निर्धारित किया गया है। अधिवक्ता सतीश कुमार स्नेही ने बताया कि प्राथमिकी सूचक विजेंद्र कुमार नरची देव ने 12 अप्रैल 22 को प्राथमिकी दर्ज कराई थी जिसमें कहा था कि उसकी भाभी सोनवॉ देवी को उसके भतीजा गया कुमार ने लोहे के रड से हमला तब किया जब 12 अप्रैल 22 सुबह 08 बजे देव से समान लाने गांव से सोनवॉ देवी जा रही थी तो रास्ते में अभियुक्त ने टेक कर परिवार के अन्य सदस्यों के उपस्थित में लोहे के रड से पैर पर मार कर गिरा दिया। उसके बाद सिर और सीने पर वार किया जिसमें महिला बुरी तरह से जख्मी हो गई तब अभियुक्त भाग गया घर के अन्य सदस्यों ने देव,सदर अस्पताल औरंगाबाद के बाद गया बेहतर इलाज के लिए ले जा रहे थे तो रास्ते में आमस में मृत्यु हो गई थी,मृतका का पोस्टमार्टम किया गया था, अभियुक्त पर आरोप पत्र 30/06/22 को आया था और आरोप गठन 29 सितम्बर 22 को हुई थी।लोहे के रड को न्यायालय में प्रस्तुत किया

परिवारवाद और बाहुबल की राजनीति को खत्म करने के लिए मोहम्मद अमजद का जीतना जरूरी : मोहम्मद समदानी

प्रातः किरण संवाददाता

गया बेलागंज । बारा पंचायत के पूर्व मुखिया एवं राजद के वरिष्ट नेता मोहम्मद समदानी ने बेलागंज विधानसभा क्षेत्र में जन सुराज पार्टी के प्रत्याशी मोहम्मद अमजद को अपना पूर्ण समर्थन देने की घोषणा की गई है। बारा गांव में आज मोहम्मद अमजद ने मोहम्मद समदानी से मुलाकात कर उनका आशीर्वाद लिया। इस दौरान मोहम्मद समदानी लोगों से बात करते हुए कहा कि ने वह तन, मन, और धन से जन सुराज के प्रत्याशी मोहम्मद अमजद के साथ हैं और उनकी जीत के लिए हर संभव प्रयास करेंगे।

उन्होंने अपने बयान में कहा कि बेलागंज विधानसभा अब परिवारवाद और गुंडाराज से मुक्ति चाहता है ।इस समय बेलागंज को एक सक्षम और जन-समर्पित नेता की जरूरत है। और मोहम्मद अमजद ही एक नेता हैं, जो जनता की अपेक्षाओं पर खरे उतरेंगे और विकास की नई राह खोलेंगे। पूर्व मुखिया मोहम्मद समदानी ने कहा कि बेलागंज क्षेत्र में पारिवारिक एवं बाहुबल राजनीति का अंत हो और जनता को एक ऐसा नेता मिले जो बिना किसी व्यक्तिगत स्वार्थ के, पूरी ईमानदारी और पारदर्शिता के साथ काम करे।

मोहम्मद अमजद के नेतृत्व में बेलागंज में समग्र विकास होगा, जिसमें शिक्षा, स्वास्थ्य, और बुनियादी ढांचे पर विशेष ध्यान दिया जाएगा।इस मौके पर जन सुराज के स्टार प्रचारक और जन सुराज पार्टी के एमएलसी अफाक अहमद, पूर्व सांसद डॉक्टर एजाज अली, नवादा जिले के पूर्व कलेक्टर नारायण यादव बारा पंचायत के पूर्व मुखिया मोहम्मद सरफराज,डा बी डी शर्मा मौजूद रहे हैं।

निर्मल वर्मा के 19वीं पुण्यतिथि पर सामयिक संवाद

औरंगाबाद, प्रातः किरण। जिला मुख्यालय औरंगाबाद की महत्वपूर्ण साहित्यिक संस्था समकालीन जवाबदेही परिवार के तत्वावधान में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर चर्चित लेखक निर्मल वर्मा के 19 पुण्यतिथि के मौके पर सामयिक संवाद का कार्यक्रम आयोजित किया गया।

समकालीन जवाबदेही पत्रिका के प्रधान संपादक डॉ सुरेन्द्र प्रसाद मिश्र के आह्वान पर संवाद करते हुए पत्रिका के सह संपादक सुरेश विद्यार्थी ने बताया कि आधुनिक हिंदी साहित्य के मूर्धन्य कथाकार एवं संवेदना जगाने वाले पत्रकार के रूप में चर्चित निर्मल वर्मा के साहित्य ने लोगों को भीतर से जागने का कार्य किया था।हिंदी कहानी में आधुनिक बोध लाने वाले साहित्यकार के रूप में उन्हें प्रसिद्धि प्राप्त है। कहानी में प्रत्यक्ष यथार्थ को भेद कर उसके भीतर तह तक पहुंचाने वाले,उनकी रचनाएं प्रत्यक्ष अनुभव को साझा करने वाले भारतीय साहित्य एवं पश्चिम के साहित्य के बीच अंतर्द्वंद पर गहनता एवं व्यापकता से विचार किया और उसे लोगों के सामने परोसने का कार्य किया।परिंदे, जलती झाड़ी,बीच बहस में उनकी काव्य संग्रह अंतर्द्वंद में फंसे मानव के मन को बाहर निकालने वाली है। उनके उपन्यास वे दिन,लाल टीन की छत,एक चिथडा सुख, रात का रिपोर्टर काफी लोकप्रिय उपन्यास है इन उपन्यासों में मनोवैज्ञानिक तथ्यों के साथ विश्लेषण किया गया है।पात्रों की गतिविधियों को गतिशीलता भी प्रदान की गई है। धुंध से उठती धुन उनके संस्मरण डायरी जीवंतता का प्रतीक है। उन्हे ज्ञानपीठ पुरस्कार से उन्हें सम्मानित किया गया एवं साहित्य के नोबेल पुरस्कार के लिए भी नामित किया गया था।

शिक्षा शास्त्र के नव नामांकित विद्यार्थियों के लिए प्रेरणा सत्र इंडक्शन मीट का आयोजन

प्रातः किरण संवाददाता

गया।शिक्षा शास्त्र विभाग गया कॉलेज गया में आज शुक्रवार को बी एड सत्र 24 26 में नव नामांकित विद्यार्थियों के लिए प्रेरणा सत्र इंडक्शन मीट का आयोजन किया गया है इस कार्यक्रम का शुभारंभ प्राचार्य गया कॉलेज गया प्रोफेसर सतीश सिंह चंद्र विभाग अध्यक्ष शिक्षाशास्त्र विभाग डॉक्टर धनंजय धीरज एवं अन्य शिक्षकों ने संयुक्त रूप से मिलकर किया अपने संबोधन में प्राचार्य प्रोफेसर सतीश सिंह चंद्र ने कहा कि शिक्षक एक विनम्र पेशा है और शिक्षक राष्ट्र के निमार्ता कहे जाते हैं तो आप तमाम बी एड में नामांकित विद्यार्थियों का व्यवहार व आचरण एक शिक्षक की मयार्दाओं के अनुरूप होना चाहिए किसी भी अन्य पेशे की तुलना में शिक्षण अत्यधिक सम्मान का पेश है यदि आपके पास शिक्षण कौशलों का ज्ञान है तो शिक्षण से अत्यधिक आनंददाई दुनिया में और कोई दूसरी विद्या नहीं है. हम शिक्षकों को अपने कर्तव्यों के प्रति सदैव जागरूक रहना होगा और विद्यार्थियों की आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया को अंजाम देना होगा विभाग अध्यक्ष डॉक्टर धनंजय धीरज ने कहा कि कक्षाओं से विद्यार्थियों का पलायन शिक्षा जगत की सबसे बड़ी चुनौती है और इसका मूल कारण है शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया का आनंददाई ना होना शिक्षक के पास यदि विषयगत ज्ञान और शिक्षण कौशल हो तो वह किसी भी कक्षा किसी भी प्रकरण को आनंददाई बना सकता है। कक्षाओं में विद्यार्थियों की उपस्थिति पर चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि विद्यार्थियों की अत्यधिक संख्या में उपस्थित शिक्षक को शिक्षण अधिगम के लिए अभिप्रेरित करती है. नियमित रूप से आप यदि कक्षाओं में अपनी उपस्थिति दर्ज करते हैं तो तो हम आपको इन दो वर्षों में एक वैश्विक शिक्षक बनाएंगे शिक्षा शास्त्र विभाग 2017 से निरंतर इस दिशा में अग्रसर है हमें गर्व है कि हमारे विद्यार्थी देश के नाम चिन संस्थानों में आज नामांकन पा रहे है शोध कार रहे है या नौकरी कर रहे है।सहायक प्राध्यापक डॉक्टर अभिषेक कुमार ने कहा कि समाज में आज कुशल शिक्षकों का घोर अभाव है और शिक्षा शास्त्र विभाग में प्रशिक्षण प्राप्त करके स्वयं को एक कुशल शिक्षक के रूप में में प्रतिस्थापित कर सकते हैं। डॉ अजय शर्मा ने कहा कि शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया में कल का अभूतपूर्व योगदान है और विभाग में कला आधारित शिक्षण पर काफी बल दिया जाता है। डॉ मोहम्मद सादर आलम ने कहा कि शिक्षा तकनीकी आज शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का अभिन्न अंग है विभाग में तकनीकी आधारित शिक्षण अधिगम की भी व्यवस्था है और समय-समय पर विद्यार्थियों को कंप्यूटर शिक्षा से रूबरू होकर शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया को संचालित करने का कौशल भी सिखाया जाता है इस कार्यक्रम का संचालन कार्यक्रम समन्वयक सहायक प्राध्यापक डॉक्टर आर एन प्रियदर्शनी ने किया धन्यवाद ज्ञापन ।

दीपावली और छठ पर्व को ले कुर्था थाने में शांति समिति की हुई बैठक

प्रातः किरण संवाददाता

कुर्था (अरवल) दीपावली व छठ पर्व को लेक र कुर्था थाना परिसर में थानाध्यक्ष सुरेंद्र कुमार के अध्यक्षता में शांति समिति की बैठक हुई। बैठक में सभी जनप्रतिनिधियों को दीपावली व छठ पर्व को शांतिपूर्ण ढंग से मनाने की अपील की। थानाध्यक्ष ने उपस्थित जनप्रतिनिधियों को कहा कि अगर कोई स्थान संवेदनशील हो तो वे इसकी जानकारी पुलिस को दें। उन्होंने यह भी बताया कि क्षेत्र के सभी संवेदनशील जगहों पर पुलिस बलों की तैनाती भी की जाएगी। साथ में पुलिस गश्ती प्रतिदिन की जा रही है। इस मौके पर कुर्था खेमकरण सराय पूर्व मुखिया पति आफताब आलम उर्फ मुन्ना कुर्था राजद प्रखंड अध्यक्ष डोमन यादव, एवं अन्य जनप्रतिनिधि थे।

मतदान कार्य में लगे सभी सेक्टर, पुलिस पदाधिकारी, मास्टर ट्रेनर एवं तकनीकी कर्मियों को दिया गया प्रशिक्षण

मतदान के पहले अपनी पूरी दायित्व को अच्छी तरह समझ लें:जिलाधिकारी

प्रातः किरण संवाददाता

गया।बिहार विधानसभा उप निर्वाचन, 2024 के अवसर पर गया जिले के दो विधानसभा क्षेत्र इमामगंज एवं बेलागंज में दिनांक 13 नवंबर 2024 को मतदान की तिथि निर्धारित है, जिसे स्वतंत्र, शांतिपूर्ण, निष्पक्ष एवं भयमुक्त वातावरण में संपन्न कराने के उद्देश्य से आज हरिदास सेमिनरी में जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह जिला पदाधिकारी गया डॉ० त्यागराजन एसएम तथा वरीय पुलिस अधीक्षक, गया आशीष भारती द्वारा संयुक्त रूप से मतदान कार्य में लगे सभी सेक्टर पदाधिकारी, सभी सेक्टर पुलिस पदाधिकारी, मास्टर ट्रेनर एव तकनीकी कर्मियों को प्रशिक्षण दिया गया है।जिला निर्वाचन पदाधिकारी-सह-जिलाधिकारी डॉ० त्यागराजन एसएम ने संबोधित करते हुए कहा कि आप सभी सेक्टर पदाधिकारी के क्षेत्र के सभी मतदान केंद्र एवं ईवीएम संबंधित क्या क्या काम करना है, उसे स्पष्टता से समझ ले कि क्या करना है और क्या नहीं करना है ताकि मतदान के तिथि में कोई दिक्कत न हो। यदि किसी को लगता है कि उन्हें अतिरिक्त ट्रेनिंग की आवश्यकता है, तो बताए, उन्हें ट्रेनिंग दिया जाएगा। मतदान के पहले अपनी पूरी दायित्व को अच्छी तरह समझ लें। सभी प्रजाईडिंग ऑफिसर को ईवीएम मशीन दिए जाएंगे, वह सभी अपने मशीन को अपने साथ सीधे तौर पर मतदान केंद्र या क्लस्टर पॉइंट पर ले जाएंगे, इसके अलावा किसी भी अन्य जगहों पर किसी भी हालत में कहीं नहीं जाएंगे। उन्होंने कहा कि मतदान समाप्ति के पश्चात

प्रजाईडिंग ऑफिसर ईवीएम को सीधे स्ट्रांग रूम में लाएंगे। उन्होंने का की 13 नवंबर को चुनाव है। 11 नवंबर को पार्टी मिलान किया जाना है। गया कॉलेज, गया में ही पार्टी मिलान होगा। इसके अलावा सभी मतदान कर्मियों को ईवीएम का हैंड्स ऑन ट्रेनिंग दिया गया। हर सेक्टर पदाधिकारी के पास रिजर्व में ईवीएम रखा जाएगा ताकि किसी भी बूथ पर अचानक कोई ईवीएम खराब होने से तुरंत रिप्लेस कराया जा सके। इसके अलावा प्रत्येक सेक्टर पदाधिकारी के साथ एक-एक मास्टर ट्रेनर को भी टैग किया गया है, जिससे कोई भी तकनीकी खराबी किसी बूथ से प्राप्त होने पर उसे तुरंत समाधान करवाया जा सके।

प्रत्येक मतदान केंद्र पर ईवीएम को कैसे सील करना है। कौन-कौन से प्रपत्र भरे जाएंगे इत्यादि की पूरी जानकारी अच्छी तरह रख लें ताकि मतदान के दिन कोई समस्या नहीं हो। उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि मॉक पोल के दौरान सी यू खराब रहता है तो सी यू को तुरंत बदलना होगा। मतदान शुरू होने के बाद यदि सी यू खराब होता है तो पूरी सेट को बदलना होगा। मॉकपोल के बाद १ जरूर दबाए। मतदान समाप्ति के बाद क्लोज बटन जरूर दबाए। सभी सेक्टर पदाधिकारी के पास अनिवार्य रूप अपने वरीय अधिकारियों का दूरभाष नंबर उपलब्ध रहे। हर दो घंटे पर सभी बूथों से पोलिंग की रिपोर्ट लेनी होगी। मतदान के दिन लास्ट 02 घंटे काफी सतर्कता एव विशेष ध्यान से काम करना होता है।

डीएम ने निर्देश दिया कि सभी सेक्टर पदाधिकारी अभी से लेकर मतदान तक हर दिन अपने क्षेत्र के विधि व्यवस्था संबंधित खैरियत प्रतिवेदन अनिवार्य रूप से उपलब्ध करवाएंगे। सभी मतदान केंद्रों का आज से निश्चित तौर भी विजिट करे, इसमें कोई कोताही नही बरते। पूर्व से चिन्हित वल्नरेबल बूथ ,टोला पर विशेष नजर रखे। मतदान में संभावित व्यवधान डालने वाले व्यक्तियों को चिन्हित कर नियम अनुसार कार्रवाई करें।

जिला पदाधिकारी ने इमामगंज तथा बेलागंज विधानसभा के मतदाताओं से अपील किया है कि आप सभी मतदाता भयमुक्त वातावरण में अपने घरों से निकालकर अपना वोट का प्रयोग करें। प्रशासन की स्तर से शांतिपूर्ण चुनाव संपन्न करने के लिए अनेको कार्य किए गए हैं।

डीएम ने स्पष्ट निर्देश दिया है कि यदि किसी मतदाता के पास मतदाता पर्ची वोटर्स स्लिप नही रहने पर भी पात्र 13 दस्तावेज आइडी में से कोई भी 01 दस्तावेज को देख कर मतदान करने दिया जाएगा। वोटर स्लीव के आभाव में कोई मतदाता बिना मतदान के वापस नही लौटे, इसे पूरी तरह सुनिश्चित करना होगा।

वरीय पुलिस अधीक्षक ने संबोधित करते हुए कहा कि इमामगंज तथा बेलागंज विधानसभा में पूर्व में भी चुनाव के दौरान छिटपुट घटनाएं हुई है, उसे लेकर वर्तमान समय मे क्या स्थिति है। उन क्षेत्रों का, सम्बंधित थानाध्यक्ष आकलन कर ले एव उन स्थानों पर विशेष अलर्ट बरते। पूरी निष्पक्ष एवं तत्परता के साथ चुनाव कार्य संपन्न करवाये। मतदान केंद्रों के बाहर अनावश्यक भीड़ नही लगे, इसे सुनिश्चित करवाये।

इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में डीडीसी, अपर समाहर्ता राजस्व, एडीएम विभागीय जांच,

सीडीओ शेरघाटी, सदर, सहायक निदेशक, अल्पसंख्यक कल्याण, सहायक निवार्ची पदाधिकारी इमामगंज तथा बेलागंज विधानसभा, जिला जन सम्पर्क पदाधिकारी, वरीय उप समाहर्तागण सहित अन्य संबंधित पदाधिकारी उपस्थित थे।

पैक्स निर्वाचन को शांतिपूर्ण एवं भयमुक्त वातावरण में संपन्न कराने हेतु 17 कोषांग का हुआ गठन

- **सारण जिला में 277 पैक्सों का निर्वाचन कार्य 05 चरणों में संपन्न होगा**

प्रातः किरण संवाददाता

छपरा कार्यालय। बिहार राज्य निर्वाचन प्राधिकार, बिहार, पटना द्वारा प्राथमिक कृषि साख समिति (पैक्स) के निर्वाचन हेतु अधिसूचना जारी कर दिया गया है। निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार सारण जिला के 277 फैक्सों का निर्वाचन 05 चरणों में संपन्न कराया जाएगा। पैक्स निर्वाचन के प्रथम चरण में मढ़ौरा, अमनौर, तरैया, मकेर एवं लहलादपुर प्रखंड में 26 नवंबर द्वितीय चरण में इसुआपुर, मशरख, पानापुर, गड़खा एवं रिविलगंज प्रखंड में 27 नवंबर को मतदान होगा।तृतीय चरण में सोनपुर, दरियापुर, परसा एवं बनियापुर प्रखंड में 29 नवंबर , चौथे चरण में मांझी, एकमा, जलालपुर एवं नगरा प्रखंड में 01 दिसंबर एवं पंचम चरण में छपरा सदर एवं दिघवारा प्रखंड में 3 दिसंबर को मतदान होगा। सभी चरणों में पैक्स निर्वाचन के उपरांत उसी दिन अथवा उसके अगले दिन मतगणना कार्य संपन्न करा लिया जाएगा।

जिला निर्वाचन पदाधिकारी (स0स0) द्वारा पैक्स चुनाव को स्वच्छ, स्वतंत्र, शांतिपूर्ण एवं भयमुक्त वातावरण में संपन्न कराने हेतु जिला स्तर पर 17 कोषांगों का गठन किया गया है। जिसमें कार्मिक कोषांग, प्रशिक्षण कोषांग, मतपेटिका कोषांग, सामग्री कोषांग, वाहन कोषांग, ब्रज गृह-सह -मतगणना कोषांग, विधि व्यवस्था-सह- सेक्टर प्रबंधन कोषांग, आदर्श आचार संहिता कोषांग, निर्वाचन व्यय लेखा कोषांग, मतपत्र कोषांग, नाम निर्देशन कोषांग, प्रेक्षक कोषांग, मीडिया कोषांग, डिजिटल वीडियो कैमरा आई.टी.

कोषांग, जिला नियंत्रण कक्ष-सह-हेल्पलाइन कोषांग, जन शिकायत कोषांग एवं जिला निर्वाचन कोषांग शामिल हैं।

सभी कोषांग के वरीय एवं नोडल पदाधिकारी को उनके कार्यों एवं दायित्वों की जानकारी दे दी गई है। सभी कोषांगों को समयबद्ध ढंग से कार्यों के निष्पादन का निदेश दिया गया है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के सकारात्मक एवं नकारात्मक पक्ष पर वाद-विवाद प्रतियोगिता आयोजित

प्रातः किरण संवाददात

बोधगया।मगध विश्वविद्यालय के राष्ट्रीय शिक्षा नीति प्रकोष्ठ एवं आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ के संयुक्त तत्वावधान में शुक्रवार को मन्नू लाल केंद्रीय पुस्तकालय के सभागार में राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 सकारात्मक एवं नकारात्मक पक्ष विषय पर एक वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया है।इस प्रतियोगिता में विभिन्न विभागों के विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया है। विद्यार्थियों ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति के सकारात्मक एवं नकारात्मक पक्ष संबंधी गहन तर्क-वितर्क प्रस्तुत किया है।इस अवसर पर निर्णायक के रूप में आईक्यूएसी समन्वयक प्रो मुकेश कुमार, अंग्रेजी विभाग की वरिष्ठ प्रो निभा सिंह एवं जंतु विज्ञान विभाग के वरिष्ठ प्रो एसएनपी यादव डीन उपस्थित थे। प्रतियोगिता में अंग्रेजी विभाग की नम्रता को प्रथम पुरस्कार भूगोल विभाग के बिट्टू कुमार को द्वितीय, इतिहास विभाग के सुशील कुमार को तृतीय पुरस्कार तथा शिक्षा विभाग के विवेक एवं आशीष को संयुक्त रूप से प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किया गया है। इस कार्यक्रम के सफल आयोजन में डॉ शिल्पी बनर्जी, डॉ पूनम, डॉ वंदना,डॉ ममता मेहरा एवं डॉ एकता वर्मा की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। प्रतियोगिता के विजेताओं की घोषणा समन्वयक अनूप एवं राजनीतिक विज्ञान विभाग की प्रोफेसर डॉ प्रियंका सिंह ने की है। इसके साथ-साथ राजनीति विज्ञान विभाग के विद्यार्थी मनीष कुमार, हिमांशु, सूरज एवं शोधार्थी हर्ष एवं कुलदीप तथा एनईपी सारथी विवेक एवं आशीष ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाया है। प्रतियोगिता के विजेताओं की घोषणा एनईपी समन्वयक डॉ प्रियंका सिंह द्वारा किया गया है।इस कार्यक्रम का संचालन संस्कृत विभाग की सहायक आचार्य डॉ एकता वर्मा तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ ममता मेहरा ने किया है ।

मतदाता पुनरीक्षण को लेकर बीएलओ की बैठक आयोजित

प्रातः किरण संवाददाता

दरियापुर।स्थानीय प्रखण्ड कार्यालय स्थित सभा भवन में मतदाता पुनरीक्षण कार्य को लेकर बी एल ओ की एक बैठक आयोजित की गई।जिसमे प्रखण्ड शिक्षा पदाधिकारी नीरज चौधरी के द्वारा संक्षिप्त मतदाता पुनरीक्षण कार्य को लेकर विस्तृत जानकारी दी गई।उन्होंने कहा कि चुनाव संबंधित कार्य अतिमहत्वपूर्ण होता है,जिसकी सफलता आप लोगों पर ही निर्भर होता है।इसलिए इस कार्य को निर्धारित समय सीमा के तहत त्रुटिपूर्ण तरीके से संपन्न करना आपकी जिम्मेवारी बनती है।इस कार्यक्रम के तहत मतदाता सूची में नए नाम जोड़ने,सुधार करने तथा नाम को विलोपित करने का कार्य किया जाएगा।इसके साथ ही उन्होंने कई अन्य निर्देश भी दिए।इसके साथ ही निर्वाचन कोषांग में प्रतिनियुक्त कर्मियों के द्वारा बीएलओ कार्य में आ रही तकनीकी कठिनाइयों को भी दूर किया गया।इस बैठक में बीएलओ आफताब आलम, सत्येंद्र कुमार,संतोष कुमार,नवल आदि थे।

पान जाति को उसका हक दिलाने के लिए माँझी में आईपी गुप्ता की दहाड़

प्रातः किरण संवाददात

माँझी। आगामी 27 तारीख को मोतिहारी में आयोजित पान महासभा की रैली को ऐतिहासिक बनाने के लिये शुक्रवार को माँझी प्रखंड के सरयूपार में पान समाज द्वारा एक सभा का आयोजन किया गया। सभा की अध्यक्षता डॉ रविशंकर प्रसाद ने किया। बैठक को संबोधित करते हुए पान समाज के राष्ट्रीय अध्यक्ष ई०आई पी गुप्ता ने कहा कि सर्वोच्च न्यायलय ने तांती ततवा को अनुसूचित जाति के दायरे से बाहर कर दिया है। उन्होंने साफ तौर पर कहा कि तांती ततवा से सबंधित फाइल समाजिक न्याय अधिकारिता मंत्रालय भारत सरकार के पास लंबित है। जिस कागज को सामान्य प्रशासन विभाग पटना में भेजवाना है तथा पटना से सामाजिक न्याय अधिकारिता मंत्रालय भारत सरकार को जबाब भेजना है। उन्होंने जोर देकर कहा कि सभा का मुख्य उदेश्य है कि पान समाज के ईमानदार लोगों को एक साथ एक बैनर तले हाँको रथ हम पान है इस तांती ततवा को अनुसुचित जाति की सुविधा बहाल करानी है। वहीं माँझी प्रखंड प्रमुख प्रतिनिधि राजेश कुमार ने कहा कि हमारी सिर्फ एक ही लड़ाई है वह तांती ततवा को पुनः अनुसूचित जाति का दर्जा प्राप्त हो। जिसके लिए हमें नई दिल्ली समाजिक न्याय आधिकारिता मंत्रालय भारत सरकार से कागज सामान्य प्रशासन विभाग को भेजते हुए बिहार सरकार उसे पुनः सुधार कर नई दिल्ली भेजे। उन्होंने कहा कि तांती ततवा अपने हक की लड़ाई चम्पारण की भुमि भितिहरवा से शुरू किया है। हमारा समाज अपने अधिकार की लड़ाई अंतिम सांस तक लड़कर अपना अधिकार प्राप्त कर के रहेगा। उन्होंने तांती ततवा समाज के भाईयों से अपील करते हुए कहा कि दिगभ्रमित होने की जरूरत नहीं है। पान समुदाय की राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा हीरा मनी तांती ने कहा कि 27 अक्टूबर को हमलोगों बड़ी संख्या मोतिहारी पहुँचकर हाँको रथ हम पान है के नारे के साथ मोतिहारी के डीएम के माध्यम से भारत सरकार व बिहार सरकार तक पुनः तांती ततवा को पान का दर्जा हेतु अपनी आवाज को बुलंद करें।

दृढ़ संकल्प और अनुशासित मेहनत का परिणाम, भोजपुर की सीमा तोमर ने सिविल सेवा परीक्षा 2023 में आरक्षित सूची में 86वीं रैंक हासिल की

भोजपुर की बहू ने बढ़ाया जिले का नाम

प्रातः किरण संवाददाता

सीमा तोमर, जिन्होंने ठक्ळ श्रीनगर से केमिकल इंजीनियरिंग में स्नातक किया है, ने वढरउ सिविल सेवा परीक्षा 2023 की आरक्षित सूची में 86वीं रैंक हासिल की है। वे बिहार के भोजपुर जिले के कोईलवर ब्लॉक के ॅ४६ल्ल गाँव की रहने वाली हैं, और अनिल सिंह (सेवानिवृत्त पुलिस उप निरीक्षक) और पुष्पा देवी की पुत्रवधु हैं।

सरकारी सेवा में भी दिखाया समर्पण

वर्तमान में श्रीमती सीमा तोमर भारत सरकार के गृह मंत्रालय में अधिकारी के पद पर कार्यरत हैं। उनके पति, श्री अपूर्व कुमार सिंह, 2019 बैच के आई. आई. एस. अधिकारी हैं, जो वर्तमान में निर्वाचन आयोग में सहायक निदेशक के पद पर कार्यरत हैं।

लगन और अनुशासन ने दिलाई सफलता

सीमा की निरंतर अनुशासित मेहनत और समर्पण ने उन्हें सिविल सेवा परीक्षा में सफलता दिलाई। उन्होंने भूगोल को वैकल्पिक विषय के रूप में चुना था और अपनी कड़ी मेहनत से यह सफलता हासिल की है।

स्वामिनी सीता का साम्राज्य ही राम राज्य कहलाता है

छपरा। श्री जानकी जी का अनुग्रह सहज करुणा से परिपूर्ण है। गुण-दोष की समीक्षा किये बिना सभी को आश्रय देना ही उनका वैशिष्ट्य है। यह वक्तव्य लक्ष्मण किलाधीश जी महाराज ने छपरा हनुमान जयन्ती में दिया। सत्तावन वर्षों से आयोजित होने वाले इस महोत्सव में अयोध्या से पधारे आचार्य मिथलेशनन्दिनीशरण जी ने कहा कि श्री हनुमान जी महाराज सेवा और समर्पण के प्रतीक हैं। श्रीराम का सन्देश ले जाकर सीता जी को और सीता जी का पता लगाकर श्रीराम जी को श्री हनुमान जी ने संतुष्ट किया है। प्रभु के सभी सेवकों में सर्वाधिक प्रिय पात्र के रूप में श्री हनुमान जी विख्यात हैं, उन्होने अपने सेवाबल से प्रभु को अपने अधीन कर लिया है। श्री किशोरी जी के महत्त्व पर बोलते हुये आचार्य जी ने कहा कि भगवान स्वयं श्री सीता जी के अधीन हैं। श्रीराम राज्य की महिमा गाने वाले नहीं जानते कि वास्तविक साम्राज्य किशोरी जू का है। इसका रहस्य रसिक सन्त जानते हैं इसलिए वे गाते हैं - हमारे माई जनकलली के राज। जिनके रस बस भये रघुनन्दन रसिकन के सरताज। श्री जानकी का यह वैभव जीवों के रक्षार्थ है। अपनी विशाल करुणा से श्री जी विश्व प्रपंच में पड़े जीवों की रक्षा करती हैं। इसीलिए श्री गोस्वामी जी महाराज विनय पत्रिका में सीता जी को पुकारते हुये कहते हैं- कबहुँक अम्ब अवसर पाइ। मेरियौ सुधि द्याइबी कछु करुन कथा चलाइ। अपने त्रिदिवसीय प्रवचन में अयोध्या से पधारे संतों ने भक्ति उपासना और पवित्र आचरण के अनेक संदर्भ उद्घाटित किये।

महापर्व छठ से पहले लोगों में डेंगू का डर, लगातार बढ़ रही संख्या, करीब 3000 मरीज सिर्फ पटना में

पटना, प्रातः किरण। बिहार में डेंगू मरीजों की लगातार बढ़ रही संख्या ने त्योहार के इस मौसम में लोगों में डर बैठा दिया है. हालांकि, स्वास्थ्य विभाग और जिला प्रशासन डेंगू से बचने को लेकर सभी तरह की सावधानी बरतने में जुटी है. सरकारी आंकड़ों पर गौर करें तो प्रदेश में डेंगू मरीजों की संख्या में लगातार वृद्धि देखी जा रही है. इस साल प्रदेश में अब तक डेंगू के 5,888 मरीज सामने आ चुके हैं, जिसमे सिर्फ पटना के 2,920 लोग शामिल हैं।

धनतेरस, दीपावली, गोवर्धन पूजा एवं छठ पूजा के अवसर पर गत वर्ष की तुलना में 140 प्रतिशत अधिक पूजा विशेष ट्रेनों का संचालन

प्रातः किरण संवाददाता

छपरा कार्यालय।धनतेरस, दीपावली, गोवर्धन पूजा एवं छठ पूजा के अवसर पर रेल यात्रियों की सुगम आवाजाही के लिये पूर्वोत्तर रेलवे के विभिन्न स्टेशनों से/होकर कुल 144 पूजा विशेष ट्रेनें 1,337 फेरों में चलाई जा रही हैं, जिसमें पूर्वोत्तर रेलवे के स्टेशनों से 84 पूजा विशेष ट्रेनें 848 फेरों में तथा 60 पूजा विशेष ट्रेनें 489 फेरों में पूर्वोत्तर रेलवे के विभिन्न स्टेशनों से होकर देश के प्रमुख नगरों एवं महानगरों के लिये चलाई जा रही हैं। फलस्वरूप पूर्वोत्तर रेलवे के विभिन्न स्टेशनों से/होकर गत वर्ष पूजा विशेष ट्रेनों के 556 फेरों की तुलना में इस वर्ष 1,337 फेरों में पूजा विशेष ट्रेनें चलाई जा रही हैं, जो 140 प्रतिशत अधिक है। यात्रियों की माँग को ध्यान में रखते हुये प्रतिवर्ष चलाई जाने वाली पूजा विशेष ट्रेनों की संख्या में इस वर्ष भारी संख्या में बढ़ोतरी की गई है, जिनमें से पूर्वोत्तर रेलवे से होकर जाने वाली (पासिंग) ट्रेनों का विवरण निम्नलिखित है।

सहरसा-सरहिंद-सहरसा पूजा विशेष गाड़ी सहरसा से 14 से 28 नवम्बर, 2024 तक प्रत्येक बृहस्पतिवार को तथा सरहिंद से 16 से 30 नवम्बर, 2024 तक प्रत्येक शनिवार को चलाई जायेगी।

दरभंगा-दौराई-दरभंगा पूजा विशेष गाड़ी दरभंगा से 09 से 30 नवम्बर, 2024 तक प्रत्येक शनिवार को तथा दौराई से 10 नवम्बर से 01 दिसम्बर, 2024 तक प्रत्येक रविवार को चलाई जायेगी।

मुजफ्फरपुर-आनन्द विहार टर्मिनल-मुजफ्फरपुर पूजा विशेष गाड़ी मुजफ्फरपुर से 23 अक्टूबर से 30 नवम्बर, 2024 तक तथा आनन्द विहार टर्मिनल से 23 अक्टूबर से 01 दिसम्बर, 2024 तक प्रतिदिन चलाई जायेगी।

नागपुर-समस्तीपुर-नागपुर पूजा विशेष गाड़ी नागपुर से 30 अक्टूबर से 13 नवम्बर, 2024 तक प्रत्येक बुधवार को तथा समस्तीपुर से 31 अक्टूबर से 14 नवम्बर, 2024 तक प्रत्येक बृहस्पतिवार को चलाई जायेगी।ग्वालियर-बरौनी-ग्वालियर पूजा विशेष गाड़ी ग्वालियर से 30 अक्टूबर से 29 दिसम्बर, 2024 तक प्रत्येक रविवार एवं बुधवार को तथा बरौनी से 31 अक्टूबर से 30 दिसम्बर, 2024 तक प्रत्येक सोमवार एवं बृहस्पतिवार को चलाई जायेगी।

आगरा कैंट-फारबिसगंज-आगरा कैंट पूजा विशेष गाड़ी आगरा कैंट से 01 से 22 नवम्बर, 2024 तक प्रत्येक शुक्रवार को तथा फारबिसगंज से 02 से 23 नवम्बर, 2024 तक प्रत्येक

शनिवार को चलाई जायेगी।

गुवाहाटी-श्री गंगानगर-गुवाहाटी पूजा विशेष गाड़ी गुवाहाटी से 23 अक्टूबर से 27 नवम्बर, 2024 तक प्रत्येक बुधवार को तथा श्री गंगानगर से 27 अक्टूबर से 01 दिसम्बर, 2024 तक प्रत्येक रविवार को चलाई जायेगी।

कटिहार-अमृतसर-कटिहार पूजा विशेष गाड़ी कटिहार से 24 अक्टूबर से 28 नवम्बर, 2024 तक प्रत्येक बृहस्पतिवार को तथा अमृतसर से 26 अक्टूबर से 30 नवम्बर, 2024 तक प्रत्येक शनिवार को चलाई जायेगी।

कटिहार-अमृतसर-कटिहार पूजा विशेष गाड़ी कटिहार से 23 अक्टूबर से 27 नवम्बर, 2024 तक प्रत्येक बुधवार को तथा अमृतसर से 25 अक्टूबर से 29 नवम्बर, 2024 तक प्रत्येक शुक्रवार को चलाई जायेगी।

आनन्द विहार टर्मिनल-सीतामढ़ी-आनन्द विहार टर्मिनल पूजा विशेष गाड़ी आनन्द विहार टर्मिनल से 23 अक्टूबर से 29 नवम्बर, 2024 तक प्रत्येक बुधवार एवं शुक्रवार को तथा सीतामढ़ी से 24 अक्टूबर से 30 नवम्बर, 2024 तक प्रत्येक बृहस्पतिवार एवं शनिवार को चलाई जायेगी।

आनन्द विहार टर्मिनल-सहरसा-आनन्द विहार टर्मिनल पूजा विशेष गाड़ी आनन्द विहार टर्मिनल से 28 अक्टूबर से 30 नवम्बर, 2024 तक प्रत्येक रविवार, सोमवार, मंगलवार, बृहस्पतिवार, शनिवार को तथा सहरसा से 29 अक्टूबर से 01 दिसम्बर, 2024 तक प्रत्येक रविवार, सोमवार, मंगलवार, बुधवार, शुक्रवार को चलाई जायेगी।

आनन्द विहार टर्मिनल-जोगबनी-आनन्द विहार टर्मिनल पूजा विशेष गाड़ी आनन्द विहार टर्मिनल से 29 अक्टूबर से 12 नवम्बर, 2024 तक प्रत्येक मंगलवार को तथा जोगबनी से 31 अक्टूबर से 31 अक्टूबर से 14 नवम्बर, 2024 तक प्रत्येक बृहस्पतिवार को चलाई जायेगी।

दिल्ली-दरभंगा-दिल्ली पूजा विशेष गाड़ी दिल्ली से 25 अक्टूबर से 15 नवम्बर, 2024 तक प्रत्येक मंगलवार एवं शुक्रवार को तथा दरभंगा से 26 अक्टूबर से 16 नवम्बर, 2024 तक प्रत्येक बुधवार एवं शनिवार को चलाई जायेगी।

जम्मूतवी-बरौनी-जम्मूतवी पूजा विशेष गाड़ी जम्मूतवी से 24 अक्टूबर से 14 नवम्बर, 2024 तक प्रत्येक बुहस्पतिवार को तथा बरौनी से 25 अक्टूबर से 15 नवम्बर, 2024 तक प्रत्येक शुक्रवार को चलाई जायेगी।

हरिद्वार-मुजफ्फरपुर-हरिद्वार पूजा विशेष गाड़ी हरिद्वार से 01 से 15 नवम्बर, 2024 तक प्रत्येक शुक्रवार को तथा मुजफ्फरपुर से 02 से 16 नवम्बर, 2024 तक प्रत्येक शनिवार को चलाई जायेगी।

आनन्द विहार टर्मिनल-मुजफ्फरपुर-आनन्द विहार टर्मिनल पूजा विशेष गाड़ी आनन्द विहार टर्मिनल से 24 अक्टूबर से 15 नवम्बर, 2024 तक प्रत्येक सोमवार एवं बृहस्पतिवार को तथा मुजफ्फरपुर से 25 अक्टूबर से 16 नवम्बर, 2024 तक प्रत्येक मगंलवार एवं शुक्रवार को चलाई जायेगी।

आनन्द विहार टर्मिनल-बरौनी-आनन्द विहार टर्मिनल पूजा विशेष गाड़ी आनन्द विहार टर्मिनल से 27 अक्टूबर से 17 नवम्बर, 2024 तक प्रत्येक रविवार को तथा बरौनी से 28 अक्टूबर से 18 नवम्बर, 2024 तक प्रत्येक सोमवार को चलाई जायेगी।

सरहिंद-सहरसा-सरहिंद पूजा विशेष गाड़ी सरहिंद से 28 अक्टूबर से 18 नवम्बर, 2024 तक प्रत्येक सोमवार को तथा सहरसा से 29 अक्टूबर से 19 नवम्बर, 2024 तक प्रत्येक मंगलवार को चलाई जायेगी।

दिल्ली-जयनगर-दिल्ली पूजा विशेष गाड़ी दिल्ली से 25 अक्टूबर से 26 नवम्बर, 2024 तक प्रत्येक मंगलवार एवं शुक्रवार को तथा जयनगर से 24 अक्टूबर से 28 नवम्बर, 2024 तक प्रत्येक बृहस्पतिवार एवं रविवार को चलाई जायेगी।

हापा-नाहरलगुन-हापा पूजा विशेष गाड़ी हापा से 23 अक्टूबर से 25 दिसम्बर, 2024 तक प्रत्येक बुधवार को तथा नाहरलगुन से 26 अक्टूबर से 28 दिसम्बर, 2024 तक प्रत्येक शनिवार को चलाई जायेगी।

स्वामिनी सीता का साम्राज्य ही राम राज्य कहलाता है

प्रातः किरण संवाददात

छपरा।श्री जानकी जी का अनुग्रह सहज करुणा से परिपूर्ण है। गुण-दोष की समीक्षा किये बिना सभी को आश्रय देना ही उनका वैशिष्ट्य है। यह वक्तव्य लक्ष्मण किलाधीश जी महाराज ने छपरा हनुमान जयन्ती में दिया। सत्तावन वर्षों से आयोजित होने वाले इस महोत्सव में अयोध्या से पधारे आचार्य मिथलेशनन्दिनीशरण जी ने कहा कि श्री हनुमान जी महाराज सेवा और समर्पण के प्रतीक हैं। श्रीराम का सन्देश ले जाकर सीता जी को और सीता जी का पता लगाकर श्रीराम जी को श्री हनुमान जी ने संतुष्ट किया है। प्रभु के सभी सेवकों में सर्वाधिक प्रिय पात्र के रूप में श्री हनुमान जी विख्यात हैं, उन्होने अपने सेवाबल से प्रभु को अपने अधीन कर लिया है। श्री किशोरी जी के महत्त्व पर बोलते हुये आचार्य जी ने कहा कि भगवान स्वयं श्री सीता जी के अधीन हैं। श्रीराम राज्य की महिमा गाने वाले नहीं जानते कि वास्तविक साम्राज्य किशोरी जू का है। इसका रहस्य रसिक सन्त जानते हैं इसलिए वे गाते हैं - ह्लहमारे माई जनकलली के राज।

जिनके रस बस भये रघुनन्दन रसिकन के सरताज। ह्ल श्री जानकी का यह वैभव जीवों के रक्षार्थ है। अपनी विशाल करुणा से श्री जी विश्व प्रपंच में पड़े जीवों की रक्षा करती हैं। इसीलिए श्री गोस्वामी जी महाराज विनय पत्रिका में सीता जी को पुकारते हुये कहते हैं- ह्लकबहुँक अम्ब अवसर पाइ। मेरियौ सुधि द्याइबी कछु करुन कथा चलाइ।ह्व अपने त्रिदिवसीय प्रवचन में अयोध्या से पधारे संतों ने भक्ति उपासना और पवित्र आचरण के अनेक संदर्भ उद्घाटित किये।

जायसवाल ने 45 साल पुराना रिकॉर्ड तोड़ा

कैलेंडर वर्ष में 1000 टेस्ट रन बनाने वाले सबसे युवा भारतीय बने

पुणे (एजेंसी)। भारतीय सलामी बल्लेबाज यशस्वी जायसवाल शुक्रवार को महाराष्ट्र क्रिकेट एसोसिएशन स्टेडियम में न्यूजीलैंड के खिलाफ दूसरे टेस्ट के दूसरे दिन एक कैलेंडर वर्ष में 1000 टेस्ट रन बनाने वाले सबसे युवा भारतीय बन गए।

22 वर्षीय बल्लेबाज ने दिलीप वेंगसरकर के पिछले रिकॉर्ड को तोड़ा जिन्होंने 1979 में

23 साल की उम्र में 1000 रन का आंकड़ा छुआ था। वर्तमान में जायसवाल 2024 में सबसे अधिक टेस्ट रन बनाने वालों की सूची में इंग्लैंड के जो रूट के बाद दूसरे स्थान पर हैं, जिन्होंने 14 मैचों में 1305 रन बनाए हैं।

इस साल जायसवाल के फॉर्म ने उन्हें सिर्फ 10 मैचों में 59.23 की औसत से 1007 रन बनाते हुए देखा है जिसमें दो शतक और छह अर्धशतक शामिल हैं। 2024 में तीन और टेस्ट मैच बचे हैं ऐसे में उनके पास भारतीय दिग्गजों द्वारा बनाए गए कुछ सबसे बड़े रिकॉर्ड को तोड़ने का मौका है। सबसे खास बात यह है कि एक कैलेंडर वर्ष में किसी भारतीय द्वारा सबसे अधिक टेस्ट रन बनाने का रिकॉर्ड सचिन तेंदुलकर के नाम है, जिन्होंने 2010 में 14 मैचों में 1562 रन बनाए थे। वीरेंद्र सहवाग के 2008 में बनाए गए 1462 रन एक साल में किसी भारतीय ओपनर द्वारा बनाए गए सबसे ज़्यादा रन हैं।

दूसरे टेस्ट में रोहित के आउट पर बोले कार्तिक

उन्होंने गेंद को बहुत खराब तरीके से खेला

पुणे (एजेंसी)। दिनेश कार्तिक ने कहा कि रोहित शर्मा को अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में टिम साउथी का सामना करते हुए काफी परेशानियों का सामना करना पड़ा है। गुरुवार को पुणे के एमसीए स्टेडियम में न्यूजीलैंड के खिलाफ भारत के दूसरे टेस्ट की पहली पारी में रोहित रन नहीं बना पाए। रोहित साउथी की गेंद पर 14 बार आउट हुए हैं जो दक्षिण अफ्रीका के कैगिसो रबाडा के साथ किसी भी

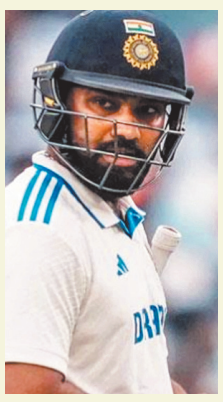

गेंदबाज द्वारा संयुक्त रूप से सबसे अधिक है। टेस्ट में रोहित को चार बार आउट करने वाले कीवी गेंदबाज भारतीय कप्तान को आउट करने की कला जानते हैं।

कार्तिक ने कहा, गेंद थोड़ी स्विंग कर रही थी और साउथी ने कई बार उनका शिकार किया है। अगर आप मुझे आंकड़ों में बताना चाहते हैं, तो उन्होंने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में 14 बार उन्हें आउट किया है। शायद रोहित पर उनका पलड़ा थोड़ा भारी है। इसलिए उन्हें पता है कि वह ऐसे गेंदबाज हैं जिन्हें रोहित उतना पसंद नहीं करते, इसलिए बल्लेबाज बस अपना समय ले रहा था। वह रक्षात्मक होकर खेल रहे थे। कार्तिक ने कहा कि रोहित को गेंद को उस तरह से नहीं खेलना चाहिए था। इस साल की शुरुआत में भारतीय क्रिकेट से संन्यास लेने वाले कार्तिक ने कहा कि साउथी की गेंद का सामना करने के लिए रोहित की रक्षात्मक तकनीक वैसी नहीं थी जैसी होनी चाहिए थी। कार्तिक ने कहा, साउदी के लिए यह एक स्टॉक, मानक गेंद थी।

पुणे टेस्ट

न्यूजीलैंड की बढ़त 301 रन

दूसरे दिन स्कोर 198/5, सुंदर ने 4 विकेट लिए

- **भारत पहली पारी में 156 पर ऑलआउट**

पुणे (एजेंसी)। भारतीय टीम न्यूजीलैंड के खिलाफ पुणे टेस्ट की पहली पारी में 156 रन पर ऑलआउट हो गई है। टीम पहली पारी के बाद 103 रन से पिछड़ गई। शुक्रवार को टीम इंडिया ने 16/1 के स्कोर से खेलना शुरू किया और 140 रन बनाने में आखिरी 9 विकेट गंवा दिए।

फिलहाल, तीसरे सेशन का खेल जारी है। न्यूजीलैंड ने दूसरी पारी में 5 विकेट पर 198 रन बना लिए हैं। टीम की कुल बढ़त 301 रन हो चुकी है। टॉम ब्लंडेल और ग्लेन फिलिप्स क्रीज पर हैं।

टॉम लैथम 86 रन बनाकर आउट हुए। उन्हें वॉशिंगटन सुंदर ने एलबी किया। उन्होंने डेरिल मिचेल (18 रन), रचिन रवींद्र (9 रन), डेवोन कॉन्वे (17 रन) को भी आउट किया। विल यंग (23 रन) अश्विन का शिकार बने।

भारतीय पारी में रवींद्र जडेजा ने सबसे ज्यादा 38 रन बनाए। यशस्वी जायसवाल और शुभमन गिल ने 30-30 रन का योगदान दिया। न्यूजीलैंड की ओर से मिचेल सैंटनर ने 7 विकेट झटके। ग्लेन फिलिप्स को 2 विकेट मिले। टिम साउदी के खाते में एक विकेट आया।

गुरुवार को टॉस जीतकर बैटिंग करने उतरी न्यूजीलैंड ने पहली पारी में 259 रन बनाए थे। टीम इंडिया सीरीज में 0-1 से पिछड़ रही है।

दोनों टीमों की प्लेइंग-11

भारत – रोहित शर्मा (कप्तान), यशस्वी जायसवाल, शुभमन गिल, विराट कोहली, ऋषभ पंत, सरफराज खान, वॉशिंगटन सुंदर, रविचंद्रन अश्विन, रवींद्र जडेजा, जसप्रीत बुमराह और आकाश दीप।

न्यूजीलैंड- टॉम लैथम (कप्तान), डेवोन कॉन्वे, विल यंग, रचिन रवींद्र, डेरिल मिचेल, टॉम ब्लंडेल (विकेटकीपर), ग्लेन फिलिप्स, टिम साउदी, मिचेल सैंटनर, एजाज पटेल, विलियम ओरूर्क।

रावलपिंडी टेस्ट

लंच तक पाकिस्तान का स्कोर 187/7

सऊद शकील की फिफ्टी, रेहान को 3 विकेट, इंग्लैंड ने पहली पारी में 267 रन बनाए

रावलपिंडी (एजेंसी)। रावलपिंडी में इंग्लैंड और पाकिस्तान के बीच खेले जा रहे तीसरे टेस्ट मैच के दूसरे दिन पाकिस्तान के बल्लेबाज सऊद शकील ने शतक जड़ दिया है। उनका टेस्ट में यह चौथा शतक है। वहीं पाकिस्तान ने पहली पारी में 8 विकेट खोकर 270 के पार पहुंच गया है। नोमान अली के साथ आठवें विकेट लिए 151 गेंदों पर 88 रन

की पार्टनरशिप की। नोमान अली 84 गेंदों का सामना कर 45 रन बना कर आउट हो गए।

शुक्रवार को पाकिस्तान ने अपने कल के स्कोर 73/3 से आगे खेलना शुरू किया। कप्तान शान मसूद को 26 रन पर शोएब बशीर ने आउट किया। अभी टीम इंग्लैंड के स्कोर से 80 रन पीछे है।

इंग्लैंड की तरफ से रेहान अहमद ने 3 विकेट लिए। शोएब बशीर को 2 और गस एटकिंसन, जैक लीच को 1-1 विकेट मिला। फिलहाल, पहले सेशन का खेल जारी है।

यूरोपियन क्लब कप शतरंज

गुकेश की अप्रत्याशित हार, अर्जुन ने खेला ड्रॉ

बनयाह , सर्बिया (एजेंसी)। यूरोपियन क्लब शतरंज कप 2024 का चौथा राउंड भारतीय नजरिए से अच्छा नहीं बीटा और विश्व शतरंज चैम्पियन बनने के करीब खड़े भारत के डी गुकेश को बीते कई माह में पहली बार हार का सामना करना पड़ा जबकि अर्जुन एरिगासी को अभी 2800 अंको के लिए और इंतजार करना होगा क्यूंकी उन्हे भी अपनी बाजी ड्रॉ खेलनी पड़ी है। चौथे राउंड में लगातार जीत के रथ पर सवार शीर्ष वरीय सुपर चैस क्लब को पाँचवीं वरीय टीम टर्किश एयरलाइन्स से 4-2 की हार का सामना करना पड़ा । सुपर चैस के पहले बोर्ड से खेल रहे डी गुकेश को रूस के दिमित्री आन्द्रेकिन से हार का सामना करना पड़ा है । दिमित्री के खिलाफ गुकेश ड्रॉ के बेहद करीब थे पर काले मोहरो से खेल रहे गुकेश समय के दबाव में अंतिम समय में राजा की एक गलत चाल चल गए और लंबे समय बाद कोई मुकाबला हार गए , इस हार के कारण अब गुकेश लाइव रेटिंग में 2788 अंको पर पहुँच गए है । तीसरे बोर्ड पर प्रज्ञानन्दा को भी अमीन ताबतबाई से

हार का सामना करना पड़ा ।

वहीं दूसरे बोर्ड पर अर्जुन एरिगासी के नेतृत्व वाली अलकलोइड टीम नें ताजफून टीम को 3.5-2.5 से पराजित करते हुए पहला स्थान हासिल कर लिया , हालांकि अर्जुन को अलेक्ज़ेंडर प्रेडके नें ड्रॉ पर रोका और लाइव रेटिंग में अर्जुन अब 2798 अंक पर है और उन्हे 2800 अंक छूने के लिए अभी और इंतजार करना होगा ।

ऑस्ट्रेलिया वनडे-कप में 1 रन बनाने में 8 विकेट गंवाए

वेस्टर्न ऑस्ट्रेलिया के 6 बल्लेबाज शून्य पर आउट, तस्मानिया के खिलाफ 53 रन पर सिमटी

पर्थ (एजेंसी)। ऑस्ट्रेलिया के डोमेस्टिक वन-डे कप टूर्नामेंट में वेस्टर्न ऑस्ट्रेलिया ने एक अनोखा रिकॉर्ड अपने नाम कर लिया है। टीम ने 1 रन बनाने में 8 विकेट गंवा दिए।

वेस्टर्न ऑस्ट्रेलिया और तस्मानिया के बीच पर्थ के वाका ग्राउंड में खेले गए मैच में वेस्टर्न ऑस्ट्रेलिया की टीम एक समय 2 विकेट के नुकसान पर 52 रन बना चुकी थी, लेकिन 53 रन के स्कोर पर पूरी टीम सिमट गई। आखिरी के 7 बल्लेबाज खाता तक न खोल सके।

टीम के 6 बल्लेबाज शून्य पर आउट- इस मुकाबले में तस्मानिया की टीम ने टॉस जीतने के बाद पहले गेंदबाजी का फैसला लिया था। वेस्टर्न ऑस्ट्रेलिया की तरफ से अरोन हार्डी और डार्सी शॉर्ट ने पारी की शुरुआत की। टीम का पहला विकेट आरोन हार्डी 7 रन के रूप में 10 रन पर गिरा। इसके बाद कैमरून बैनक्रॉफ्ट और डार्सी शॉर्ट ने पारी को संभाला। लेकिन 22 के स्कोर पर शॉर्ट आउट हुए।इस समय टीम का स्कोर 45 रन था। इसके बाद कैमरून बैंनक्रॉफ्ट 14 और विकेटकीपर जोश इंग्लिश 1 रन पर आउट हो गए।

स्कोर में 7 रन और जुड़े थे कि वेस्टर्न ऑस्ट्रेलिया की टीम ने 52 रनों पर पहुंचने के बाद अपने 5 विकेट और गंवा दिए जिससे 52 के स्कोर तक टीम के 7 खिलाड़ी पवेलियन लौट गए थे।

इस स्कोर में एक रन और जुड़ने के बाद 53 के स्कोर पर पूरी वेस्टर्न ऑस्ट्रेलिया की टीम पवेलियन लौट गई। वेस्टर्न ऑस्ट्रेलिया टीम की पारी के आखिरी के 7 बल्लेबाज अपना खाता भी खोलने में कामयाब नहीं हो सके, जिसमें कप्तान एश्टन एगर और कूपर कोनोली का नाम भी शामिल है।

ब्यू वेबस्टर ने छह विकेट लिए- वेस्टर्न ऑस्ट्रेलिया टीम की पारी को सिर्फ 53 के स्कोर पर समेटने में तस्मानिया टीम के गेंदबाज ब्यू वेबस्टर ने 6 ओवर्स में 2 मेडन फेंकने के साथ 17 रन दिए और छह विकेट अपने नाम किए।

इसके अलावा बिली स्टेनलेक ने 3 जबकि टॉम रोजर्स ने 1 विकेट अपने नाम किया। वहीं तस्मानिया की टीम ने 54 रनों के टारगेट को सिर्फ 8.3 ओवर्स में तीन विकेट के नुकसान पर हासिल कर लिया। तस्मानिया की तरफ से मिचेल ओवेन ने 29 और मैथ्यू वेड ने 21 रन बनाए।

डेविड वॉर्नर को बड़ी राहत, क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया ने कप्तानी करने पर लगा प्रतिबंध हटाया

मेलबर्न (ऑस्ट्रेलिया) (एजेंसी)। क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया ने शुक्रवार को पूर्व बल्लेबाज डेविड वॉर्नर पर आजीवन नेतृत्व प्रतिबंध तत्काल प्रभाव से हटा लिया। 2018 बॉल-टैम्परिंग स्कैंडल में (सैंडपेपर गेट) तत्कालीन ऑस्ट्रेलियाई कप्तान स्टीव स्मिथ उप-कप्तान डेविड वॉर्नर और बल्लेबाज कैमरन बैनक्रॉफ्ट को दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ श्रृंखला के दौरान बॉल-टैम्परिंग में शामिल होने के लिए क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया से भारी प्रतिबंध मिले थे। लगाए गए प्रतिबंधों में वॉर्नर पर नेतृत्व प्रतिबंध भी शामिल था। स्मिथ और वॉर्नर दोनों को एक साल के लिए अंतरराष्ट्रीय और घरेलू क्रिकेट से भी प्रतिबंधित कर दिया गया था।

शुक्रवार को जारी एक बयान में सीए ने कहा, क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया (सीए) के आचरण आयोग ने

डेविड वॉर्नर पर आजीवन नेतृत्व प्रतिबंध को तुरंत प्रभाव से संशोधित किया है। एक सर्वसम्मत निर्णय में स्वतंत्र तीन-सदस्यीय समीक्षा पैनल ने निर्धारित किया कि वॉर्नर ने प्रतिबंध हटाने के लिए आवश्यक मानदंडों को पूरा किया था। अपने निर्णय में पैनल ने कहा कि उनके (वार्नर के) जवाबों का सम्मानजनक और पश्चातापपूर्ण लहजा, साथ ही विषय-वस्तु ने समीक्षा पैनल को प्रभावित किया और सर्वसम्मति से इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि वे आचरण के लिए जिम्मेदारी स्वीकार करने और अपने बयान में ईमानदार और सच्चे थे कि उन्हें अपने आचरण के लिए पछतावा है।

पैनल ने उन संदर्भों पर भी विचार किया जिनमें वार्नर ने ऑस्ट्रेलिया में युवा क्रिकेटरों के विकास में जो योगदान दिया है और भविष्य में दे सकते हैं। वार्नर द्वारा 2018 में लगाए गए प्रतिबंध को आचार संहिता के अनुच्छेद 10 के अनुसार संशोधित करने के लिए आवेदन दायर करने के बाद सुनवाई हुई। वार्नर अब बिग बैश लीग (बीबीएल) सहित सभी ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेट प्रतियोगिताओं में नेतृत्व की भूमिका निभाने के पात्र होंगे, जहां वे सिडनी थंडर के लिए खेलते हैं।

हमारे 2 महीने अच्छे नहीं रहे लेकिन अब जीत से शुरूआत करना अच्छा : स्मृति मंधाना

अहमदाबाद (एजेंसी)। कार्यवाहक कप्तान स्मृति मंधाना ने न्यूजीलैंड के खिलाफ पहले वनडे में जीत के बाद अपनी टीम की सराहना की। उन्होंने भारत की गेंदबाजी और क्षेत्ररक्षण प्रयासों को उम्दा बताया और साथ ही कहा कि हम कठिन दौर से वापस आए हैं। ऐसे में यह जीत अच्छी है। बता दें कि इस महीने की शुरुआत में भारत का महिला टी 20 विश्व कप अभियान रुप चरण में ही समाप्त हो गया था जब सोफी डिवाइन की कप्तानी वाली न्यूजीलैंड टीम ने भारत को 58 रन से हराकर सेमीफाइनल की रेस से बाहर कर दिया था। हालांकि, विश्व कप के बाद वनडे सीरीज की शुरूआत में डिवाइन की टीम वह कारनामा नहीं दोहरा पाई। 228 रनों के मामूली लक्ष्य का पीछा करने में न्यूजीलैंड की टीम चूक गई और 59 रनों से मैच गंवा दिया।

रावलपिंडी से पुणे तक, स्पिनरों ने पिच पर किया राज, नए रिकॉर्ड, मील के पत्थर और यादें बनाईं

नई दिल्ली (एजेंसी)। पुणे के महाराष्ट्र क्रिकेट एसोसिएशन (एमसीए) स्टेडियम में भारत और न्यूजीलैंड के बीच चल रहे दूसरे टेस्ट मैच और रावलपिंडी में पाकिस्तान-इंग्लैंड तीसरे टेस्ट के दौरान शुरुआती दिनों में स्पिन का दबदबा देखने को मिला जिसमें स्पिनरों ने 'पिंडी से पुणे' तक नए रिकॉर्ड, मील के पत्थर और यादें बनाईं।

न्यूजीलैंड और भारत के बीच दूसरे टेस्ट में भारतीय टीम ने स्पिन के अनुकूल सतह पर वाशिंगटन सुंदर, रवींद्र जडेजा और रविचंद्रन अश्विन के रूप में तीन फ्रंटलाइन स्पिनरों का संयोजन चुना जिसमें तीनों ने अपनी गेंदबाजी में भी असाधारण गुणवत्ता दिखाई। जनवरी 2021 में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ ब्रिसबेन के गाबा में बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी जीतने के बाद तीन साल से अधिक समय में अपना पहला टेस्ट खेल रहे वाशिंगटन को शामिल करने के कदम ने सवाल खड़े किए, क्योंकि उन्हें स्पिनर के रूप में अधिक निपुण और वरिष्ठ खिलाड़ी कुलदीप यादव पर तरजीह दी गई जिन्हें बल्लेबाज के रूप में अश्विन-जडेजा की क्षमताओं के कारण टेस्ट मैचों के दौरान अक्सर बाहर बैठना पड़ा है।

जब कीवी टीम 197/3 पर थी, रचिन रवींद्र एक और शतक के लिए तैयार दिख रहे थे और केवल रविचंद्रन अश्विन ने कीवी पारी में कुछ उल्लेखनीय, लेकिन बहुत प्रभावशाली विकेट लिए थे, तो कुलदीप की मैदान से अनुपस्थिति के बारे में बहुत कुछ कहा जा रहा था। हालांकि, वाशिंगटन ने गेंद के साथ अपने शानदार मूवमेंट के साथ अगले 7 विकेट लिए।

उन्होंने पहली पारी में कीवी टीम को 197/3 से 259 पर ऑल आउट कर दिया।

वाशिंगटन ने अपने करियर के सर्वश्रेष्ठ टेस्ट आंकड़े और अपना पहला टेस्ट फाइवर (पारी में पांच विकेट) लिया। तमिलनाडु के दो स्टार खिलाड़ी अश्विन और उन्होंने मिलकर पहले दिन कीवी टीम के सभी 10 विकेट चटकाए जिससे भारत में टेस्ट के पहले दिन स्पिनरों द्वारा सभी दस विकेट हासिल करने का यह छठा मौका बन गया। सुंदर ने अपने स्पेल में पांच बल्लेबाजों को क्लीन बोल्ड किया जिसमें रचिन, टॉम ब्लंडेल, मिशेल सेंटनर, टिम साउथी और एजाज पटेल शामिल थे। वह जडेजा, अनिल कुंबले, जसुभाई पटेल और बापू नाडकर्णी जैसे स्टार और पुराने खिलाड़ियों के साथ भारत में टेस्ट पारी के दौरान सबसे ज्यादा 'बोल्ड' आउट करने वाले खिलाड़ियों में शामिल हो गए।

सुंदर के आंकड़े टेस्ट में न्यूजीलैंड के खिलाफ किसी भारतीय द्वारा बनाए गए तीसरे सर्वश्रेष्ठ और 21वीं सदी में अश्विन के साथ संयुक्त सर्वश्रेष्ठ थे। स्पिनर श्रीनिवासराघवन वेंकटराघवन, जो तमिलनाडु के लिए भी खेलते थे, ने 1965 में दिल्ली में कीवी के खिलाफ 8/72 के सर्वकालिक सर्वश्रेष्ठ आंकड़े दर्ज किए थे, इसके बाद 1975 में ऑकलैंड में इरापल्ली प्रसन्ना के 8/76 थे। अश्विन ने नाथन लियोन को भी पछाड़ दिया और आईसीसी विश्व टेस्ट चैंपियनशिप के इतिहास में सिर्फ 39 मैचों में 189 विकेट लेकर अग्रणी विकेट लेने वाले गेंदबाज बन गए जबकि ऑस्ट्रेलियाई दिग्गज नाथन लियोन ने 43 मैचों में 187 विकेट लिए थे। उन्होंने 531 विकेट लेकर टेस्ट के सातवें सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले गेंदबाज बनने के लिए लियोन (530 विकेट) को भी पीछे छोड़ दिया।

देश दुनिया की ताजा तरीन खबरें पढ़ने के ऑन करें
www.pratahkiran.com | epaper.pratahkiran.com
@Pratahkiran | @Pratahkiran

संक्षिप्त समाचार

नोएडा में बड़ा बुलडोजर ऐक्शन, 5000 मीटर जमीन पर हुआ अवैध निर्माण गिराया

नोएडा , एजेंसी। नोएडा प्राधिकरण ने गुरुवार को सलारपुर गांव में पांच हजार मीटर जमीन पर हुए अवैध निर्माण को ध्वस्त कर दिया। अतिक्रमण मुक्त कराई गई जमीन की कीमत 50 करोड़ रुपये से अधिक है। प्राधिकरण ने वर्क सर्किल छह में ध्वस्तीकरण का अभियान चलाया। सलारपुर गांव की खसरा नंबर 595, 596, 597 और 598 और गांव सोरखा में खसरा नंबर 44 और 46 पर स्थित जमीन में अवैध प्लाटिंग की गई थी और वहां पर कुछ भूखंडों पर चारदीवारी कर टीनशेड भी डाल दिए गए। प्राधिकरण के अमले ने ध्वस्तीकरण के साथ ही वहां हुए अन्य अवैध निर्माणों पर नोटिस चस्पा कर दिए। चेतावनी दी है कि अवैध निर्माण न किया जाए और ना ही अवैध रूप से इनकी बिक्री की जाए। अवैध निर्माण करने वालों के खिलाफ भी मुकदमा दर्ज कराकर कार्रवाई की जाएगी। नोएडा प्राधिकरण क्षेत्र के गांव सलारपुर, हाजीपुर, भंगेल में तमाम दावों के बावजूद भी अवैध निर्माण को रोक पाने में नोएडा प्राधिकरण सफल नहीं हो सका है। यहां पर हो रहे अवैध निर्माण को लेकर प्राधिकरण ने मुकदमा भी दर्ज कराया। प्राधिकरण के अधिकारियों से मारपीट भी हुई, निर्माण को अवैध बताते हुए विज्ञापन भी छपवाए गए और निर्माण स्थलों के पास प्राधिकरण ने बोर्ड भी लगा दिए, लेकिन फिर भी अवैध निर्माण नहीं रूका। कुछ स्थानों पर तो अवैध निर्माण करने वाले लोगों ने प्राधिकरण के चेतावनी वाले बोर्ड को भी अपने अवैध निर्माण के अंदर ले लिया है या फिर उसे उखाड़ कर फेंक दिया। लेकिन उन्हें प्राधिकरण की टीमें रोकने में सफल नहीं हो सकी हैं।

नोएडा प्राधिकरण क्षेत्र में 22 सेक्टरों और पांच गांवों में बड़े पैमाने पर अवैध कालोनी काटकर लोगों को ठगा जा रहा। इन सेक्टरों और गांवों की सूची नोएडा प्राधिकरण की ओर से जारी की जा चुकी है। प्राधिकरण की ओर से जारी सूचना में कहा गया है कि नोएडा के सेक्टर 82, 91, 92, 93, 93 ए 93 बी, 101, 102, 104, 105, 106, 107, 108. 110, 136, 137, 141, 142, 143, 143 ए, 143 बी, 144, गांव सलारपुर, हाजीपुर, गेझा तिलपताबाद, भंगेल बेगमपुर, गढ़ी और शहदरा में भूमाफियाओं द्वारा निर्माण कार्य प्रतिबंधित है।

बांके बिहारी मंदिर से जुड़ेगा यमुना एक्सप्रेसवे, ग्रीन फील्ड एक्सप्रेसवे के एलानइमेंट में होगा बदलाव

ग्रेटर नोएडा , एजेंसी। वृंदावन के बांके बिहारी मंदिर को यमुना एक्सप्रेसवे से जोड़ने के लिए बनने वाले ग्रीन फील्ड एक्सप्रेसवे के एलानइमेंट में बदलाव किया गया है। अब यह 101 किलोमीटर के बजाय 102.1 किलोमीटर से शुरू होगा। इससे वृंदावन की राह आसान होगी। भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण के प्रस्तावित एनएच-44 से यमुना एक्सप्रेसवे के समानांतर आने वाली 7 किलोमीटर लंबी सड़क भी दोनों एक्सप्रेसवे से जुड़ेगी। लूप के माध्यम से ग्रीन फील्ड एक्सप्रेसवे को जोड़ा जाएगा। इससे फरीदाबाद की तरफ से आने वाले लोगों को भी फायदा होगा। ग्रीन फील्ड एक्सप्रेसवे का निर्माण यमुना प्राधिकरण के बजाय अब केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय कराएगा। यह अहम निर्णय ब्रज विकास परिषद की बैठक में लिया गया। हालांकि, ग्रीन फील्ड एक्सप्रेसवे के किनारे 753 एकड़ में बसाई जाने वाली राया हेरिटेज सिटी के क्षेत्रफल में कोई परिवर्तन नहीं किया गया है। 102.1 किलोमीटर से बनने वाला 6.9 किलोमीटर लंबा और 6 लेन के एक्सप्रेसवे का निर्माण केंद्र सरकार द्वारा करवाए जाने का निर्णय लिया गया है। यह एक्सप्रेसवे यमुना की दूसरी साइड में (ग्रेटर नोएडा से जाने पर लेफ्ट साइट में) फरीदाबाद से आकर एक्सप्रेसवे को पार करते हुए यमुना एक्सप्रेसवे को जोड़ेगा। इसकी कुल लंबाई लगभग 14 किलोमीटर होगी। यह सात किलोमीटर यमुना की एक तरफ और 7 किलोमीटर यमुना की दूसरी तरफ होगा। इसके निर्माण पर आने वाली राशि आवंटित कर दी गई। बता दें कि पहले ग्रीन फील्ड एक्सप्रेसवे का निर्माण यमुना प्राधिकरण द्वारा किया जाना था। प्राधिकरण के अधिकारी के मुताबिक, ग्रीन फील्ड एक्सप्रेसवे जहां समाप्त हो रहा है, वहां 1.5 का क्षेत्र खाली है, जो डूब क्षेत्र है। यहां एलिवेटेड रोड बनाया जाएगा। एलिवेटेड रोड यमुना पर बन रहे पुल से जुड़ेगा। इसके साथ ही 21 मीटर चौड़ा केबल ब्रिज और 60 मीटर चौड़ी सड़क के निर्माण के आधे हिस्से में यमुना प्राधिकरण हिस्सेदार है।

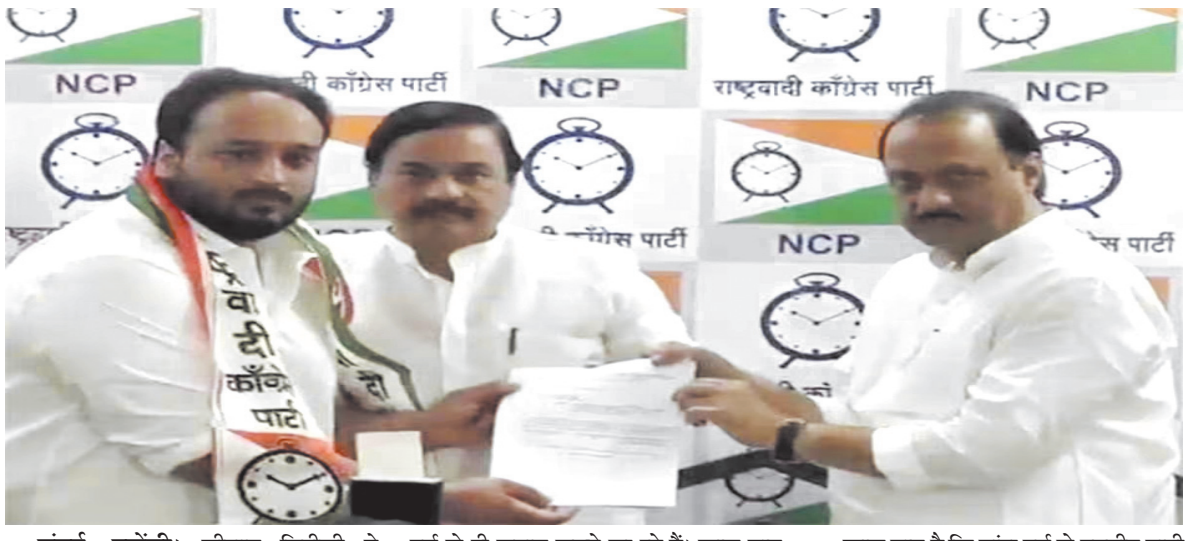

अजित पवार ने दिया बाबा सिद्दीकी के बेटे जीशान को टिकट, कांग्रेस ने किया था बाहर

मुंबई, एजेंसी। जीशान सिद्दीकी ने राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी का दामन थाम लिया है। उन्होंने महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री और एनसीपी चीफ अजित पवार की मौजूदगी में पार्टी की सदस्यता ली। वह अपनी मौजूदा सीट बांद्रा पूर्व से ही चुनाव लड़ने जा रहे हैं। खास बात है कि जीशान ने अपने पिता बाबा सिद्दीकी की हत्या के कुछ दिनों बाद ही यह कदम उठाया है। महाराष्ट्र में 20 नवंबर को विधानसभा चुनाव के लिए मतदान होना है।

खास बात है कि बांद्रा पूर्व से एमवीए यानी महाविकास अघाड़ी से शिवसेना (यूबीटी) चीफ उद्धव ठाकरे के भतीजे वरुण सरदेसाई मैदान में हैं। गुरुवार को ही उन्होंने गठबंधन के इस फैसले को लेकर सवाल उठाए थे। अब अजित पवार ने उन्हें बांद्रा पूर्व से एनसीपी का उम्मीदवार बनाया है।

एमवीए पर उतारा गुस्सा

जीशान ने एमवीए पर पिता की हत्या के बाद अकेला छोड़ने के आरोप लगाए हैं। उन्होंने कहा, यह मेरे और परिवार के लिए बड़ा भावनात्मक दिन है। इस मुश्किल घड़ी में मुझपर भरोसा जताने के लिए मैं अजित पवार, प्रफुल्ल पटेल और सुनील तटकरे का आभारी हूं। मैंने बांद्रा पूर्व से नामांकन कर दिया है। मुझे भरोसा है कि लोगों के प्यार और समर्थन के बीच मैं एक बार फिर बांद्रा पूर्व से जीतूंगा...। महाराष्ट्र की बांद्रा ईस्ट सीट से विधायक जीशान सिद्दीकी ने एक दिन पहले ही आगामी विधानसभा चुनावों के लिए उनके निर्वाचन क्षेत्र में शिवसेना (यूबीटी) द्वारा उम्मीदवार उतारने के फैसले की आलोचना करते हुए कहा कि साथ रहना कभी भी उनके स्वभाव में नहीं था। उन्होंने 'एक्स' पर लिखा, 'सुना है, पुराने दोस्तों ने बांद्रा ईस्ट से अपना उम्मीदवार घोषित कर दिया है। साथ रहना कभी उनके स्वभाव में नहीं था। सिर्फ उन्हीं से रिश्ता रखो जो तुम्हें सम्मान देते हों।' उन्होंने यह भी कहा कि अब जनता ही फैसला करेगी।

अगस्त में विधान परिषद चुनावों में 'क्रॉस वोटिंग' के लिए विधायक जीशान को कांग्रेस से निलंबित कर दिया गया है। इससे पहले बाबा सिद्दीकी भी कांग्रेस छोड़कर एनसीपी में शामिल हो गए थे।

कांग्रेस पर लगाए थे गंभीर आरोप

जीशान ने फरवरी में कांग्रेस पर गंभीर आरोप लगाए थे। खबरें थीं कि दल छोड़ने की अटकलों के बीच कांग्रेस ने जीशान को मुंबई युवा मोर्चा के अध्यक्ष पद से हटा दिया था। इसके बाद एक प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान उन्होंने कहा, अगर कांग्रेस को मेरी जरूरत नहीं है, तो मैं नए विकल्पों की तलाश करूंगा...। मुझे भरोसा है कि कांग्रेस को मेरी जरूरत नहीं है...। उन्होंने कहा था, मुझे मीडिया से पता चला कि मुझे एमवासी अध्यक्ष पद से हटा दिया है...। वह मुझसे बात कर सकते थे। तब उन्होंने कांग्रेस सांसद राहुल गांधी की टीम पर सवाल उठाए थे और पार्टी के पतन का जिम्मेदार बताया था।

देश के सभी पंचायतों को मौसम विभाग से जोड़ने पर बोले ललन सिंह, इससे किसानों को होगा फायदा

नई दिल्ली, एजेंसी। पंचायती राज मंत्रालय ने देश के सभी पंचायतों को मौसम पूर्वानुमान से जोड़ा है। इससे हमारे किसान भाइयों को मौसम के बारे में पहले ही जानकारी मिल जाएगी कि आने वाले दिनों में मौसम कैसा रहेगा। ऐसे में यह कदम किसानों के लिए काफी लाभकारी साबित होगी। इससे देश की अर्थव्यवस्था को भी गति मिलेगी। इसी संबंध में जनता दल यूनाइटेड के नेता और केंद्रीय पंचायती राज मंत्री राजीव रंजन सिंह उर्फ ललन सिंह का बयान सामने आया है। उन्होंने कहा, आज पंचायती राज मंत्रालय और भारतीय मौसम विभाग (आईएमडी) ने एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए देश की सभी पंचायतों को मौसम पूर्वानुमान की सूचना से जोड़ने का कार्य किया है। यह पहल हमारे देश की कृषि आधारित अर्थव्यवस्था के लिए अत्यंत प्रभावशाली साबित होगी।

उन्होंने आगे कहा, भारत एक कृषि प्रधान देश है, जहां अधिकांश जनसंख्या गांवों में निवास करती है और अपनी आजीविका के लिए कृषि पर निर्भर करती है। इस संदर्भ में अगर किसानों को समय पर जानकारी मिल जाए कि कब बारिश होगी, कब बाढ़ आ सकती है, या कब चक्रवात के आसार हैं, तो यह उनकी खेती और संसाधनों की सुरक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण होगा। बता दें कि इस प्रणाली को जमीन पर उतारे जाने से किसानों को मौसम की सूचना 10 दिन पहले ही मिल जाएगी। इतना समय आपदा प्रबंधन के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण हो सकता है। जब किसानों को सही समय पर जानकारी मिलेगी, तो वे अपनी फसलों की सुरक्षा के लिए उचित कदम उठा सकेंगे। इससे न केवल उनकी फसलें सुरक्षित रहेंगी, बल्कि आर्थिक रूप से भी वे सशक्त बनेंगे। पंचायतें अब सीधे मौसम पूर्वानुमान की सूचना प्राप्त कर सकेंगी, जिससे वे अपने क्षेत्र के किसानों को तत्काल और सटीक जानकारी प्रदान कर सकेंगी। यह प्रणाली प्राकृतिक आपदाओं के समय किसानों को सचेत करने का एक सशक्त साधन बन जाएगी।

अब घर बैठे कराएं संपत्ति की रजिस्ट्री; छत्तीसगढ़ सरकार ने लॉन्च की सुगम ऐप

रायपुर, एजेंसी। छत्तीसगढ़ की विष्णु देव साय सरकार ने लोगों को धोखाधड़ी से बचाने और अपनी संपत्ति की ऑनलाइन रजिस्ट्री करवाने के लिए सुगम ऐप लॉन्च की है। ऐप को लोगों से अच्छी प्रतिक्रिया मिल रही है। इस हफ्ते की शुरुआत में प्लेटफॉर्म के जरिए 1,200 से ज्यादा पंजीकरण किए गए हैं। एक अधिकारी ने गुरुवार को यह जानकारी दी। जनसंपर्क विभाग के अधिकारी ने कहा कि सुगम (सुविधाजनक) ऐप को 21 अक्टूबर को प्रापर्टी रजिस्ट्रेशन प्रोसेस को और ज्यादा पारदर्शी और यूजर-फ्रेंडली बनाने के उद्देश्य से लॉन्च किया गया था। अधिकारी ने कहा कि लॉन्च होने के बाद से ही ऐप ने लोकप्रियता हासिल की है, जिससे राज्य भर में 1,200 से अधिक प्रॉपर्टी रजिस्ट्रेशन की सुविधा मिली है और ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन की दिशा में एक अहम बदलाव आया है।

कुरुक्षेत्र में पराली जलाने वाले किसानों के खिलाफ होगी कड़ी कार्रवाई

कृषि विभाग का सख्त आदेश

कुरुक्षेत्र, एजेंसी। हरियाणा का कुरुक्षेत्र पराली प्रबंधन में फिसड्डी साबित हो रहा है। पराली जलाने के मामले थमने का नाम नहीं ले रहे हैं। कृषि विभाग के आला अधिकारियों ने कहा कि वो लगातार पराली जलाने वाले किसानों को चिह्नित कर उनके खिलाफ कड़ी कार्रवाई की रूपरेखा तैयार कर रहे हैं। उन्होंने कहा, धान के अवशेषों के प्रबंधन को लेकर हालिया अपडेट काफी महत्वपूर्ण हैं। पिछले साल के मुकाबले इस साल किसानों द्वारा अवशेष जलाने की घटनाओं में लगभग 49 फीसद की कमी आई है, जो व्यापक कार्य योजना का परिणाम है। विभिन्न जिलों में पराली प्रबंधन पर जो काम किया गया है, उसका असर स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा है।

उन्होंने आगे कहा, अब तक 93 स्थानों से रिपोर्ट मिली हैं, जिनमें से 62 स्थानों पर कार्रवाई की गई है। ये सभी मामले अलग-अलग किसान और स्थानीय निवासियों द्वारा रिपोर्ट किए गए थे। इसके अलावा, कुछ मामलों में मैन्युअल सूचना भी प्राप्त हुई थी। कुल 62 मामलों में पुलिस ने कार्रवाई की है, और इनमें से कितने गिरफ्तार हुए हैं, इसकी जानकारी पुलिस विभाग से मिल सकेगी। उन्होंने बताया कि बुधवार को भी पांच नई लोकेशन की रिपोर्ट आई थी, जिनमें से दो स्थानों पर धान के अवशेष जलाए जाने का मामला सामने आया। इन मामलों में तत्काल कार्रवाई की गई है। उन्होंने बताया कि पराली प्रबंधन के तहत सरकार ने प्रति एकड़ 1,000 रुपये की सहायता भी दी है, जिससे किसानों को

प्रोत्साहित किया जा सके कि वे अवशेष न जलाएं। ऐसा करने से पर्यावरण में सुधार होगा और आम जनमानस को भी स्वस्थ वातावरण मिलेगा। सुप्रीम कोर्ट ने भी इस मामले में सख्ती दिखाई है और कई अधिकारियों पर कार्रवाई की गई है।

उन्होंने कहा, हरियाणा के 12-13 जिलों में अवशेष जलाने की घटनाएं अधिक होती हैं, और इस संबंध में 24 अधिकारियों को निलंबित किया गया है।

70 साल पीछे पहुंचा गाजा, युद्ध ने फिलिस्तीनी अर्थव्यवस्था को किया तबाह: यूएनएजेंसी चीफ

गाजा , एजेंसी।
इजरायल हमास के बीच एक साल से जारी युद्ध ने गाजा पट्टी को 1950 के दशक की स्थिति में पहुंचा दिया। फिलिस्तीन शरणार्थियों के लिए संयुक्त राष्ट्र एजेंसी ने यह बात कही। समाचार एजेंसी सिन्हुआ की रिपोर्ट के अनुसार, यूएन अधिकारी फिलिप लाजारिनी ने बुधवार को सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर संयुक्त राष्ट्र के एक नवीनतम अध्ययन का हवाला देते हुए कहा कि युद्ध ने फिलिस्तीनी अर्थव्यवस्था को तबाह कर दिया है। गाजा की लगभग पूरी आबादी गरीबी में जी रही है, स्वास्थ्य और शिक्षा जैसे क्षेत्र 70 साल पीछे चले गए हैं। बता दें लाजारिनी संयुक्त राष्ट्र के नियर ईस्ट में फिलिस्तीन शरणार्थियों के लिए रिलीफ एंड वर्क्स एजेंसी (यूएनआरडब्ल्यूए) के कमिश्नर जनरल हैं। लाजारिनी ने कहा, यह जितना लंबा चलेगा, लाखों लड़कियों और लड़कों को सीखने के माहौल में वापस लाने में उतना ही अधिक समय लगेगा, इन भारी नुकसानों को कम करने की चुनौतियां उतनी ही अधिक होंगी।

इससे पहले लाजारिनी ने उत्तरी गाजा में तत्काल लड़ाई को रोकने के लिए अपील की थी ताकि वहां फंसे नागरिकों तक मानवीय सहायता पहुंचाई जा सके। उन्होंने एक्स पर एक पोस्ट में, उन्होंने कहा कि यूएनआरडब्ल्यूए के कर्मचारियों ने युद्धग्रस्त क्षेत्र में भोजन, पानी या दवा नहीं मिलने की सूचना दी है। फिलिप लाजारिनी ने कहा, हर जगह मौत की गंध है, शव सड़कों पर या मलबे के नीचे पड़े हैं। शवों को हटाने या मानवीय सहायता प्रदान करने के मिशनों को अस्वीकार कर दिया गया है। यूएन एजेंसी चीफ ने आगे कहा, उत्तरी गाजा में लोग बस मरने का इंतजार कर रहे हैं। वे खुद को अकेला, निराश और अकेला महसूस कर रहे हैं। वे एक घंटे से दूसरे घंटे तक जीते हैं, हर पल मौत से डरते हैं। लाजारिनी ने लिखा, उत्तरी गाजा में हमारे कर्मचारियों की ओर से, मैं तत्काल युद्धविराम की मांग कर रहा हूं, भले ही कुछ घंटों के लिए, ताकि उन परिवारों के लिए सुरक्षित मानवीय मार्ग सुनिश्चित हो सके जो क्षेत्र को छोड़कर सुरक्षित स्थानों पर पहुंचना चाहते हैं। यह उन नागरिकों की जान बचाने के लिए न्यूनतम है जिनका इस संघर्ष से कोई लेना-देना नहीं है। हमास ने पिछले साल 7 अक्टूबर को इजरायल में हमला किया था। हमले में करीब 1200 लोगों की मौत हो गई थी जबकि 250 से अधिक लोगों कों बंधक बना लिया था। इसके बाद से इजरायल हमास के कंट्रोल वाली गाजा पट्टी पर हमले कर रहा है।

पाकिस्तान में तालिबान ने फिर मचाया कत्ल-ए-आम, 10 पुलिसवालों को उतारा मौत के घाट

इस्लामाबाद, एजेंसी।
पाकिस्तान में तालिबानियों के बढ़ते उत्पात के बीच एक बार फिर आतंकियों ने पुलिस वालों को निशाना बनाया है। शुक्रवार को अफ़गान सीमा के पास दस पुलिसकर्मियों की गोली मारकर हत्या कर दी गई है। वहीं 7 अन्य जवान घायल हो गए हैं। अधिकारियों के मुताबिक हमला एक चेक पोस्ट पर हुआ। इस हमले की जिम्मेदारी पाकिस्तान के तालिबान ने ली है। एक वरिष्ठ खुफिया अधिकारी ने नाम न बताने की शर्त पर बताया, लगभग एक घंटे तक भीषण गोलीबारी हुई। हमले के दौरान फ्रंटियर कांस्टेबुलरी के दस जवान शहीद हो गए और सात घायल हो गए। लगभग 20 से 25 आतंकवादियों ने दक्षिण-पश्चिमी ख़ैबर पख्तूनख्वा प्रांत के डेरा इस्माइल खान जिले में फ्रंटियर कांस्टेबुलरी की एक चौकी पर गोलीबारी शुरू कर दी। तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान (ञ्ञ्क्क) समूह ने जिम्मेदारी लेते हुए अपने बयान में कहा कि यह हमला वरिष्ठ नेता उस्ताद कुरैशी की हत्या का बदला था। पाकिस्तान की सेना ने गुरुवार को एक बयान में कहा कि अफगानिस्तान की सीमा से लगे बाजौर में खुफिया जानकारी के आधार पर चलाए गए एक अभियान में नौ लोगों में कुरैशी भी शामिल था। पाकिस्तान का कहना है कि टीटीपी अफगानिस्तान को बेस के रूप

में इस्तेमाल करता है और सत्तारूढ़ तालिबान सीमा के पास आतंकियों को पनाह देता है। हालांकि तालिबान इससे इनकार करता है। अफगानिस्तान में तालिबान के 2021 में सत्ता में लौटने के बाद से पाकिस्तान में ऐसे हमलों की तादाद बढ़ती जा रही है। तालिबान के पाकिस्तानी आतंकियों ने ज़्यादातर सुरक्षा बलों को निशाना बनाकर हमले किए हैं। इससे पहले भी इस इलाके में आतंकवादियों ने पुलिस को नियमित रूप से निशाना बनाया है।

एनवीडिया के सीईओ ने की पीएम मोदी की तारीफ

वाशिंगटन, एजेंसी।
एनवीडिया सीईओ के संस्थापक और सीईओ जेनसन हुआंग ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने उन्हें एक महत्वपूर्ण उपमा दी, जिसमें उन्होंने कहा कि भारत को आटा निर्यात करके ब्रेड नहीं आयात करनी चाहिए, इसी तरह देश को डेटा निर्यात करके बुद्धिमत्ता नहीं आयात करनी चाहिए। हुआंग मुंबई में एनवीडिया सीईओ एआई समिट इंडिया में शामिल होने के लिए पहुंचे थे और उन्होंने रिलायंस इंडस्ट्रीज के चेयरमैन मुकेश अंबानी के साथ एक संवाद सत्र आयोजित किया।

हुआंग ने कहा- जो चीज मुझे वास्तव में पसंद है, वह यह है कि जब मैंने मोदी जी से पहली बार मुलाकात की थी, तो उन्होंने मुझसे अपनी कैबिनेट से मिलने के लिए कहा। यह लगभग छह साल पहले की बात है। उन्होंने मुझसे इस कैबिनेट को आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के बारे में संबोधित करने के लिए कहा। और मैं बहुत हैरान था। यह सच में पहली बार था जब किसी सरकारी नेता, किसी राष्ट्रीय नेता ने मुझसे इस विशेष विषय पर अपनी कैबिनेट को संबोधित करने के लिए कहा है।

एनवीडिया सीईओ ने कहा- यह उस समय की बात है, जब कोई भी आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के बारे में बात नहीं कर रहा था। मेरी आखिरी मुलाकात में यह वास्तव में बहुत गहरा था। उन्होंने कहा... मैं उन्हें एआई इंफ्रास्ट्रक्चर के सिद्धांत और यह क्यों जरूरी है कि हर देश को अपना खुद का एआई इंफ्रास्ट्रक्चर होना चाहिए, जैसे कि अपनी संचार प्रणाली, इंटरनेट इंफ्रास्ट्रक्चर, सड़कें, ऊर्जा। निश्चित रूप से बुद्धिमत्ता भी आपके इंफ्रास्ट्रक्चर का हिस्सा होनी चाहिए और बुद्धिमत्ता का निर्माण भी आपके इंफ्रास्ट्रक्चर का हिस्सा होना चाहिए।

उन्होंने कहा कि यह पूरी तरह से समझ में आता है कि भारत को अपनी खुद की एआई बनानी चाहिए।

अपनी खुद की एआई का निर्माण करें। आपको आउटसोर्स नहीं करना चाहिए, आपको डेटा निर्यात करके बुद्धिमत्ता नहीं आयात करनी चाहिए। यह ऐसा है जैसे मोदी जी ने कहा, भारत को सिर्फ आटा निर्यात करके ब्रेड नहीं आयात करना चाहिए। हमें अपने डेटा में मूल्य जोड़ना चाहिए और हमारी साझेदारी इस यात्रा की शुरुआत करने के लिए है ताकि भारत अपना खुद का इंफ्रास्ट्रक्चर बना सके। आपके पास निश्चित रूप से अपनी कंप्यूटर विज्ञान की विशेषज्ञता है और आपके पास डेटा भी है, आपके पास उपयोगकर्ताओं की एक विशाल जनसंख्या है, जो इस चक्र को चलाने में मदद करेगी।

हुआंग ने बताया कि मोदी जी ने यह भी कहा कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की क्षमता पूरे भारतीय जनसंख्या को ऊंचा उठाने की है। भारत में दुनिया के सबसे अधिक प्रोग्रामर हैं, लेकिन फिर भी प्रोग्रामिंग करना आसान नहीं है। हर किसी को एआई को प्रोग्राम करने की क्षमता दी जा सकती है। अगर एआई हर नागरिक के हाथ में हो, तो यह पूरे समाज को लाभान्वित कर सकता है। हुआंग इस वर्ष पीएम मोदी की अमेरिका यात्रा के दौरान 15 टेक नेताओं में से एक थे। उन्होंने न्यू यॉर्क में बैठक के बाद कहा- यह भारत का क्षण है। आपको इस अवसर को भुनाना चाहिए।

अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव के सर्वेक्षण में ट्रंप, हैरिस से मामूली बढ़त पर आगे

वाशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका में राष्ट्रपति पद के चुनाव को लेकर जारी एक सर्वेक्षण में रिपब्लिकन पार्टी के उम्मीदवार डोनाल्ड ट्रंप डेमोक्रेटिक पार्टी की उम्मीदवार और अपनी प्रतिद्वंद्वी कमला हैरिस से मामूली बढ़त बनाए हुए हैं। अमेरिकी अखबार 'द वॉल स्ट्रीट जर्नल' द्वारा किये गए एक राष्ट्रीय सर्वेक्षण में बताया गया है कि देश के पूर्व राष्ट्रपति ट्रंप, हैरिस से दो प्रतिशत अंक यानी 47 प्रतिशत से 45 प्रतिशत आगे हैं। 'सीएनबीसी ऑल-अमेरिका इकोनॉमिक सर्वे' के अनुसार, डोनाल्ड ट्रंप अमेरिकी उपराष्ट्रपति कमला हैरिस से 48 प्रतिशत से 46 प्रतिशत की बढ़त बनाए हुए हैं, जो अगस्त से अपरिवर्तित है।

समाचार चैनल ने बताया कि अमेरिका के अहम सात राज्यों में पूर्व राष्ट्रपति ट्रंप हैरिस से 48 प्रतिशत से 47 प्रतिशत आगे हैं। अमेरिका के सभी प्रमुख राष्ट्रीय और क्षेत्रीय सर्वेक्षणों पर नजर रखने वाले 'रियलक्लियरपॉलिटिक्स' के अनुसार, उपराष्ट्रपति कमला हैरिस राष्ट्रीय स्तर पर ट्रंप से 0.3 प्रतिशत अंकों की मामूली बढ़त बनाए हुए हैं। दूसरी ओर, देश के अहम सात राज्यों में रिपब्लिकन पार्टी के उम्मीदवार 0.9 प्रतिशत अंकों से आगे हैं। ये अहम सात राज्य एरिजोना, नेवादा, विस्कॉन्सिन, मिशिगन, पेंसिल्वेनिया, उत्तरी कैरोलाइना और जॉर्जिया हैं।

मुद्रक तथा प्रकाशक रंजीत राय द्वारा स्वामी आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, प्लॉट नं. सी-16 एवं 17, रोड नं. 9, पाटलिपुत्रा इंडस्ट्रीयल एरिया, पटना-800013 के पक्ष में आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड प्रेस से मुद्रित एवं सी-20, एस.के. पुरी, नियर बसावन पार्क, पटना, बिहार-800013 से प्रकाशित संपादक- देवन प्रसाद
(नोटः प्रकाशित सभी लेखों आदि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं और किसी भी कानूनी वाद-विवाद का निपटारा पटना न्यायालय में ही किया जाएगा।) RNI. No. BIHHIN/2013/ 49676, Email: news@pratahkiran.com, patna@pratahkiran.com, 9212228045, 8130691216, 9971557129